

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182556

UNIVERSAL
LIBRARY

हमारी माँगे



श्री ओमप्रकाश

सर्वोदय साहित्य मन्दिर.

हुसैनी अलम रोड, हैदराबाद (द.) नं. २

प्रधान विक्रेता—

बौधरी एन्ड सन्स

मीचीबाग, बनारस ।

पुस्तक—हमारी माँगे

विषय—क्रान्तिकारी

लेखक—ओम् प्रकाश

आवरण कल्पना—नरसिंह साह

प्रकाशक—ज्ञान विकास मन्दिर बनारस ।

मुद्रक—सूर्य प्रेस बनारस

आवरण सृजक—काँजीलाल

सर्वाधिकार—प्रकाशक के आधीन

प्रथम संस्करण—१ मई १९५४

Checked 1969, मूल्य ३)

प्राप्तिस्थान

चौधरी एण्ड सन्स

नीचीबाग बनारस

साखा

ज्ञान विकास मन्दिर

जमालपुर ई० आर० (बिहार)

हमारी माँगे



लेखक की अन्य रचनायें :-

- ❖ आँधियों की गोद में
- ❖ भूखा इन्सान
- ❖ हमारी माँगें
- ❖ पहाड़ी के उस पार
- ❖ इन्हें भी देखो
- ❖ फरियादी
- ❖ बेकरार
- ❖ मजदूर
- ❖ भोंपड़ी और महल
- ❖ सौदा

प्रकाशन के पथ पर:-

- ❖ नीरू
- ❖ कागज के पुतले
- ❖ मरघट की ओर
- ❖ खोखली दीवार

नोट:-इस उपन्यास के सभी पात्र, स्थान, एवं घटनायें काल्पनिक हैं—! [लेखक]

नोट:-इस उपन्यास के आठवें परिच्छेद की घटना “बनारस” नामी दैनिक पत्र से ली गई है, जो १३ सितम्बर १९५२ को उस में छपी थी। इसमें की घटना सत्य है अथवा नहीं, इसका जिम्मेदार लेखक नहीं, बल्कि “बनारस” है।

ओम्प्रकाश

!.....परिवर्तन के प्रथम क्षणों में
रत्न-जटित प्रसाद न होंगे
रजत-रश्मियों के प्रङ्गण में
दलितों के अपवाद न होंगे
निर्धनता के रक्त करणों से
उद्धृत जग-इतिहास न होगा
दानवकी बलिवेदी पर
मानवता का उपहास न होगा.....!

ओम् प्रकाश

“आखिर तुम आ ही गये ! हाहाहा...हाहाहा...हाहा...
हा...हा—दानव ठहाका मारकर हँस पड़ा—। “मुझे भी आशा
थी कि तुम जरूर आओगे !”

राज ने नजरें उठाकर उसकी ओर देखा—!

काला देव सामने खड़ा था। लम्बे लम्बे बाल और उनके
बीच चमकते हुये दो भयानक दाँत। मानों कोई राक्षस ही
सामने खड़ा हो।

“तुम कौन हो—?” राज ने सहमी आँखों से पूछा।

“मैं—? तुमने मुझे नहीं पहचाना—? अरे पगले ! मैं भी
तेरी ही तरह एक मनुष्य हूँ...अन्तर केवल यही है कि तुम
एक कैदी हो और.....

“कैदी—?” चौंक पड़ा राज। आँखें फाड़-फाड़ कर देखने
लगा उसकी ओर।

“हाँ ! तुम कैदी हो राज ।”

“मैंने कौन सा जुर्म किया था जो मुझे लोहे के इन शिकंझों
में ढकेल दिया गया है—?” राज उसके दोनों कन्धों को भिभोड़

रहा था —। “बोलो मानव देव ! मुझे यहाँ कैदी बनाकर क्यों बैठाया गया है—? मैंने कोई पाप नहीं किया ...किसी के घर में डाका नहीं डाला...किसी की माँ बहनों की इज्जत को नहीं लूटा...फिर मुझे क्यों इस अन्धकारमय कोठरी में बैठा दिया गया है घुट घुटकर मरने के लिये—? क्या यह न्याय कि किसी उड़ते हुए पंछी को जबर्दस्ती पिंजरे में कैद कर दिया जाये—? बोलते क्यों नहीं मानव देव ! क्या यह इन्साफ होगा कि अगर वह बेगुनाह पंछी उसका कारण पूछे तो उसका मुँह बंद कर दिया जाये और अगर वह उड़ने की कोशिश करे तो उसके पर काटकर उसे अपाहिज बना दिया जावे—?”

“यह दुनिया है राज ! निर्मल जल में भी गन्दगी होती है । अगर यहाँ वह सब न हो तो दुनिया, दुनिया न रह जाये..... समाज का कोई नाम तक न ले और इन्सान, इन्सान से भी ऊँचा हो जाये ।”

“अगर दुनियाँ में यह सब रहेगा तो एक दिन इसका यह भयानक नक्शा बदल जायेगा मानव देव !—खूनका बदला फाँसी से नहीं लिया जा सकता, किन्तु अन्याय का बदला न्याय से लिया जा सकता है ।”

“तुम जानते हो राज ! कि शासक अपराधी को दंड क्यों देता है—?सरकार खूनी को फाँसी के तख्ते पर क्यों लटकाती है ?”

“ताकि आगे से कोई भी मनुष्य वैसा अपराध न करे । और यहाँ तक कि स्वयं वह अपराधी भी कभी बुरे रास्ते पर अपना कदम न रखे ।”

“हाँ ! सरकार अपराधी को सजा उसे सुधारने के लिये ही देती है । किन्तु आज की सरकार अपराधी को सुधारने की

अपेक्षा उसे और भी बुरे रास्ते पर जाने के लिये मजबूर करती है। आज का कानून इन्सान को इन्सान नहीं बनाता, बल्कि उस पर पड़े इन्सानियत के पतले परदे को उतारकर उसपर हैवानियत का परदा डालता है।—आज का नियम अपराधियों के लिये नहीं है... चोर और डाकुओं के लिये नहीं है, बल्कि बेगुनाह और मासूम इन्सानों के लिये है। आज का नियम समाज के उन ठेकेदारों के लिये नहीं है, जो गरीबों के खून को चूस चूस कर अपनी तिजोड़ियाँ भरे पड़े हैं और जो समाज की एक-एक ईंट को उखाड़ कर उसके साथ विश्वासघात कर रहे हैं, बल्कि आज का नियम उन भूखे, नंगे और गरीब इन्सानों के लिये है जिन्होंने अपने खून से इस समाज की नींव सींची है। जो हाड़ मांस के पुतले अपने हड्डियों के ढाँचे पर रेंगते हुए भी अपने रक्त से समाज को सींच रहे हैं।—आज का जेल... आज का बन्दीखाना और आज का कैदखाना केवल निर्धनों को ही अपने लाहे के मोटे-मोटे शिकंजों में बन्द करने के लिये बना है, अमारों का बन्द करने के लिये नहीं—! जिस दिये में तेल ही न होगा राज ! क्या उसकी लौ अपने स्थान पर स्थिर रह सकती है—? जिस इमारत की नींव ही खोखली हो गई होगी, जानते हो उसको क्या दशा होगी ? हवा के प्रत्येक झोंके के साथ उसकी ईंट ईंट कांप उठेगी... और तूफान के एक ही झटके से वह शानदार इमारत भयानक खंडहर के रूप में परिवर्तित हो जायगी ।”

“.....!”

राज चुपचाप सुन रहा था और वह कहे जा रहा था—!

“राज ! सरकार को चलाने वाले पूँजीपति होते हैं, रोटी रोटी के लिये मोहताज होने वाले गरीब नहीं... इसलिये वे वैसे ही नियम बनाते हैं जिससे अधिक सुख सम्भव हो सके...! वे

अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख नहीं चाहते बल्कि पूंजीवादी प्रथा के अनुसार मुट्ठीभर पूंजीपतियों का ही सुख चाहते हैं।— और जानते हो राज ! कि तुम्हें इस अंधेरी कोठरी में अकेले क्यों बैठाया गया है ?”

“यही तो मैं पूछना चाहता हूँ मानव देव ! कि मुझे यहाँ क्यों बैठाया गया है ? लेकिन काश ! कोई मेरी इस चीखती आवाज को सुन पाता और इस भयानकता का कारण बता सकता !”

“अगर तुम पूछते हो तो सुनो ! मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम यहाँ क्यों कैद किये गये हो...जेल की कोठरी में नहीं बल्कि मौत की कोठरी में...मरघट की कोठरी में...जिन्दगी के दूसरे किनारे को कोठरी में...हाँ...हाँ मैं ठीक कह रहा हूँ राज ! कि यह मौत की कोठरी है...और तुम्हें...और तुम्हें कल सुबह फाँसी दी जा....ये....गी...”

“फाँसी ? चीख उठी राज की आत्मा ।

और साथ ही चीख उठा राज का गला—!

“माँ !”

“क्या हुआ राजू ?”

“माँ...माँ...!”

राज माँ से लिपटा बुरी तरह हाँफ रहा था, और उसकी आंखें चारों ओर किसी को ढूँढ़ रही थीं ।

“क्या बात हुई राजू—?”

“माँ...माँ...मुझे फाँसी होने वाली है माँ !” फूट पड़ा राज माँ के गले से लिपट कर ।

“यह क्या कह रहे हो राजू !—ऐसी बातें मुंह से नहीं निकाला करते बेटा ।”

“नहीं माँ ! मानव देव ने कहा है कि तुम्हें सुबह फाँसी के

तख्ते पर लटकाया जायेगा ।”

“कहाँ है मानव देव ? आज तुम्हें हो क्या गया है राजू ?”

“मेरा सपना कभी मूठ नहीं होता माँ ! शायद वे जल्लाद मुझे पकड़ने के लिये...”

“बेटा !” माँ ने उसके मुँह पर हाथ रख कर उसकी आवाज को उसके गले में ही रोक दिया ।

“माँ ! अगर तू ही मेरी आवाज को नहीं सुनेगी तो बता मैं किसके सामने अपनी फरियाद की झोली को फैलाऊँगा ?— बोल माँ ! अगर औलाद के दुःख को माँ नहीं सुनेगी तो क्या यह दुनिया वाले सुनेंगे अथवा समाज के ये जालिम ? उजाला, उजाले से ही बढ़ता है माँ ! अन्धेरे से नहीं । जब संतान को चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दीख पड़ता है, जब दुनिया उससे नफरत करती है, उसे ठोकरों से दूर हटाती है तो उस समय माँ की गोदमें अपने आपको छुपाता है। और माँ उसे अपने सीने से लगाकर उस पर अपने प्यार का दामन फैला देती है, ताकि कोई उसकी औलाद को उससे छीन कर न ले जाये— बोलती क्यों नहीं माँ ! क्या माँ से भी बढ़कर इस दुनिया में कोई प्यार करने वाला है ? माँ की ममता को तो उन बेचारों से पूछो माँ ! जिन्होंने होश संभालने से पहले ही माँ का प्यार खो दिया ।—डाली का प्यार तो वे कलियाँ ही जान सकती हैं, जिन्हें खिलने से पहले ही तोड़ दिया जाता है । और... और... अरे तू रो रही है माँ !”

राज ने माँ की ओर जो देखा तो उसकी आँखों से छल-छल आँसू बह रहे थे ।

उसने आँसुओं को पोंछते हुए कहा—। “नहीं... नहीं बेटा ! देख मैं रो थोड़े ही रही हूँ... आगे कहो राजू !”

“अब कुछ नहीं कहूँगा माँ तुम्हें तकलीफ होती है ।”

“नहीं बेटा ! मुझे आराम मिलता है...आगे कह राजू ! तुझे मेरी कसम है...तेरी माँ की कसम है बेटा ! अपनी पूरी बात कहदे...उसे अपनी जिन्दगी की तरह अधूरी न छोड़ राजू !”

राज ने पुनः कहना शुरू किया—।

“माँ तू तो जानती ही है कि तूने मुझे अपना कितना खून पिलाया है ? शायद तू भूल गई हो लेकिन मैं नहीं भूल सकता । नौ महीने तूने मुझे गर्भ में रखकर हजारों मुसीबतों का सामना किया...फिर होश में आने तक तूने अपने खून का एक एक कतरा मुझे पिलाया ! और आज...और आज तूने मुझे इस योग्य बनाया कि मैंने बी० ए० की डिग्री प्राप्त की—! मुझे नहीं मालूम कि तूने मेरी पढ़ाई पर कितना रुपया खर्च किया...मैं नहीं जानता कि वे रुपये कहाँ से और कैसे आये—?...मुझे तो पढ़ने से मतलब था.....! मैं पढ़ता गया और तू अपना सब कुछ लुटाती गई । तूने यह सब केवल इसी लिये किया था माँ ! ताकि तेरा बेटा पढ़कर तेरे लिये रुपये कमाये...तेरे बुढ़ापे का सहारा बन कर तुम्हें मंजिल तक पहुँचाये...तेरी बेनूर आँखों की रोशनी का काम दे—तूने अपना फर्ज अदा किया, अपना सब कुछ लुटा कर मुझे पढ़ाया, और मैंने—? और मैंने कागज पर लिखी एक डिग्री भी ले ली—! माँ होना तो यह चाहिये था कि उस डिग्री की कम से कम उतनी ही कीमत लगती, जितनी मैं मैंने उसे खरीदा था लेकिन...लेकिन दुनियाँ ने उसे रही कागज का एक टुकड़ा समझ कर ठुकरा दिया...इस समाज ने उसकी कोई कीमत न दी माँ ! जहाँ भी गया वहीं से इन्कार मिला...जिस दफ्तर में गया “नो वेकन्सी” ने ही मेरा स्वागत किया...जिस किसी सेठ को मैंने फरियाद सुनाई, उसी ने

कहा ! आगे जाओ ! तुम जैसे आवारों के लिये यहाँ कोई जगह नहीं है । क्या माँ ! यह आवारों की डिग्री है—?....नौकरी के लिये पूछना क्या गुनाह है ?”

“लोग तो कहा ही करते हैं बेटा ! इससे क्या—? मनुष्य को हिम्मत नहीं हारनी चाहिये ! आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों कभी न कभी तो काम लग ही जायेगा ।”

“दो चार रोज की बात होती तो कोई बात न थी माँ ! आज चार महीने से दर दर की ठोकें खा रहा हूँ...गलियों और सड़कों की खाक छान रहा हूँ...दरवाजे दरवाजे पर भीख माँग रहा हूँ, लेकिन कहीं से नौकरी नहीं मिली ।—किसी चीज की हद होती है माँ ! हर वस्तु की सीमा होती है । यदि खौलते हुये पानी को बन्द कर दिया जाये माँ ! तो एक सीमा के बाद उसकी भाप उस बर्तन को तोड़ डालती है...चूर चूर करके जला डालती है—! मेरे अन्तर की ज्वाला को भी इस समाज ने बन्द कर रखा था....! वह अन्दर ही अन्दर खौल रही थी और कल.....

राज एकाएक रुक गया । वह नहीं चाहता था कि कल की दुर्घटना को वह अपनी माँ से कहे । लेकिन वह अपने विचारों को रोक न सका:—

“और कल क्या हुआ बेटा—?”

“और कल वह ज्वाला फूट पड़ी माँ !”

“कैसे—” माँ का दिल धड़क उठा एक अज्ञात भय से ।

“रोज की भाँति कल भी मैं नौकरी की खोज में गया । सुबह से दफ्तरों के दरवाजों को खटखटाते शाम हो गई, सुबह से बिलकुल भूखा था । और खाता भी कहाँ से—? हवा के सहारे तो इन्सान जिन्दा नहीं रह सकता माँ ! अन्त में शाम को एक

दफ़्तर में गया मैनेजर को डिग्री दिखाते हुए मैंने नौकरी की भीख माँगी, तो माँ जानती हो उसने क्या जवाब दिया—? उसने कहा—! “जला डालो इस डिग्री को !” मैं तड़प उठा माँ ! और ताड़ से मार दिया उसके मुंह पर एक थप्पड़.....!”

राज की बात अभी पूरी भी न होने पाई थी कि बाहर का दरवाजा किसी ने खटखटाया ।

“खट—खट—खट !”

“लो आ गये वे जल्लाद माँ !” राज के मुंह से धीरे से निकल पड़ा ।

“तू कहीं छुप जा बेटा !”

“छुपना इन्सान का काम नहीं माँ !”

“खट—खट....!” दरवाजा पुनः खटका ।

“राज !”

“तुम्हें अपने राज की कसम है माँ ! खोल दे दरवाजा !”

“राज !”

“खट—खट—!”

“खोल दे माँ !”

“न चाहते हुये भी माँ को खोलना पड़ा । अपने लिये नहीं, अपने राजू के लिये—केवल अपने बेटे के लिये ।

“खट—खट....!”

“कौन है !” माँ ने भरे गले से दरवाजा खोलते हुए कहा ।

“खोलो—?” एक भारी आवाज थी ।

माँने दरवाजा खोला तो देखा सामने पुलिस खड़ी थी । उसने दरवाजा बन्द करना चाहा ताकि पुलिस उसके राजू को देख भी न सके । लेकिन उससे पहले ही पुलिस अन्दर आ चुकी थी । बूढ़ी माँ का पूरा शरीर थरथर काँप रहा था ।—पुलिस के

सिपाही धीरे धीरे बढ़ रहे थे राज की ओर, जो टिमटिमाते दीये के सामने चुपचाप खड़ा था।

“आप...आप लोग क्या चाहते हैं?” माँ ने काँपती हुई आवाज में पूछा।

“राज को!” एक छोटा सा उत्तर मिला।

“मेरे बेटे ने कुछ नहीं किया है...उसे क्यों पकड़ रहे हो... मेरा राज बेगुनाह है...बेकसूर है!” माँ जा लिपटी राज से, कस लिया अपनी छाती से...माँ का प्यार चरम सीमा को पहुँच गया।

“उसके नाम वारंट है!” एक सिपाही ने आगे बढ़कर कहा।

“नहीं! मेरा राजू बेगुनाह है!” माँ चीख उठी! “तुम लोगों को धोखा हुआ है—! उसे छोड़ दो...भगवान के लिये उसे कुछ न कहो...वरना उसकी माँ तड़प तड़प कर मर जायगी!” बिलख उठी वह।

“हम मजबूर हैं!—चलो राज!” सिपाही ने राज की ओर देखते हुए चलने का इशारा किया।

“राजू!”

“माँ!”

“मेरे राजू!” बिलख उठी माँ।

“मैं सुबह आ जाऊँगा माँ! इस समय मुझे जाने दे।”

राज ने अपने दोनों हाथ पुलिस की ओर बढ़ा दिये और पुलिस ने डाल दी उसके हाथों में दो लोहे की मोटी मोटी हथकड़ियाँ।

“राजू...बेटा...”

“माँ!”

“मेरे...लाल!”

“माँ !”

“राजू !”

“.....!”

“बेटा...लाल...राजू !”

“.....!!”

माँ पागलों की तरह चीखती रही । दिवारों से सिर टकराती रही । पर किसी ने भी न सुना । कोई उससे पूछने तक नहीं आया कि आखिर वह पागलों की तरह चिल्ला क्यों रही हैं ? क्यों अपने राज को बुला रही हैं ।

पुलिस राज को ले गई थाने की ओर !

माँ की चीखें उठती रहीं !

गाँव वाले सुनते रहे

और रात अपनी ही गति से चलती रही ।



“मुजरिम हाजिर है माई लार्ड !”

“कारवाई शुरू हो !” मजिस्ट्रेटने फाइलों के पन्ने उलटते हुये कहा ।

दूसरी ओर का वकील उठा, मुजरिम के कंधरे के पास आया, जहाँ राज हाथों में हथकड़ियाँ पहने भरी अदालत के सामने खड़ा था । वकील ने एक बार जज की ओर देखा और फिर राज की ओर घूमते हुए पूछा—“क्या यह सच है कि तुमने सेठ चन्दूलाल पर हमला किया था—?”

“भूठ ! सफेद भूठ ! जिसका कोई रंग रूप नहीं !” राज ने लापरवाही से कहा । जैसे उसे अभी तक मालूम ही नहीं हो पाया हो कि वह अदालत में है, और वह भी एक मुजरिम की हैसियत से ।

“तो फिर तुम पर मुकदमा क्यों चलाया जा रहा है ।”

“आप जैसे लोगों की मेहरबानी से !”

“मुजरिम ! बेकार की बातें न करो !” वकील जल उठा क्रोध की ज्वाला में ।

“मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ वकीलसाहब !” उसके एक एक शब्द में जोर था ।

“कल शाम को तुम सेठजी के यहाँ गये थे ?” वकील ने जुर्म का इकरार कराने की दृष्टि से पूछा ।

“हाँ !”

“तुमने उनसे नौकरी के लिये कहा था ?”

“हाँ !”

“उन्होंने नौकरी के लिये इन्कार किया था ?”

“हाँ !”

“और उनके इन्कार करने पर तुमने उनपर हाथ उठाया था ।”

“हाँ !”

“बस !”

वकील ने पुनः जज की ओर देखते हुए कहा ! “ माई लार्ड ! मुजरिम यह मानने के लिये तैयार है कि उसने सेठजी पर हाथ चलाया था । और उनके बयानों से भी यह पता लगता है कि अगर उनके शोर मचाने पर लोग दौड़ते न तो मुजरिम शायद उनपर भयानक हमला कर बैठता ।—और चूँकि माई लार्ड ! मुजरिम का अकबाले जुर्म बयानों के मुताबिक है इसलिये कानून

को देखते हुए अदालत की नजरो में मुजरिम पूरी तरह सजा का मुस्तहक.....!"

"वकील साहब !" बीच ही में चीख उठा राज ! "जरा अपने वकालत के पत्रों को उलटकर अच्छी तरह देखिये कि मैं मुजरिम हूँ या वह कम्बख्त और बेहया....."

और साथ ही जज की आवाज गूँज उठी राज की हथकड़ियों के साथ साथ—! "मुजरिम यह अदालत हैं ।"

"यह मैं जानता हूँ योर आनर ! कि यह अदालत हैं और मैं यह भी जानता हूँ कि इस अदालत की नींव किस बुनियाद पर रखी जाती है ! लेकिन माई लार्ड ! अदालत का कानून इन्साफ के लिये होता है या गैर इन्साफ के लिये ? अगर आज मेरे पास भी दौलत होती... मैं भी आलीशान ऊंची इमारत में रहता, तो इस समय मेरे पास भी ऐसे ऐसे दो चार किराये के वकील होते, जो रुपयों के लिये मूठ को सच और सच को मूठ साबित करने में कामियाब होते हैं, जो अपनी जेबों को खनखनाते सिक्कों से भरने के लिये न्यायको अन्याय की वेदी पर बलिदान करते हैं, और गरीबों को अमीरों के सामने झुकने पर मजबूर करते हैं—! अदालत की नींव खोखली हो चुकी है माई लार्ड !—जिस अदालत की नींव कभी इन्साफ के पत्थर से बनी थी, आज सोने चाँदी और कागजी सिक्कों पर बनाई जा रही है और..."

"मुजरिम !" जज ने पुनः मेज पर हाथ पटका ।

"आप मुझे सजा दे सकते हैं योर आनर ! लेकिन मेरे उठते हुए जज़्बातों को नहीं रोक सकते । अगर आपने कभी गरीबी के गन्दे तालाब में रँग कर देखा होता, तो आपको मालूम होता कि गरीबों की आह कितनी दर्दनाक होती है, उनकी दुखती रँगें किस आवाज के साथ उठती हैं और किस बेरहमी के साथ

दबा दी जाती हैं—! लेकिन आकाश में उड़ने वाला आजाद पंखी कभी जमीन के गन्दे नाले में रेंगने वाले कीड़े के दर्द को नहीं जान सकता—! योर आनर ! क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि अमीरों की इज्जत, इज्जत है और गरीबों की इज्जत, इज्जत नहीं ? क्या अदालत का कानून अमीरों के लिये दूसरा है और गरीबों के लिये दूसरा ? मैंने उसके मुँह पर तमाचा मारा था, लेकिन उसने मेरे सीने में माई लार्ड ! मेरे दिल से पूछिये जो चार महीने से नौकरी के लिये दर दर की ठोकरें खाता रहा... जो सुबह से शाम तक गलियों और सड़कों की खाक छानता रहा... मैंने जरों और सेठों के दरवाजों पर घंटों खड़ा उनकी राह देखता रहा, और इन सब का बदला धिक्कार और भिड़कियों से ही मिलता रहा ।—उस सेठ से पूछिये माई लार्ड ! जिसने जलते हुए दिल को और भी जलाने के लिये कहा ! “जला डालो इस डिग्री को ।” क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि इस डिग्री की यही कीमत थी, जिसे पाने के लिये मैंने चौदह वर्ष तक अपने आपको जलाया ? जिसके लिये मेरी बूढ़ी माँ ने दरवाजे दरवाजे की भीख माँगी ?”

“फिर भी तुमने बहुत गलत काम किया है मुजरिम !”

“गलत काम मैंने किया है या आपकी सरकार ने, जिसने हर व्यक्ति को पढ़ने के लिये उत्तेजित किया... जिसने अपने नाम के लिये पढ़ाई, पढ़ाई की रट लगाई ? माई लार्ड ! जब उसमें इतनी शक्ति नहीं कि वह इस बढ़ती हुई बेकारी को दूरकर सके, तो उसे क्या अधिकार है कि वह लोगों को पढ़ने के लिये मजबूर करे ? आज मेरे जैसे हजारों और लाखों ऐसे गरीब लड़के होंगे जिन्होंने अपना सब कुछ बेचकर डिग्री प्राप्त की होगी... जिनके माँ बाप ने कर्जा ले लेकर अपने बेटे की पढ़ाई का खर्चा

पूरा किया होगा...अपने आपको भी बेच कर अपने लड़के को पढ़ाया, केवल इसलिये कि सरकार उन्हें नौकरी दे सके, न कि इसलिये कि वे दिन भर आवारों की तरह दर दर की खाक छानें—! माई लार्ड ! आज हजारों ऐसे लोग हैं जो बी. ए. और एम. ए. पास करने के बाद भी जानवरों की भांति रिक्शा खींच रहे हैं, और अनपढ़ों की तरह सड़कों पर बूट पालिश करते फिरते हैं। क्या उनकी शिक्षा इसी काम के लिये थी—? क्या उनकी डिग्री और मेहनत का यह अंजाम था—!”

“यहाँ इन सब बातों से कोई फायदा नहीं मुजरिम। तुम कसूरवार हो और अदालत की नजरों में....!”

“माई लार्ड ! यह मैं मानने के लिये तैयार हूँ कि अदालत की नजरों में मैं गुनहगार और मुजरिम हूँ....चोर और डाकू हूँ....!” कातिल और खूनी हूँ, लेकिन न्याय की नजरों में मैं बेगुनाह और बेकसूर हूँ माई लार्ड ! आप न्याय को एक तरफ रखकर कानून को देखते हुए अदालत की नजरों से मुझे सजा दे सकते हैं लेकिन—! लेकिन एक बार माई लार्ड ! मेरे दिल की बात को इस भरी अदालत में गूँज लेने दीजिए, ताकि यह आवाज दुनिया के कोने कोने में तड़प उठे, और हमारे अमीर देशकी गरीब जनता दूसरों का सहारा छोड़कर अपने पाँव पर खड़ी होना सीखे। और इस बेकारी....भूखमरी....अत्याचार....ब्लेक मार्केटिंग और चोरबाजारी के विरुद्ध इतना बड़ा आन्दोलन करे इतना बड़ा माई लार्ड ! कि सोया हुआ भगवान भी जाग उठे.... सोई हुई सरकार जाग उठे और काँप उठे उसके नये संविधान का शब्द शब्द—मगर अफसोस इस बात का है कि आपका कानून मुझे बोलने के लिये कभी भी इजाजत नहीं दे सकता। और आपकी यह भरी अदालत जो चमकते कपड़ों से सजी हुई है,

मेरी इस तड़पती आवाज को कभी बाहर नहीं गूँजने देगी.... ! क्योंकि ये जानते हैं कि अगर दबी हुई चिनगारी एक बार भड़क जाती है तो वह सबकी राख करने के बाद ही बुझती है ।

“और कुछ कहना चाहते हो ?”

“कहना तो इतना चाहता हूँ माई लार्ड ! कि सुनते सुनते आप अपने कानों पर हाथ रखलें ! और आपका यह कानून जिसके बूते पर मोटे मोटे सेठ अपनी तोड़ों पर हाथ फेरते रहते हैं अपनी आँखें बन्द कर लें । लेकिन काश ऐसा हो पाता कि हर मुजरिम इस कठघरे में खड़े होकर अपने तूफान को अदालत के सामने रख सकता—! काश ऐसा हो पाता” राज चुप हो गया ।

“और कुछ—?”

“बस !”

“जूरियों ने अपनी अपनी रिपोर्टें जज के सामने रख दीं । पाँच में से चार जूरियों ने सेठ का पक्ष करके मुजरिम की कड़ी से कड़ी सजा लिखी थी, केवल एक जूरी ऐसा था जिसने कलम तोड़कर लिखा था कि “मुजरिम न्याय की नजरों में बेकसूर है, इसलिए उसे बाइज्जत बरी कर दिया जाये ।”

लेकिन बहुमत मुजरिम के विरोध में थी इसलिये जज ने फैसला देते हुये कहा—!” चूंकि मुजरिम खुद इस बात को कबूल करता है कि उसने सेठ चन्दूलाल पर हाथ चलाया था इसलिए कानून को देखते हुये अदालत की तरफ से मुजरिम को छे महीने की कैद की सजा दी जाती है ।”

जज ने फैसले पर दस्तखत कर दिये ।

राज का उठा सिर झुक गया ।

उसकी किस्मत का फैसला हो गया । अदालत की ईंट ईंट चीख उठी कि मुजरिम बेगुनाह है । उसने जो कुछ किया है वह दुनिया

से तंग आकर ही किया है। उसको सजा देकर इन्साफ का गला घोटना होगा....न्याय की आत्मा का खून करना होगा लेकिन—! सरकार का कानून न पिघला और एक बेगुनाह को बन्दी बनाकर भेज दिया गया भयानक जंगलों के बीच सड़ सड़ कर मरने के लिये !!!

×

×

×

राज के समक्ष खाने की थाली पड़ी थी, और वह बैठा सोच रहा था—!” भगवान भी कितना बेरहम है—? लोग उसे दयावान कहते हैं। दुनिया चिल्ला चिल्ला कर कहती है कि भगवान की नगरी में देर है अंधेर नहीं ! लेकिन मैं पूछता हूँ कि क्या यही इन्साफ है....न्याय है कि एक बेगुनाह के साथ वो कुछ किया जाये जो एक गुनहगार के साथ भी नहीं किया जाता—? लेकिन इसका जवाब कौन और क्या दे ?”

एक बार उसने तिनकों से भरी रोटियों की ओर देखा जो कि शायद उससे कह रही थी—! “राज ! तुम तो कुत्तों से भी गये बीते हो। पालतू कुत्तों को भी इससे अच्छा ही खाना मिलता है।” उसका जी चाहा कि वह थाली को दूर फेंक दे....उसमें पड़ी एक एक चीज को दिवारों से टकरा दें, ताकि वे भूसी से भरी रोटियाँ और पत्तों का साग जिसमें निमक का नाम तक नहीं, उसको मुंह न चिढ़ा सके। लेकिन ! पेटकी भूख ने उसके हाथों में हथकड़ियाँ और मस्तिष्क पर संतोष का ताला लगा दिया।

उसे याद आया जब कि वह इसी भूख की आग के कारण दर-दर की ठोकरें खा रहा था....नौकरी के लिये दरवाजे दरवाजे पर भीख माँग रहा था तो उसके निराशापूर्ण पग बह गये एक कोठी की ओर। पन्द्रह सीढ़ियों को गिनने के बाद वह उस आलीशान कमरे में पहुँचा जहाँ कोठी के मालिक बैठे मुनीम से

बही खाता ठीक करवा रहे थे। राज जा खड़ा हुआ दरवाजे पर। उसका साहस न था कि वह सेठजी से कुछ कहे। यद्यपि उसे अनुभव नहीं था लेकिन सुना जरूर था कि बड़े आदमियों का मूड देखकर बातें करनी चाहिये। अच्छे मूड में वे गरीब को आबाद कर देते हैं, और खराब मूड पर बसी हुई भोंपड़ी को भी विरान कर देते हैं।

राज ने सुना, सेठजी मुनीम जी से कह रहे थे ! “मुनीम जी आज कितनी गाँठें बिकी हैं ?”

“आज तो सरकार दस बिक गई हैं !” मुनीम ने खोखले दाँत निकालते हुए कहा ! “चार गाँठें तो कन्ट्रोल भाव पर ही बेचनी पड़ी पर छे गाँठों में माल अच्छा हाथ लगा !”

“तब तो आज गहरी रकम मिली !”

“हाँ ! अगर पुराने सिपाही न होते तो शायद गहरी रकम चली भी जाती !” मुनीम ने एक ठंडी साँस भरते हुए कहा ! “वह तो कहिये पाँच ही सौ में सौदा पट गया !”

“खैर एक काम और भी कर दीजियेगा मुनीम जी ! कि असली खाते पर भी एक आध गाँठ का सौदा चढ़ा दीजियेगा। क्योंकि शायद आज इन्स्पेक्टर साहब जाँच के लिये आयें !”

“बहुत अच्छा सेठजी !”

मुनीम ने नकली खाता खोला और उसका कुछ हिसाब असली खाते पर उतारा, और थोड़ी देर में ही सब हिसाब मिलाकर सेठजी के सामने रख दिया।

राज चुपचाप इस ईमानदारी की वर्षा को देख रहा था। उसे अब यह भी मालूम हो गया कि किस तरह आज के सेठ और साहूकार रुपये की आड़ में चोरबाजारी करते हैं और उस चोर-बाजारी में सेठों के मुनीम और पुलिस भी टहलते रहते हैं। वह

समझ रहा था कि कम से कम बड़े आदमी तो इस तरह धोखेबाजी नहीं करते....सरकार के खैरखाह तो सरकार को धोखा नहीं देते। लेकिन अब उसे मालूम हुआ कि वे ही लोग सरकार की नाँव को खोखला किये जा रहे हैं जिनपर सरकार विश्वास करती है....जिन्हें वह सच्चा दोस्त और साथी समझती थी वही उसके पेट में छुरा घोपकर उसकी अँतड़ियों को बाहर निकाल रहे हैं।—लेकिन उसे इन सब बातों से क्या लेना था ? वह तो नौकरी के लिये आया था न कि इमानदारी और बेइमानी की दरार को देखने आया था।

धीरे से कमरे में कदम रखा।

आहट के साथ ही सेठजी ऐसे चौंके जैसे किसी बिजली की तार का करेंट खा गये हों। लेकिन दूसरे ही क्षण एक अजनबी को देखकर संभल गये। घबराहट को छुपाते हुए पूछा—? बिना पूछे क्यों आ गये—?”

“आना कोई पाप तो है नहीं सेठजी ! अगर कोई पाप होतो मैं अब भी बाहर जा सकता हूँ ।” राज ने धीरे से कहा।

“खैर बोलो क्या बात है—?”

“जी एक.....एक छोटी सी अर्ज है।” राज ने हिचकिचाते हुए कहा।

“आखिर कुछ बताओगे भी या भिखमंगों की तरह गिड़-गिड़ाओगे ?” सेठजी चिढ़ से गये।

राज जल उठा उनकी बात सुनकर। लेकिन खूनका घूँट पीकर रह गया—!” सेठजी ! क्या कोई नौकरी.....

“बस यही कहना था—?” सेठजी और भी चिढ़ गये—!” जो भी आता है नौकरी ही माँगता है। जैसे यहाँ नौकरी बटती है।

“पूरी बात तो सुन लीजिये सेठ जी ।”

“यहाँ कोई जगह खाली नहीं है ।”

“मैंने बी० ए०.....।”

“एक बार कह जो दिया कोई नौकरी नहीं है ।”

“बी० ए० पास किया है सेठजी ।” राज ने ऐसे कहा जैसे बी० ए० का नाम सुनकर शायद उनका पत्थर दिल पिघल जाये ।

“बाबा ! अपना काम करे....मेरे पास कोई जगह खाली नहीं है, अपना रास्ता पकड़ो !” “सेठजी उठकर दूसरे कमरे में चले गये और राज भी चुपचाप बातें सुनकर नीचे उतरने लगा । जैसे किसी डुबकी वाज ने मोती की चाहना से समुद्र में डुबकी मारी हो, और नीचे से उसे मोतियों के बदले रेत ही मिली हो । राज भी ऊँची कोठी से रेत ही लेकर निकला ।

राज पुनः चल दिया अपनी मंजिल को ढूँढ़ने के लिये । उसे कुछ भी पता नहीं था । कि उसकी वह सीमा कहाँ और कब आयेगी—! जहाँ उसे पहुँचना है । लेकिन फिर भी वह चलता ही जा रहा था वह सीमा को भी पार कर चुका था मगर उसकी मंजिल क्षितिज की भांति आगे ही आगे भागती चली जा रही थी—उसकी सीमा बहुत पीछे छुट चुकी थी, लेकिन वह सीमा के उस पार भी जानना चाहता था । वह जानना चाहता था कि सीमा के पार भी कोई चीज है, अथवा केवल शून्य ही शून्य—?

घड़ी चार कन्धों पर बैठने के लिये बेचैन थी । सुबह से ही कदमों को गिनता चला जा रहा था पर, अभी तक गिनती पूरी होने को ही नहीं आ रही थी । दिल खिन्न सा गया था । भूख से उसका बुरा हाल हो रहा था । लेकिन कर भी क्या सकता था....। लेकिन उसने भी आज वायदा कर लिया था कि या तो आज उसे नौकरी ही मिलेगी या उस दबे तूफान को बाहर

ही निकाल कर रहेगा ।

जा रुका एक आफिस के सामने । दरवाजे पर लिखा था—! “मालिक सेठ चन्दूलाल ।” एक बार उसने ऊपर उठती हुई आफिस को देखा और फिर चढ़ने लगा बेधड़क सीढ़ियों पर उसे कोई हिचकिचाहट न हुई उस अपरिचित मकान में जाते हुये । क्योंकि वह तो एक तरह से बेहया सा हो गया था कोठियों की सीढ़ियों पर चढ़ते चढ़ते ।

आफिस में लोग वैसे ही अपने अपने काम पर लगे हुए थे । टाइप राइटरों की टिप....टिप अपनी ही गति से गूँज रही थी । राज पहले तो घबड़ाया कि किधर जाये....। और क्या पूछे....। अन्त में साहम कर एक व्यक्ति के पास गया । धीरे से पूछा....।” सेठजी कहाँ हैं....।”

क्लर्क ने एक सरसरी नजर उस पर डालते हुये सामने कमरे की ओर इशारा किया और फिर लग गया अपने काम में । राज भारी कदमों से कमरे के पास गया । दरवाजे के बाहर ही लिखा था “मैनेजर” राज को कुछ आश्चर्य हुआ कि कमरे में मैनेजर हैं अथवा सेठ जी ? दरवाजे पर बैठे चपरासी से पूछा—!” अन्दर सेठजी हैं—?

“जी हाँ ! चपरासी शायद सीधा था । गरीब जो था ।

राज अन्दर चला गया ।

छत पर बिजली का पंखा शायद सुबह से ही चल रहा था । बीच में एक मेज थी जिसके चारों ओर कुर्सियाँ बिछी थीं । सेठजी रजिस्टर के पन्नों को देख रहे थे । राज के आने की आहट सुन सेठजी एक चलती दृष्टि उस पर डालती और फिर लग गये अपने काम में ।

राज थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा । अन्त में स्वयं ही

बोला—“सेठ जी !....”

“क्या है—?” सेठजी ने वैसे ही कलम चलाते हुए कहा ।

“कुछ....काम....!”

“क्या—?” अब सेठजी चौंके । जैसे अब उन्हें मालूम हुआ हो कि कोई उनसे बातें कर रहा है ।

“कोई नौकरी.....”

“कैसी नौकरी—?”

“.....”

“यहाँ नौकरी बिकती है या बाँटी जाती है—? सभी लोग नौकरी ही तो माँगने आते हैं ।”

“बहुत गरोब हूँ सेठ जी ! जिन्दगी के काफी दिन बेकार गुजारे हैं !” राज ने गिड़गिड़ाते हुये कहा ।

“तो मैंने इसका ठेका लिया है क्या—?” सेठजी ने चिढ़ कर कहा ।

राजका जी चाहा कि चीख कर कह दे कि अगर ठेका नहीं लिया तो ठेकेदार क्यों बने हैं ? अपने आपको समाज के नेता क्यों कहलाते हैं ? लेकिन कह न सका कुछ भी कह सका तो केवल यही कि—!” “मेरे पास डिग्री है सेठ जी !”

“एक बार कहा यहाँ कोई जगह खाली नहीं है ।”

“मैंने बी० ए० पास.....”

“सुन तो लिया कि यहाँ कोई नौकरी नहीं है ।

“मैंने डिग्री प्राप्त की है सेठ जी !”

“तो मैं क्या करूँ—?” चिढ़ कर चीख उठा सेठ ।

“बी० ए० की डिग्री सेठ...?”

“तो मैं क्या करूँ—? जला डालो ऐसी डिग्री को !” खिज गया सेठजी क्रोध से ।

“सेठजी !” तड़प उठा राज ।

“हाँ ! हाँ जला डालो ऐसी डिग्री को ।”

“सेठ जी !” चीख उठ कहा ।

“चुप रहो बदमाश !”

“सेठ जी !”

और दूसरे ही क्षण राज का सरसराता लप्पड़ सेठजी की गालों पर ।

“ताड़ !”

“धन्न् !” चिल्ला उठे सेठजी ओ धन्न्....रामू....भगडू....।”
सेठ जी नौकरों को पुकारने लगे ।

जब तक लोग अन्दर आये राज कमरे के बाहर हो गया था ।

“पकड़ो बदमाश को....चोर है....जाने न पाये....पकड़ो बाहर गया है....!” सेठ जी बुरी तरह काँप रहे थे । क्रोध से उनका चेहरा लाल हो गया था । कोई आया और उनकी इज्जत को बरबाद कर चला गया । आफिस के सभी लोग सेठ जी के चारों ओर आ खड़े हुये लेकिन किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या बात हुई ।

सेठ जी ने फोन उठा कर थाने पर फोन किया और राज का पूरा होलिया बता दिया । फोन रखने के बाद सेठजी ने चपरासी को बलाकर दस दस के दस नोट देते हुए कहा—! “यह थानेदार साहब को दे देना और कहना सेठजी ने भेजा है ।”

“काम तो आपने बता दिया है न—?”

“हाँ मैंने फोन पर सब बातें कर ली हैं । जाओ जल्दी जाओ ।”

“बहुत अच्छा !” कह कर चपरासी चला गया ।

और उसके बाद—!

रात को बारह बजे राज के हाथों में हथकड़ियाँ लटक रही थीं।
सुबह हुई।

अदालत बैठी—!

और—! ६

और राज को ~~दो~~ महीने की सजा मिली। एक बेगुनाह को
कैद में डाल दिया गया।

उसे उसकी किस्मत ने बंद नहीं किया था बल्कि सेठ के
रूपये ने बंद किया था। और अगर शायद वह की जेब गरम
कर पाता तो इस समय उसके सामने तिनकों की रोटियाँ न
बिखरी होती।—और अगर उसके पास इतने रूपये होते ही तो
क्यों वह कोठरी में बैठा आँसू ही बहाता—?

राज ने पुनः एक बार उन रोटियों की ओर देखा और फिर
डूब गया भावनाओं में—?

“भगवान भी कितना बेरहम है—? दुनिया कहती है
भगवान की नगरी में देर है अंधेर नहीं लेकिन मैं यह पूछता हूँ
क्या यही इन्साफ है कि एक बेकसूर इन्सान के साथ वह कुछ
किया जाये, जो कसूरवार इन्सान के साथ भी नहीं किया
जाता—?”

उसकी पुतलियों ने रोटियों में से भाँकती हुई भूसी को देखा,
जो उससे कह रहा था—।” तुम तो कुत्तों से भी बदतर हो राज !
पालतू कुत्तों को भी इससे अच्छा ही खाना मिलता है।” राज ने
चाहा कि वह थाली को दूर फेंक दे। लेकिन—! लेकिन उसकी
भूख ने उसका साथ न दिया।

और उसके हाथ बढ़ गये थाली की ओर।

उंगलियाँ बढ़ी।

टुकड़ा तोड़ा ।

और मुँह तक लाया ।

पर—!

मुँह में डाल न सका ।

माँ की याद आ गई—!“ न जाने इस समय वह कहाँ होगी—? किस दशा में होगी ? शायद उसे रोटी का टुकड़ा मिला भी होगा या वैसे ही भूख से तड़प रही होगी ।— नहीं....नहीं वह ऐसा नहीं कर सकता कि उसकी माँ भूखी तड़पे और वह पेट भरे । लानत है इन रोटियों पर और....

और साथ ही थाली की एक एक वस्तु बिखर गई कोठरी में ।

उसकी क्रोध से भरी आँखें रोटी के एक एक टुकड़े को घूर रही थी । उसे लगा जैसे वे रोटियों के टुकड़े उससे चीख चीख कर कह रहे हैं—!“ पगले ! मुझे इस तरह न ठुकरा । अब भी समय है, उठा ले मुझे और अपने पेटमें लगी आग को बुझा ले ।—अगर तुम्हारे आगे इन रोटियों का सवाल न होता....अगर तुम्हारा पेट तुम्हें मजबूर न करता नौकरी की भीख माँगने के लिये, तो आज तुम इस अंधेरी कोठरी में न आते....अगर तुम्हारा भूखा पेट तुम्हें दर दर की ठोकरें खाने पर मजबूर न करता, तो तुम अपनी बूढ़ी माँ को छोड़ पुलिस की हथकड़ियोंमें न जा फँसते—! उठा लो....उठा लो मुझे, वरना बाद में रोओगे....चीखोगे....तड़पोगे....और आँसू बहाओगे, लेकिन तुम्हारी आवाज को कोई न सुनेगा । कोई तुमसे पूछने तक न आयेगा कि तुम आँसू क्यों बहा रहे हो—? मैं वही हूँ राज ! जिसके लिये तुम छे महीने से दर दर की भीख माँगते रहे—!“

राज ने दोनों हाथों से माथे को दबाया हुआ था । जैसे वह इन आवाजों को सुनना नहीं चाहता था पर ज्यों ज्यों वह उनसे

दूर भागता जा रहा था आवाजें और भी तेज होती जा रही थी ।

“तुम्हें अभी इस दुनियाँ में बहुत कुछ करना है राज । अगर तुम्हारे में शक्ति नहीं होगी तो प्रत्येक व्यक्ति तुम्हें ठोकर मारता फिरेगा, और तुम आह तक न कर सकोगे....। उठा लो मुझे... आज की दुनियाँ रुपये की है जरूर, पर ताकत के आगे कभी कभी सोने को भी झुकना पड़ता है ।...आज की दुनियाँ में वही इन्सान जीवित रह सकता है जिसकी बाजुओं में ताकत होगी.... जिसके सीने में पत्थर दिल होगा और जो दुनियाँ को ठोकर पर ठोकर मारता रहेगा । अगर तुम जिन्दा रहना चाहते हो राज । अगर तुम चाहते हो कि छे महीने के बाद तुम्हारे साथ किये गये इस अन्याय का बदला लो तो मेरा दामन पकड़ो...मेरी पतवार को इस तूफान में चलाओ... मैं तुम्हें हर तरह से बचा कर किनारे पर पहुँचाऊँगी—! उठा लो मुझे... उठा लो राज... राज... उठा लो... और—!

राज झपट पड़ा उन बिल्वरे टुकड़ों पर । उसके हाथ मशीन की तरह चल रहे थे...एक के बाद दूसरा टुकड़ा निगलता जा रहा था । वह भूल गया था कि यह आँटे की नहीं बल्कि आँटे की भुसी की रोटियाँ हैं । उसे यह भी मालूम नहीं हो रहा था कि वह पत्तों का बना हुआ साग खा रहा है उसके सामने तो केवल एक ही ख्याल था और वह था बदला ! वह बदला लेना चाहता था...इस अन्याय का बदला लेना चाहता था, जो उसके साथ हुआ था उसका नहीं बल्कि उस अन्याय का जो उसके साथ किया गया था ।





“क्या है सरकार—?” दूसरे ही क्षण दरवान ने अन्दर आते हुये कहा ।

“ड्राइवर से कहो, अभी मोटर लेकर आये ।”

“बहुत अच्छा सरकार !”

ड्राइवर चला गया और पन्द्रह मिनट बाद ही कोठी के दरवाजे पर हार्न बज उठा ।

सेठने जल्दी से बरामदे पर से नीचे भाँका और तेजी से नीचे उतर कर जा बैठा मोटर में ।

“कहाँ हजूर—?”

“थाने !” एक छोटा सा उत्तर मिला और कार उड़ चली थाने की ओर ।

सेठ जी जब थाने में पहुँचे तो दारोगा साहब अपना छोटा सा दरबार लगाये बैठे थे । सामने मेज पर दो चार रुपये और कुछ रेजकारी विखरी पड़ी थी । एक दो ताँगों और रिक्से वाले हाथ जोड़े खड़े थे, तीन सिपाही मोर्छों पर हाथ फेर रहे थे और एक सिपाही कह रहा था—! “जो कुछ है साले रख दो वरना चालान कर दूँगा ।”

“और एक पैसा भी नहीं है हजूर । सुबह से बारह ही आने तो कमाये थे सरकार ।”

सिपाही ने थानेदार की ओर देखा । दारोगा ने आँख मारी और सिपाही ने उस गरीब को बूट की ठाकर मारते हुये

कहा—!" भाग साले । अब कभी तीन सवारी न बैठाना ।"

रिक्सेवाला गिड़गिड़ाता चला गया ।

सिपाही अब ताँगेवाले की ओर बढ़ा—? "तेरे पास क्या है....?"

"कछू नहीं माई बाप ।"

"टेट खोल !" सिपाही ने उसकी हड्डियों से ढँकी पीठ पर चमड़े के बूट की ठोकर मारते हुए कहा ।

रोते दिल से उसने धोती की टेट खोली । एक रुपये का नोट और चार आने पैसे निकले । सिपाही ने हाथ बढ़ाकर सब पैसे ले लिये ।

"सरकार ! घोड़ा भूखा है... उसकी वास.....!"

"चुप रहता है साले कि बताऊँ..... भाग जा..... हरामी कहीं का !" उसने एक दो ठोकर और मार दी । ताँगेवाला आँसू बहाता हुआ चल दिया अपने उस ताँगे के पास जिसका घोड़ा किसी बीमार व्यक्ति से अधिक महत्व नहीं रखता था । और जो पाँव के फिसलते ही अपनी आत्मा को हमेशा के लिये खत्म कर सकता है ।

थानेदार ने आठ आठ आने चारो सिपाहियों को दिये और बाकी की रकम अपनी जेब के हवाले करते हुए सेठजी की ओर देखा ! "ओह आप कब से आये हैं सेठजी ?"

"अभी आया हूँ ।"

क्या बताऊँ सेठजी ! इन ताँगे और रिक्सेवालों ने तो नाक में दम कर रक्खा है । इन सालों के फेर में इतना दिमाग खराब हो जाता है कि किसी के आने जाने का भी ख्याल नहीं रहता ।"

"इनके तो नंगे पीठ पर बेतें मारनी चाहिये, तब हरामजादों का दिमाग ठीक होगा ।" सेठजी ने भी हाँ में हाँ मिला दी ।

“क्या करें सेठजी ! हमारी कांग्रेस सरकार ही इतनी ढीली है कि कुछ कहा नहीं जाता । अगर आज अंग्रेजी सरकार होती तो इन्हें बूटों की नालों से ठीक किया होता ।”

“आप ठीक कह रहे हैं दरोगा साहब ! इस सरकार से तो हम तंग आ गये हैं । आराम से पेट भर रोटी भी नहीं खाने को मिलती । बड़ी मुश्किल से महीने में दो चार गाँठों की भलाई हो पाती है । नहीं तो अंग्रेजों के जमाने में रोज ही जनता की सेवा किया करते थे । उस समय तो आपसे भी हमारी दोस्ती गहरी थी । अब तो कांग्रेस ने हमारे और आप में फूट सी डाल दी है ।”

“यह फूट ही तो है सेठजी ! कि हम आप एक दूसरे से मिल भी नहीं सकते... हर काम डरते डरते किया जाता है ।”

“आखिर इस सरकार का अन्त भी होगा कभी !”

“कुछ कहा नहीं जा सकता । मालूम नहीं जनता को भी क्या हो गया है कि अभी तक कांग्रेस ही की माला जप रही है ।”

“.....”

सेठजी चुप हो गये । आखिर बात भी क्या करते ? वे तो आयें ही थे दूसरे काम से ।

“आप खामोश क्यों हो गये ?”

“एक काम से आपके पास !”

“बताइये क्या सेवा कर सकता हूँ ?”

“बस ! उस राज के बारे में आया था ।”

“कौन राज ?”

“वही जिसे आपने पकड़ा था और जो इस समय जेल की फोठरी में पड़ा होगा ।

“ओ तो क्या बात है उसके में ?”

“उसका मकान मालूम करना था ।”

“मकान ?” दारोगा ने आश्चर्य से पूछा ।

“जी हाँ !”

और सेठजी ने उनके कान में धीरे धीरे कुछ कहना शुरू किया ।

“समझ गया...लेकिन काम तो...कुछ खतरनाक ही दिखाई पड़ता है । अगर भेद खुल गया तो हम जिन्दा ही जला दिये जावेंगे ।”

“आप भी कैसी बातें करते हैं जनाब ! यह सब तो आप लोगों के बायें हाथ का खेल है !”

“है तो सही पर...!”

“उसकी आप चिन्ता न करें । मैं आपको खुश कर दूंगा ।”
सेठ ने शेरवानी की जेब में हाथ डाला ।

थानेदार साहब का हाथ भी धीरे से मेज के नीचे गया और दूसरे ही क्षण उनकी हथेली पर नोटों की एक गड्ढी नाच उठी ।

और फिर ! बंडल सरकार की नजरों से बचकर जा सोई जनता के रक्षक और सरकार के सेवक दारोगा जी की खाकी वर्दी की जेब में ।

“रहमान !” उन्होंने आवाज लगाई और थोड़ी देर बाद ही एक काला सिपाही आ खड़ा हुआ सामने ।

“जी हजूर !”

“शाम को सेठजी के घर चले जाना !” उसने इतने धीरे से कहा जिसे केवल वही सुन सका ।

“बहुत अच्छा !”

सेठजी ने घर पहुँचते ही चपरासी को कहा कि भगाड़ू को बुला लाये ।

थोड़ी देर में भगडू मोछों पर हाथ फेरता हुआ कमरे में आया। उसके विशाल शरीर को देखकर भान होता था कि वास्तव में वह पूरा भगडालू ही है जो थोड़ी सी बात पर ही किसी की जान ले सकता है।

“हमें बुलायल गयल हौ वड़े सरकार ?”

“हाँ !” सेठजी ने मेज की दराज बन्द करते हुए कहा !

“तुम्हें एक काम करना होगा।”

“कहीं सरकार ! हम तो आपे क गुलाम बाटी—! कहीं का काम हौ।”

“देखो ! आज रात को तुम और भुलावन, वह जो बाहरी बस्ती है ना ? चले जाना। वहाँ एक मकान है, वस उसी को...”

“लेकिन सरकार कइसे मालुम होई कि ये ही मकान हौ ?”

“यह सब मालूम हो जायगा। एक सिपाही भी तुम लोगों के साथ जायगा। उसे सब मालूम है।”

“तब आप कौनो चिन्ता न कीयल जाये। हम सब दुरुस्त कर देब।”

“.....!”

सेठजी फिर अपने काम में लग गये। भगडू थोड़ी देर तो खड़ा रहा फिर बोला।—“सरकार !”

“कहो ?”

“का कहीं सरकार !” उसने बत्तीसों दाँत निकाल दिया !
“आप तो जनबै करत हई।”

“ओ।” जैसे सेठजी सचमुच जानते हों। दराज में से बीस रुपये निकालते हुए कहा ! “यह बीस रुपये लो बाकी काम होने पर—!”

“का करीं सरकार ! भगवान आपके अइसने काम दे ।”

भगडू बीस रुपये लेकर चला गया और सेठजी बड़बड़ा उठे !
 “बदमाश को तबाह न कर दिया तो वह भी क्या याद करेगा कि किसी से पाला पड़ा था । साले की भोंपड़ी का तिनका तिनका हवा में न उड़ा दिया तो सेठ चन्दूलाल नाम नहीं ।”—और अनायास ही उसका हाथ उसकी गाल पर चला गया जैसे लप्पड़ की पीड़ा अभी तक टीस उठाती हो ।

और.....!

×

×

×

×

×

और सचमुच उस बेचारे की भोंपड़ी का तिनका तिनका जलकर हवा में उड़ गया ।

रात अपनी गति से चली जा रही थी । आकाश पर चन्द्र सितारों के सिवाय और कुछ न था । चाँद का कहीं पता तक न था कि वह कहीं जिन्दा भी है अथवा दुनियां का पाप देखकर आत्म हत्या कर चुका है ।—चारों ओर घटाटोप अन्धकार फैला हुआ था । ऐसा अन्धकार कि जिसमें हाथ को हाथ नहीं सूझता था ।

तीन व्यक्ति तेजी से शहर के बाहर बस्ती की ओर चले जा रहे थे । वह गरीबों की बस्ती इस समय घोर निद्रा में पड़ी सो रही थी । कभी कभी दूर किसी कुत्ते के भोंकने की आवाज आ जाती । बस ! और कोई आहट न सुनाई पड़ रही थी वहाँ । वे तीनों बस्ती के अन्दर से होते हुये जा रुके कोनेवाली एक भोपड़ी के पास । जिसकी दिवारें जर्जर हो चुकी थी ।

उनमें से एक व्यक्ति ने धीरे से कहा—! “यही है उसकी भोपड़ी ! अब तुम जानो और तुम्हारा काम । मैं तो चला ।”

और उनमें एक एक व्यक्ति उसी अंधेरे में न जाने कहाँ गायब हो गया ।

अब केवल भगडू और भुलावन बच गये थे । भगडू ने धीरे से कहा—! “भुलावन ! चारों ओर तेलवा डाल दो !” भुलावन ने मिट्टी के तेल की बोतले खोली और भोपड़ी की चारों दिवारों पर छिड़क दिया । ताकि आग चारों ओर एक साथ लग जाये । अच्छी तरह तेल छिड़क लेने के बाद भगडू ने दियासलाई जलाई और लगा दिया भोपड़ी के एक एक तिनके की ।

और दूसरे ही क्षण उस एक तिनके की आग फैल गई भोपड़ी के लाखों तिनकों के बीच !

दोनों गायब हो चुके थे ।

जल उठी राज की भोपड़ी आग में ।

तभी बस्ती वाले चीख उठे—! आग...आग....बुलाओ...आग !”

और बस्ती से सभी लोग पानी लेकर उस जलती हुई भोपड़ी की ओर दौड़े ! लपटें उठ उठ कर आकाश को चूमने जा रही थी । चारों ओर आग....आग की आवाजें उठ रही थी ।

और उन आवाजों को चीरती हुई एक भयानक आवाज गूँज उठी ।

“राज !”

यह राज की उस बूढ़ी माँ की चीख थी जो अंधी आँखों को लिये भोपड़ी में सो रही थी !

बस्ती से सभी लोग चिल्ला रहे थे—!“बूढ़ी माँ ! निकल आओ बाहर....तुम्हारी भोपड़ी में आग लग गई है....निकल आओ माँ... नहीं तो पिछली दिवार गिर जायेगी !

मगर उसका जवाब नहीं आ रहा था—!” राज.... बेटा....

कहाँ हो....मैं जल रही हूँ राज....आकर बचाओ....बचाओ...
 राज ! तेरी माँ जिन्दा जलाई जा रही है...बेटा लाल....कहाँ हो
 तुम....राज...बचाओ.....”

“बूढ़ी माँ...भाग चलो बाहर...”

“राज.....!”

“बूढ़ी माँ !”

“बचाओ ।”

चीखें उठ रही थीं और भोपड़ी जल रही थी ! आग का भयानक रूप हो चुका था । लोग उसे बुझाने में असफल हो रहे थे । भला एक बार लगी आग बिना राख हुये कैसे बुझ सकती है ? सैकड़ों आदमी खड़े चिल्ला रहे थे लेकिन किसी ने उस जलती हुई भोपड़ी में कूद कर उस मरती लाश को न बचाया । बाहर ही से लोग कह रहे थे—! “माँ ! बाहर आ जाओ ।”

“राज....!”

“बूढ़ी माँ !”

“बेटा...लाल !”

और एकाएक सभी लोग चीख उठे—! “बूढ़ी माँ !”

भोपड़ी की पिछली दीवार गिर गई ।

एक भयानक चीख उठी ।

“राज !”

और फिर भोपड़ी के अन्दर से कोई आवाज न आई !

दिवारें गिरने लगीं !

चिनगारियाँ फूट फूट कर हवा में उछलने लगीं । लपटें और भी तेज होने लगीं ।

तिनके खाक होकर हवा में उड़ने लगे ।

और फिर—।

धीरे धीरे आग की लपटें कम होने लगीं ।

जली आग बुझने लगी । लेकिन अब बुझने से क्या फायदा जब कि सब कुछ जल गया ।

बूढ़ी माँने राज केनाम के नाले सारे आकाश तक पहुँचाये, लेकिन शायद भगवान भी उस आधी रात में सो रहा था तभी पाप की सीमा को बचा न सका और पाप सीमा के भी पार चला गया—एकलौते बेटे की माँ उसी में जल कर ढेर हो गई—।

आग की लपटे' तक चीख उठीं ।

जमीन का जर्रा जर्रा काँप उठा—

और यहाँ तक कि आकाश के सितारे भी आँसू बहाते हुये जा छुपे बादलों के पीछे ।

पर—।

कोई उस आग को बुझा न सका ।

राज की माँ जल गई ।

राज जल गया और ।

उस गरीब इन्सान के लिये दुनिया भी जल गई ।





“माँ”

चीख उठा वह ।

दौड़ पड़ा बाहर की ओर । मगर लोहे के शिकड़ों से टकरा कर रह गया । हथकड़ियाँ झनझना उठीं आपस में टकरा कर ! पंछी फड़फड़ा कर ही रह गया । उसका सांस तेजी से चल रहा था । शरीर पसीने से भीग चुका था बेचैनी से बार बार बाहर जाने की कोशिश करता, पर हर बार लोहे की सीखों से माथा पटक कर खामोश हो जाता !

पहरा देता हुआ संतरी रुक गया ।

“क्या बात है राज !” संतरी ने पास आकर धीरे से पूछा...

“कुछ नहीं !”

“आखिर क्या बात है ? जो इतने घबड़ाये से हो ?”

“.....”

“कोई तकलीफ है क्या ?” उसने फिर पूछा ।

“मेरी तकलीफ को कोई नहीं दूर कर सकता संतरी ! कोई नहीं दूर कर सकता—उस दुख को कोई सुन भी नहीं सकता ।”

“क्या तुम मुझे पराया समझते हो राज !”

“नहीं...नहीं ! ऐसी बात नहीं संतरी ! मैंने तो....तो....कुछ नहीं....मुझे कोई तकलीफ नहीं !”

राज हट गया जङ्गल से । वह नहीं चाहता था कि अपनी

तकलीफ को बताकर दूसरे की भी तकलीफ को बढ़ाये। उसे यह भी विश्वास था कि अगर वह संतरी से फाटक खोलने को कहेगा तो वह बिना किसी हिचकिचाहट के दरवाजा खोल देगा—आज चौथी रात थी राज को उस कोठरी में आये हुए। और चार ही रोज पहले उसकी पहली मुलाकात उस संतरी से हुई थी। लेकिन उस पहली ही मुलाकात ने अपना पूरा रंग दिखाया। इन्सान को इन्सान ही पहचान सकता है। गरीबों के दुःख को गरीब ही जान सकता है। राज ने अपनी कहानी उसे सुनाई और उसकी कहानी खुद सुनी। दोनों की एक ही कहानी थी। बिल्कुल एक जैसी। जैसे दो की नहीं, बल्कि एक की ही, तकदीर हो जिसके दो रूप कर दिये गये हों...दो भाग कर दिये गये हों...दो पहलू बना दिये गये हों और उन दो पहलुओं पर दो इन्सान बैठा दिये गये हों...दो बेगुनाहों को एक ही दीवार में चुन दिया गया हो...! तराजू के दोनों पलड़े बराबर थे। पर डाँवाडोल दोनों ही थे, जो किसी समय भी एक दूसरे को गिरा सकते थे।—उसने राज को बताया कि वह भी उसकी ही तरह एक पढ़ा लिखा नौजवान था। अन्तर केवल यही था कि राज ने डिग्री प्राप्त कर ली थी और वह डिग्री प्राप्त करने वाला था, पर गरीबी की मजबूरी ने उससे वह डिग्री छीन ली और उसे छोड़ दिया अपनी किस्मत की लकीर पर चलने के लिये। महीनों नौकरी की तलाश की पर कौन देता नौकरी—बिमारी से उसकी माँ मर गई...उसकी छोटी बहन चली गई। पर उसके पास एक पैसा भी कहीं से भूलकर न आया। उसके पास कफन तक के लिये तो पैसे थे नहीं, फिर बिमार माँ और बहन की दवाई कहाँ से लाता, अब वह अकेला था...बिल्कुल अकेला...जिसकी मौत पर कोई रोनेवाला न था...तड़पने वाला न था। कुछ दिनों के बाद

उसने पुनः नौकरी की खोज की, पर अबकी बार भी उसे असफलता ही हाथ लगी। शायद अभी उसकी किस्मत का दरवाजा बंद था। अब वह भूखा था—नंगा था—और नङ्गा भूखा इन्सान अपने आप की परवाह नहीं करता। वह जिन्दगी को जिन्दगी और मौत को मौत नहीं समझता—वह इन्सान को इन्सान और हैवान को हैवान नहीं समझता। उसके दिल में नफरत पैदा हो जाती है—घृणा उबाल खाने लगती है और वह संसार की प्रत्येक वस्तु से जल सा जाता है—वह किसी को देखना तक नहीं चाहता—! दुनिया को जला कर राख कर देना चाहता है—समाज को आग की लपटों में फेंक देना चाहता है और अंत में खुद भी उसी जलती हुई चिता में कूद कर राख हो जाना चाहता है।

वह भी तंग हो गया था—दुनिया से समाज से और समाज में रहने वाले उन ठेकेदारों से जिन्होंने समाज को बेच बेच कर खा लिया था और आज जिसकी जर्जर इमारत पर केवल पालिस चढ़ा कर ही खड़ा किया गया था। उसने भी राज की ही तरह एक सेठ को पीटा, खूब पीटा, जी भर कर पीटा जिसके बदले उसे दो साल की जेल हुई। दो साल यानी चौबीस महीनों के बाद वह पुनः उस गन्दगी में आ फँसा जिससे वह निकल कर भागना चाहता था। बाहर आते ही उसकी भूख फिर उमड़ी पर उस भूख को दबाने वाला कोई न मिला। अब उसके दिल में आया कि इस दुनिया से अच्छा तो जेल ही है जहाँ पेट भर खाना तो मिलता है। वह जेल के नाम से भी नफरत करता था पर अब उसमें रहना ही अपनी जिन्दगी समझने लग गया था। और यही सोचकर उसने बाहर आने के तीसरे ही दिन एक सेठ की नाक काट ली जिसके बदले चार वर्ष की सजा हुई। सजा का

नाम सुनकर वह मुस्करा उठा। वह खुश था कि कम से कम चार साल तो वह पेट भर खाना खाता रहेगा।

जेल में आने से उसकी किस्मत ने भी पलटा खाया और एक साल की सजा के बाद ही वह कैदियों का हवलदार बना दिया गया और सजा की समाप्ति के बाद जब उसके सामने नौकरी का सवाल रक्खा गया तो उसने तुरन्त स्वीकार कर लिया। और तबसे वह नौकरी कर रहा है। उसे संतरी की ही नौकरी मिली है और आज दस वर्षों से इसी कोठरी का पहरा दे रहा है। कोठरी के बाहर की जमीन पर उसक बूटों से एक लाइन सी बन गई है। जिस पर आंखें बन्द कर के भी अगर वह चले तो एक इंच भी लाइन से आगे नहीं बढ़ सकता।—यद्यपि दस वर्ष हो गये थे पहरा देते पर राज ही एक ऐसा कैदी था जिससे पहली ही मुलाकात में वह सब कुछ खो बैठा। उसे लगा जैसे वह कैदी नहीं बल्कि स्वयं वही दूसरा रूप लेकर आ फंसा है जेल में।

राज से वह काफी घुल मिल गया था। चार ही रोज में वह उसे अपनी जान से भी अधिक मानने लग गया था। उसने कई बार कहा भी था कि वह फाटक खोल देता है, वह भाग जाये। लेकिन राज न माना। क्योंकि वह नहीं चाहता था कि अपनी भलाई के लिये वह दूसरे की जान का सौदा करदे। वह अपने आराम के लिये दूसरे के सुख को बेचना नहीं चाहता था।

“राज !” उसने सीखों से मुँह लगाकर पुकारा।

“.....”

“तुम्हें मेरी कसम है राज ! केवल एक बात सुन लो।”
अब राज को पुनः जाना पड़ा जङ्गलों के पास।

“तुम्हें मेरी कसम है राज ! सच सच बताओ क्या बात है ?”

“मैंने एक भयानक सपना देखा है संतरी ! जाने क्यों दिल घबड़ा रहा है ।”

“कौन सा सपना देखा है ?”

“..... !”

“बोलो राज !”

“मैंने देखा है कि संतरी ! जैसे चारों ओर आग लगी हुई है । भयानक आग धधक रही है । आग की लपटों से आकाश भी छुप गया है और उसी आग में पूरी दुनिया जल रही है । तमाम इन्सान जल रहे हैं । धीरे धीरे वह आग बुझने लगी और मैंने देखा एक दूसरी आग उठने लगी जो मेरे चारों ओर जल रही थी, मैं छटपटा कर दूर भाग रहा था, पर आग मेरे पीछे ही पीछे भागी आ रही थी और मैं उसी में घिरा बुरी तरह तड़प रहा था । चीख चीख कर लोगों की सहायता मांग रहा था, लेकिन सभी चुपचाप खड़े देख रहे थे । कोई भी पास नहीं आना चाहता था । लोग मुझसे नफरत करने लगे थे । मुझे गालियाँ निकाल रहे थे और मैं चुपचाप आँसू बहा रहा था । उन आँसुओं से आग धीरे धीरे ठन्डी हो रही थी और फिर....!”

“और फिर क्या ?”

और फिर मैंने देखा एक तीसरी आग भी लगी हुई है । जो उन दोनों आगों से भयानक थी । उसमें मैंने देखा संतरी ! कि मेरी भोंपड़ी जल रही है....उसका तिनका तिनका जल कर हवा में उड़ रहा है । और मेरी माँ....और मेरी माँ...माँ...कहते कहते फूट पड़ा राज ।

“राज !”

“.....!” वह बुरी तरह रो रहा था ।

“चुप करो राज ! अपने आँसुओं के साथ मुझे भी रोने के लिये मजबूर न करो । वरना हम दोनों ही इन आँसुओं के तूफान में बह जायेंगे !”

“संतरी !”

“राज !” उसकी आँखों से भी टप टप आँसू गिरने लगे ।

“एक काम करोगे संतरी ? मैं जीवन भर तुम्हारा एहसान नहीं भूलूँगा !”

“कौन सा काम ?”

“रात भर के लिये मुझे छुट्टी दे दो । ताकि मैं अपनी माँ को देख आऊँ कि वह जिन्दा भी है या...।”

“राज !” ऐसा न कहो राज ! वह जिन्दा होगी और जरूर जिन्दा होगी ।”

“खोल दो”

“लो ! और संतरी ने कोठरी का ताला खोल दिया । राज ने हाथ बढ़ा दिये और उसने हथकड़ियों को भी खोल दिया ।

“मैं तुम्हारा एहसान जीवन भर नहीं भूल सकता संतरी !” राज कोठरी के बाहर आ गया ।

“यह बन्दूक भी लेते जाओ राज ! शायद रास्ते में कोई खतरा हो तो...।”

राज ने बन्दूक उठा ली, और घूम पड़ा जेल के फाटक की ओर ।

लेकिन—!

दूसरे के बाद तीसरा कदम न रख सका वह ।

लौट आया कोठरी के पास । जैसे उसे होश आ गया हो कि वह क्या करने जा रहा है ? कहाँ जा रहा है ? क्या वह जेल के

फाटक को भी पार कर सकेगा ? अगर नहीं तो क्यों वह संतरी के साथ नाजायज काम कर रहा है ? जैसे उसे मालूम हो गया हो कि दोस्ती का अर्थ अपने स्वार्थ को पूरा करना ही नहीं होता बल्कि दोस्ती का अर्थ उतना ही बड़ा है जितना छोटा दोस्ती का शब्द ।

“क्या हुआ राज ! तुम वापस क्यों लौट आये ?”

“मैं नहीं जाऊँगा संतरी ! मैं किसी को धोखा देकर नहीं जा सकता । तो अपनी बंदूक और मुझे फिर बन्द कर दो इस कोठरी में ।”

“तुम्हें हो क्या गया है ?”

“मुझे कुछ नहीं हुआ संतरी ! भर दो मेरे हाथों में हथकड़ियाँ । आज मैंने देख लिया कि अभी दुनिया में ऐसे सार्थी भी जिन्दा हैं जो अपनी जान देकर भी अपने दोस्त की जान बचाते हैं । लेकिन मैं नहीं चाहता कि मेरे जाने के बाद तुम्हें किसी तरह का दुःख हो और मेरी जगह तुम बैठा दिये जाओ इस कोठरी में । मैं यह कभी नहीं देख सकता कि मेरे हाथों की हथकड़ियाँ तुम्हारे हाथों में लटकें और तुम कैदी बन कर मुझे गालियाँ निकालो ।

“राज !”

“बस संतरी इससे अधिक मैं कुछ नहीं कर सकता !”

“तुम जाओ राज !”

“अब मैं नहीं जाऊँगा ! खोल दो कोठरी और चले जाने दो उसी जगह जहाँ से मेरे सपने की शुरुआत हुई थी ।”

संतरी ने कोठरी खोली ।

राज को हथकड़ियाँ पहनाई !

और वह फिर जा बैठा उसी पिंजरे में जिसमें से थोड़ी देर

पहले निकला था ।

X

X

X

X

X

आज की दुनिया में शरीफ मनुष्य हमेसा कष्टों के बोझ से दबा रहता है लोग उसे उतना ही अधिक दबाने की कोशिश करता है, जितना ही वह दबता है, वह उनके विरुद्ध आवाज तक नहीं उठा सकता । उनसे कह भी नहीं सकता कि उसे उतना ही दबाया जाये जितनी उसमें शक्ति हो । अगर शक्ति से अधिक रौंदा जायेगा तो उसकी आत्मा तो हथकड़ियों को चूर चूर करके निकल जायगी मगर उसका शरीर कहीं नहीं जा सकेगा । वह तो वहीं पड़ा सड़ता रहेगा जहाँ उसे उसकी आत्मा ने छोड़ा था । और फिर ?—और फिर दुनिया वाले उसकी सड़ती लाश को घसीटते हुए किसी गन्दे तालाब या नदी में फेंक देंगे ।

वह भी उन्ही शरीफों में से एक था जो मरना अच्छा समझते थे बनिस्पत मानवता को धोखा देने के । अगर वह कुछ भी बेईमानी पर तुल जाता—अगर उसके दिल में जरा भी काला दाग आ जाता तो इस समय वह जेल से बाहर दुनिया की रंगीनियों में घूमता होता, न कि आज तक उसी कोठरी में घुटता रहता ।

आज चार महीने हो गये थे राज को एक ही कोठरी में बैठे बैठे । लेकिन इन चार महीनों में वह एकबार भी बाहर न निकला वह निकलना भी नहीं चाहता था । शायद इसलिये कि उसने चार दिन बाद ही कोठरी से बाहर निकल कर बहुत बड़ा पाप कर दिया था—गुनाह कर दिया था—जिसके लिये वह खुद उसका पश्चाताप करना चाहता था । अगर वह चाहता तो संतरी

को धोखा देकर अपने आपको स्वतन्त्र करा लेता—! मगर वह नहीं चाहता था कि अपनी छोटी सी खुशी के लिये वह मानव समाज को बदनाम करे। वह नहीं चाहता था कि यह बेरहम समाज चीख चीख कर यह कहे कि जेल में कोई बेगुनाह और बेकसूर इन्सान नहीं आता। सभी चोर, डाकू, खूनी और पाप करने वाले ही आते हैं ! अगर कोई शरीफ आता तो राज जैसा व्यक्ति जो पुलिस की हथकड़ियों से लेकर जेल की कोठरी तक कहता आया कि मैं बेगुनाह हूँ.....बेकसूर हूँ, कभी पहरेदार को धोखा देकर न भाग जाता।

और यही कारण था कि आज चार महीने हो गये थे मगर किसी ने उससे पूछा तक नहीं कि उसका क्या हाल है ? रात को नींद आती भी है या नहीं ?

इस समय वह गहरी नींद में सो रहा था। धूप सोखों को पार करती हुई उसकी कोठरी में आ रही थी, लेकिन फिर भी वह सो रहा था। मानों कोई बहुत दूर से आया हुआ राहगीर थक कर किसी पेड़ की छाया में सो गया हो...उसकी थकावट ने उसकी नींद को भी हराकर उस पर अपना अधिकार जमा लिया हो। वह इतना थक गया है कि नींद खुलने के बाद भी वह उठना नहीं चाहता। पड़ा रहना चाहता है। उसके तलुये घिस कर लहलहात हो रहे हैं। उनमें इतनी शक्ति नहीं कि वे पेड़ की क्षण भर की छाया को छोड़ अपनी राह का एक भी कदम पार करे।—छाया समाप्त होगई...अंधेरे के जगह उजाले ने ले लिया और अब धूप ने अपनी चादर उसके ऊपर डाल दी। मगर—! मगर वह राही उठा नहीं...वह उठना नहीं चाहता था जैसे उसे उस राह से घृणा हो गई हो...जैसे राह चलते चलते उसे नफरत हो गई हो और वह मंजिल को छोड़ आवे रास्ते पर ही पड़ा

रहना चाहता हो ।

राज के आधे शरीर पर धूप पड़ रही थी मगर वह बेफिक्र सो रहा था । अन्य बहुत से कैदी हथकड़ियाँ पहने ठाठ के साथ इधर उधर घूम रहे थे । उसे भी घूमने की छुट्टी थी । लेकिन वह कोठरी को छोड़ कहीं नहीं जाना चाहता था । क्योंकि वह जानता था कि उसका गुजारा उन लोगों के साथ नहीं हो सकता । वह उनकी संगत में नहीं घुल मिल सकता । अगर एक ओर वह मानवता का पक्ष करेगा तो दूसरी ओर वे दानवता का पक्ष करेंगे ।

उसे मालूम था कि एक दिन उसके बगल की कोठरी वाले कैदी ने उससे कहा था कि—“राज बाबू ! अगर आप इन्सानियत के ही सहारे चलते रहेंगे तो जिन्दा ही मर जाइयेगा । अगर आप चाहते हैं कि अपनी सजा के दिन आराम से पूरे करें तो अपने चलन के इन कपड़ों को उतार दीजिये और हमारी ही तरह बदमाशी के कपड़े पहनिये ।”

“तुम्हें आये कितने दिन हुये हैं—?”

“अभी तो दूसरा ही साल शुरू हुआ है राज बाबू !” उसने ऐसे कहा जैसे उसकी सजा बहुत लम्बी हो ।

“अभी कितने दिन और रहेंगे—?”

“करीब पाँच साल और होंगे !”

“पाँच साल—?” राज ने आश्चर्य से कहा ।

“आप चौक क्यों गये राज बाबू ! पिछलो बार तो नौ साल तक इसी जेल की रोटियाँ खा कर गया था ।”

“तो क्या.....कई सालों से जेल में आये हो ।”

“हाँ ! यूही समझिये—! पहले भी दो बार सजा हुई थी लेकिन वह तो केवल छे ही महीने की थी ।”

राज सन्न हो गया उसकी बातें सुन कर । वह आश्चर्य से देख रहा था उसके मोटे शरीरको जो भूखी की रोटियाँ खा-खाकर गद्दे की तरह फूला हुआ था कभी वह अपने शरीर की ओर देखता जो दो ही महीने में सूख कर काँटा हो गया था और कभी देखता उस दानव को जो सत्रह साल जेल में रहने के बाद भी मोटा था जैसे पानी के बदले घी पीता हो !

“आप सोच क्या रहे हैं राज बाबू !”

“कुछ नहीं !”

“शायद आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं इतने वर्षों से सजा भोग रहा हूँ ।”

“.....!”

“मैं तो इतना ही हूँ राज बाबू । वह जो सामने मोटा आदमी लेटा है न—? पच्चीस वर्षों से उसी कोठरी में पड़ा हुआ है । अभी परसों ही छे साल की सजा भोग कर गया था और आज फिर आ गया खाना खाने के लिये । शायद दो दिन भूखा ही रहा होगा बेचारा ।”

राज ने सामने देखा चबूतरे पर एक मोटा सा आदमी लेटा हुआ था और दो आदमी उसके शरीर पर तेल की मालिश कर रहे थे ।

“वे दोनों उसकी मालिश क्यों कर रहे हैं ।”

“आप नहीं जानते राज बाबू ! यहाँ पहलवान लोग ही आते हैं ! आप जैसे आने वाले दिन रात अपनी कोठरी में बैठे रोते रहते हैं—! वह उनका उस्ताद हैं ना—? हाँ हाँ उस्ताद ! इन लोगों का तो घर ही जेल होता है और जेल ही घर होता है । देखते नहीं कितनी मस्ती उड़ा रहा है ।”

“इन्हें बार बार जेल में आने से क्या मजा मिलता है—!”

“मजा—? आप नहीं समझ सकते राज बाबू ! कि इन्हें यहाँ रहने में कितना मजा मिलता है । दिन भर मालिश करवाते हैं रात को आराम से सोते हैं । जेलमें पेटभर खाना मिलता है और बाहर तो वह भी नहीं मिलता ।”

“अगर इन्हें किसी चीज की जरूरत होती है तो—?”

“तो आसानी से मिल जाती है । जहाँ किसी को दो पैसा दिया कि वह बाहर से चीजें ले आता है । बाहर इन्हें दाम तो देना नहीं पड़ता ।”

“क्यों ?”

बाहर भी इन्हीं की शाखायें फैली हुई हैं—आपको आश्चर्य होगा राज बाबू ! कि बड़े बड़े सेठ तक इनकी सेवा करते हैं । यह लोग तो जेल में रहते हैं लेकिन सेठजी के तिजोड़ी के रुपये इनकी टेट में आ जाते हैं ।”

“वह कैसे ?”

“बस ऐसे हो समझिये ! जिस तरह कोई कर्जदार महीने, महीने साहूकार को सूद देता रहता है पर फिर भी साहूकार की रकम वैसे ही सुरक्षित रहती है ।—इन्हें भी महीने महीने सेठ लोग रुपये देते रहते हैं, पर फिर भी इनका अहसान उन पर चढ़ा ही रहता है ।”

“तो सरकार इन गन्दगियों को दूर क्यों नहीं करती ?”

“सरकारी काम तो सरकार के लोग ही जाने । हमें तो कुछ मालूम नहीं सरकार किस चिड़िया का नाम है....उसका कैसा रंग है...और क्या काम करती है वह—? अगर कुछ समझ में आता है तो वह यही कि सरकार लुटेरों की एक संस्था है जो गरीबों को अमीरों के लिये लूटती है ।”

और राज कैदी की इन बातों को सुन कर चुप हो गया ।

उसे मालूम हो गया कि एक अनपढ़ व्यक्ति भी सरकार को किस दृष्टि से देखता है—? उसे कभी सपने भी में ख्याल न था कि जेल लोगों को सुधारने के बजाय और भी खराब बना देता है। वह कभी सोच भी नहीं सकता था कि सरकार का नियम और कानून अपराधी को अच्छे रास्ते पर चलाने के लिये होता है अथवा और भी बुरे रास्ते को दिखा कर उसके सामने एक पथ प्रदर्शक की भाँति आता है।



“तुम भूल रहे हो भइया !...

“मैं ठीक कह रहा हूँ ।”

“भइया—”

“हाँ, हाँ मैं ठीक कह रहा हूँ शैल ! कि दुनियाँ तबाह हो जायेगी...बरबाद हो जायेगी...इसकी एक एक ईंट जल कर राख हो जायेगी ।”

“लेकिन फिर भी इन्सान नहीं मर सकता ।”

“इन्सान ? इन्सान इस दुनिया में है ही कहाँ ?”—चीख उठा राजन ! “वह तो जाने कब का यहाँ से चला जा चुका है। अब की छाया भी नहीं रह गई। अगर इन्सान इस दुनिया में जिन्दा होता, तो आज यह भयानक खाई खुदी हुई न दिखाई

देती। वह उसे पाटकर समाज को उस खाइ में गिरने से बचा लेता ! अगर मानव जीवित होता, तो हमारा यह समाज चिता में जलता न होता।”

“मैं तुम्हारी बात को नहीं मान सकती भइया !”

“इस समय तुम भले ही न मानो शैल ! लेकिन एक दिन तुम्हीं कहोगी कि भइया ! तुम ठीक कह रहे थे कि इन्सान इस दुनिया में है कहाँ ? उस समय तुम स्वय ही चीख चीख कर कहोगी कि इन्सान मर चुका है इन्सानियत मर चुकी है...! मानव चिता की गोद में पड़ा है और मानवता जल रही है।”

“भइया !”

“इस समय तुम मान भी नहीं सकती, क्योंकि तुम पर तो पार्टी का भूत चढ़ा हुआ है। इस समय तो तुम्हारे दल का चाबुक तुम्हें अपने साथ साथ नचाये जा रहा है। लेकिन एक दिन जब तुम्हारी पीठ चाबुकों की मार से छिल जायेगी..... जब उसमे से लाल और गाढ़ा रक्त धरती पर पानी की तरह चूयेगा...जब तुम्हारे शरीर की चमड़ी जर्जर हो जायेगी तब उस समय तुम चीखोगी, चिल्लाओगी, तडपोगी और आँसू बहाओगी...! छिला हुआ शरीर जलन पैदा करेगा...निकला हुआ रक्त तडपेगा.....लाल और सफेद चमड़ी सड़-सड़ कर बदबू पैदा कर देगी लेकिन तुम्हारे दल का कोई भी व्यक्ति तुम्हारे पास तक नहीं आयेगा...तुम दुनिया के एक कोने में पड़ी मर जाओगी लेकिन तुम्हारी सरकार एक कफन का भी इन्तजाम न कर सकेगी...वह तुम्हें ठोकर मारेगी, तुमसे घृणा करेगी, नफरत करेगी.....तुम्हारी कई दिनों से पड़ी लाश को दो चमार सड़कों और गलियों में धसीटते हुये तुम्हें किसी नदी या गन्दे नाले में फेंक आयेंगे...! और...!और उस समय तुम्हारी

आत्मा चीख चीख कर कहेगी कि वाकई इन्सान अब इस जहान से मुँह फेर कर राही की तरह दूसरी ही दिशा को जा चुका है। और....

“भइया—!”

“तुम्हें मेरी बातों पर गुस्सा आता होगा शैल ! लेकिन मैं ठीक कह रहा हूँ कि आज की तुम्हारी सरकार ऐसी ही है, जो शासन करना जानती है, लेकिन शासन की धारा को पहचानना नहीं जानती। क्या तुम बता सकती हो शैल ! कि आज कौन सा गरीब आदमी सरकार की मशीनरी में काम कर रहा है—? सभी बड़े आदमी ही उसमें घुसे हुए हैं, जो जनता के नाम पर अपनी जेबें गरम कर रहे हैं—! स्वतन्त्रता से पहले जिनके पास एक मोटर भी नहीं थी स्वतन्त्रता के बाद उन्हीं के पास चार चार मोटरें हो गई। आखिर यह सब कहाँ से आई—? बोलती क्यों नहीं जो नेता लोग केराये के मकानों में रहते थे आजादी के बाद बीसों मकानों के मालिक बन गये हैं। उनके पास इतना पैसा कहाँ से आया—? केवल हमारे और तुम्हारे जख्मों को खरोद कर ही यह सब पैसा इकट्ठा किया गया है। अगर उन्होंने कुछ त्याग किया तो केवल दिखावटी—! बनावटी—! जनता को दिखाने के लिये उन्होंने विदेशी कपड़ों को छोड़ खद्दर का पहनना शुरू किया... हैट को उतार कर गांधी टोपी पहनने लगे—!”

“सीमा से पार जाने की कोशिश न करो भइया !” गला भर आया शैल का। उसका दिल रो उठा अपने दिल की बुराई सुन कर। उसका जी चाहा कि वह अभी सरकार द्वारा राजन को पकड़वा दे कि यह देश विद्रोही है। लेकिन भाई के प्यार ने उसे बुरी तरह बाँध रखा था। और वह था कि बहन के प्यार को

ठुकरा कर भी उसकी सरकार को गालियाँ ही निकाले जा रहा था।

“मैं जो कुछ कह रहा हूँ, इसका मतलब यह नहीं शैल ! कि मैं तुम्हारे नेताओं की बुराई कर रहा हूँ या तुम्हारे दल को गालियाँ दे रहा हूँ—बल्कि मैं उन खद्दरधारियों और दल की धनिकों को गालियाँ दे रहा हूँ जिन्होंने खद्दर और सफेद टोपी पहनकर महात्मा गांधी और जवाहरलाल जैसे महापुरुषों को बदनाम कर दिया है। जो ऊँची ऊँची कुर्सियों पर बैठकर ऊँची ऊँची रिश्वतें ले रहे हैं—जो काले परदे को नकाब की तरह मुँह पर लगा कर चोरबाजारी कर रहे हैं ! जो रात को दुनियाँ के बुरे से बुरे काम करने के बाद भी दिन को देश भक्त और गाँधी भक्त कहलाते हैं।”

“उन्होंने बहुत त्याग किया है भइया ! आप केवल बाहरी दिखावे को ही देखते हैं, उनके अन्तर की भावनाओं को भी देखिये ! न जाने कितनी बार उन्होंने पुलिस की लाठियाँ खाई होंगी...जाने कितनी बार गोलियों के सामने आये होंगे...जाने उन बेचारों ने अपना कितना ही खून इस धरती माता के चरणों पर गिराया होगा... और न जाने कितनी ही बार जेल की हवा खाई होगी तब कहीं आज.....”

“जेल ?” बीच ही में ठहाका मारकर हंस पड़ा राजन !
 “तुम्हारा मतलब है कि उन्होंने लाठियाँ खाई हैं, जेल गये हैं और खून बहाया है, इसीलिये आज ऊँची कुर्सियों पर बैठे हैं, क्यों यही ना ?—जेल तो मैं भी चार बार हो आया हूँ...खून तो मैंने भी बहाया है...और पुलिस की लाठी का निशान तो मेरे माथे पर भी है, लेकिन मुझे कोई कुर्सी नहीं मिली...मुझे कोई सरकारी विभाग नहीं सौंपा गया जिससे मैं भी स्वतन्त्रता का पूरा पूरा

लाभ उठा सकूँ ! तुम भी कितनी भोली हो शैल ! अरे फगली न जाने देश के कितने ही आदमी ऐसे हैं जो सरे बाजार फाँसी के फंदे पर लटका दिये गये थे....जिनको पेड़ से बाँध कर उनकी नंगी पीठ की चमड़ी बेतों द्वारा उतार दी गई थी....जिन्हें जिन्दा ही जलती हुई आग में फेंक दिया गया था....क्यों—? क्योंकि उन्होंने कांग्रेस का साथ दिया था, अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध भारत का तिरंगा झंडा उठाया था, उन्होंने अंग्रेजी सरकार के साथ गद्दारी की थी....देशमें विद्रोह किया था, बगावत की थी—! विदेशी सरकार की नजरों में वे वागी थे....मुजरिम थे....विद्रोही थे....खूनी थे....गद्दार थे....कमीने और नालायक थे....इसलिये उन्हें सजा दी गई....फाँसी दी गई....और उनकी चमड़ी उतरवा ली गई—! लेकिन शैल ! उन्होने अपने देश के लिये यह सब किया...गुलामी की इन जंजीरो को तोड़ने के लिये किया था, जो उन्हें सदियों से अपने पंजे में जकरी हुई थीं—अपने नेताओं की आवाज पर उन्होने विशाल सरकारी इमारतों को जला डाला था...पुलिस की गोलियों के सामने अपने सानों का तान कर अपने नेताओं को बचाया था—! अपने हड्डियों के ढाँचों को उन्होंने हँसते हुए संगोनों की नाकों पर उड़लवाया था, केवल इसी लिये कि उनके नेता जिन्दा रहें...उनके बलिदानसे देश आजाद हो जाये—! उन्हें विश्वास था कि अगर वे मर जायेंगे तो कोई हर्ज नहीं उनके नेता उनके घरों का इन्तजाम करेंगे । लेकिन शैल ! उन मरने वालों के लिये स्वतन्त्रता पाने के बाद तुम्हारी सरकार ने क्या किया—? जब नेताओं के बचाने के लिये उन्होंने अपने सीनों में गोलियों को छुपा लिया उनके छोटे छोटे बच्चों, विधवा औरतों के लिये उन नेताओं ने क्या किया—?

“.....”

“बोलो शैल ! उन शहीदों के खूनके बदले ऊँची कुर्सियाँ पाने वालों ने उनके लिये क्या किया—? उनके लड़कों को कौन सी जगहें दीं—? कितने मकान अपने घरों के सामने बनवा दिये—? देश आजाद हो गया तो क्या हुआ, धरती माता जंजीरों से मुक्त हो गई तो क्या हुआ—? उस माता के दिल से पूछो जो एक के हाथों आजाद होकर दूसरे के हाथों कैद हो गई—! पहले गैर लोग उसको तंग करते थे, सताते थे, उसका रक्त चूसते थे पर अब तो उसी के बेटे उसको सता रहे हैं उसका बचा हुआ रक्त भी निकाल रहे हैं। उसके निकलते हुये आँसुओं को देखो शैल ! जो इस आजादी से गुलामी की हथकड़ियों को ही अच्छा समझती हैं। पहले कम से कम, लोग उसे धरती माता और भारत माता कह कर तो पूजते थे ! उसके चरणों में माथा तो टेकते थे। लेकिन आज—! उसी माता की कोई कदर करनेवाला भी नहीं, उसे कोई हाथ जोड़नेवाला भी नहीं जो थे वो तो शहीद हो चुके। जो माता को माता समझते वे माता के लिये माता की गोद में लुप चुके हैं ! अब तो वे ही लोग रह गये हैं जो अपने आपको माता का पुजारी कह कर चोरकी तरह लूटना जानते हैं—। उसके तड़पते हुये अरमानों से पूछो शैल ! जो अब भी रो उठती हैं अपने शहीद बेटों को याद करके।

“.....”

शैल चुपचाप सुन रही थी और वह कहे जा रहा था।

“चुप क्यों हो चिल्लाकर कहो कि शहीद होने वाले ढोंगी और नालायक थे, असली पुजारी तो वे हैं जिन्होंने देश की बागडोर को अपने हाथ में ले रखा है।

“क्या बात है बेटी !” तभी उनकी माँ कमरे में आ गई।

“माँ !” माँको देखते ही रुके हुये आँसू गिरने लगे शैल की

आँखों से ।

“आज भी राजन ने तुझे कुछ कहा है क्या ।”

“हाँ माँ ! भइया सरकार को गालियाँ दे रहे हैं और...और ।

“और यह भी कह दो कि नेताओं को भी गालियाँ दे रहा हूँ ।” शैल की बात को राजन ने पूरी कर दी ।

“हाँ गालियाँ नहीं तो और क्या दे रहे थे—?” शैल ने भरी आँखों से कहा ।

“राजन ! तू दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है, तुझे शर्म नहीं आती बहन को रूलाते हुये—” माँ ने शैल का पक्ष किया “मुझे क्या मालूम था मां ! तुम्हारी बेटी यानी मेरी बहन मतलब यह कि खदर प्रेमी और कांग्रेस की पुतली इतनी जल्दी ही रो पड़ेगी !” राजन ने हंसते हुए कहा ।

राजन की बात सुन कर शैल और भी खिज गई—। “देखा माँ ! अब भी नहीं मान रहे हैं ।”

“चुप होता है कि नहीं बेशर्म !”

“मैं क्यों चुप होऊँ माँ ! बहस तो इसी ने शुरू की थी ।”

“तो इसका मतलब यह कि तू उसे रुला दे !”

“मैंने उसे रोने के लिये थोड़े ही कहा था ।”

“और नहीं तो क्या ?” शैल ने कहा ।”

“मैं तो तुम्हें देशकी स्वतन्त्रता की कहानी सुना रहा था ।

“ऐसी ऐसी कहानियाँ अपने ही पास रखा करो ।” माँ ने फिर बेटी का पक्ष लिया ।

“माँ ! तू तो हमेशा उसी की तरफ से बोलती है । कभी तो मेरी तरफ से बोला कर !”

“तुझे तो ऐसी मार मारनी चाहिये निगोड़े कि कभी भी मेरी बेटी को कुछ न कहे !”

“जितना मारना था माँ ! उतना तो तूने मुझे बचपन में ही मार लिया । अब तो मुझे भी अकल आ गई है !”

“बल बेटी ! इस नालायक से तो बोलना भी पाप है !”

“तू ठीक कहती है माँ !”

“चुप रहे ।”

जब शैल और माँ के साथ कमरेसे बाहर निकली तो राजन ने उस पर एक और बोली कस ही दी—! “बड़ों ने ठीक ही कहा है कि औरतों के पास आखिरी हथियार रोना ही होता है ।”

शैल चली गई—!

और उसके बाद दो रोज तक वह राजन से नहीं बोली । राजन जब उसे देखता, कोई न कोई बोली मार देता, और वह जल भुन जाती । लेकिन कुछ बोल न पाती । क्योंकि वह जानती थी कि अगर वह एक बात भी कहेगी तो उसके बदले उसे चार बातें सुननी पड़ेगीं । कभी कभी तो राजन उसे इतना रुला देता था कि वह हफ्तों उससे नहीं बोलती । लेकिन अन्त में उसे हार माननी ही पड़ती थी । और राजन था कि जब उसे जलाना चाहता तो कोई न कोई कांग्रेस की बुराई कर देता । और कांग्रेस की बुराई उसे जहर की तरह लगती । क्योंकि वह किसानों के मुँह से भी सरकार की नुकता-चीनी नहीं सुनना चाहती थी ।





“नींद आ रही है क्या—?”

“इसी का तो दुख है कि नींद नहीं आती !”

“क्यों—?”

“अगर नींद आ जाये, तो कम से कम इन भ्रमों से तो मुक्त हो जाऊँगा। और अगर हमेशा के लिये नींद आ जाये तो.....

“राज !” बीच ही में बोल पड़ा वह—! “ऐसी बात न कहो राज ! जब किनारे पर उतरने के लिये पाँव रखने की देरी है तो उस समय तुम नाव को डुबोना चाहते हो ?”

“किनारा भी तो अभी बहुत दूर है। अगर वही दिखाई दे देता तो फिर बात ही क्या था।

“अब तो किनारा पास आ गया है।”

“क्या कहा !” राज उठ कर दरवाजे के पास आ खड़ा हुआ।

“हाँ मैं ठीक कह रहा हूँ राज ! बिल्कुल पास आ गया है किनारा।”

“लेकिन मौत का या जिन्दगी का—?”

“जिन्दगी का ! जिसका जन्म सूरज की नई करण की नई रोशनी से होगा।” H2270

“साफ साफ बता दो संतरी भइया ! कि तुम किन पहेलियों की गठरी खोल रहे हो—?”

“मैं पहेली नहीं सच्ची दास्तान सुना रहा हूँ—! बारह घंटों के बाद तुम इन खूनी सीखों से बाहर आ जाओगे ।

“संतरी भइया !”

“हाँ राज ! कल सूरज की पहली किरण के साथ ही तुम मुक्त कर दिये जाओगे—और तुम्हारी जगह शायद फिर कोई बेगुनाह पंछी आ फसेगा इसी पिंजरे में ।

“.....”

राज चुपचाप खड़ा रहा । संतरीको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतनी खुशी की बात सुनकर भी राज हंसा नहीं । बल्कि पहले से भी अधिक गम्भीर हो गया । उसे आशा थी कि राज यह बात सुन कर खुशी से उछल पड़ेगा और बाहर आकर उससे चिपक जायेगा, लेकिन आशा का पानी भाप बन कर उड़ गया और अब निराशा ही उबल रही थी ।

“खामोश क्यों हो गये राज ?”

“.....!”

“क्या तुम इस बन्दीखाने से मुक्त नहीं होना चाहते—?”

“यह बात नहीं संतरी भइया । कौन ऐसा मनुष्य है जो लोहे की हथकड़ियों को तोड़ना नहीं चाहेगा—?”

“तो फिर तुम चुप क्यों हो गये—? तुम्हें तो खुश होना चाहिये....हंसना चाहिये....ठहाका मार कर इस कोठरी की दिवारों पर अपनी दास्तान लिखनी चाहिये ताकि अगर सुबह कोई बेगुनाह आ फंसे तो कम से कम उसे यह तो तसल्ली हो कि उससे पहले भी कोई बेकसूर आ चुका है इन शलाखों के अन्दर !”

“हंसने को तो हंस दूँ पर.....!” कहते कहते रुक गया राज ।

“पर क्या—”

“पर हंसने के बाद कहीं रोना न पड़े !”

“पगले ! रोना और हंसना तो दुनिया में लगा ही रहता है ! गरीब कभी हंसते नहीं लेकिन फिर उन्हें रोना पड़ता है—अमीर कभी रोते नहीं किन्तु फिर भी हमेशा हंसते हैं !”

“.....!”

“हंसो राज !”

“.....!”

“अपने लिये नहीं तो मेरे लिये ही सही !”

“.....!”

“राज ।”

“हाँ ।”

“हंसो ।”

और अनायास ही राज के होठों पर मुस्कान नाच उठी ।

“और हंसो—।”

मुस्कान बढ़ती गई....

“और हंसो राज !”

हंसी जवान हो गई ।

“राज और जोर से हँसो ।”

और राज ठहाका मार कर हंस पड़ा ।

“हा हा हा...हा हा...हा...हा”

“हा हा हा...हा हा...हा...हा...”

दोनों के कहकहे गूँज उठे रात के उस सन्नाटे में ।

लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी हँसी कोठरी के अंधेरे में ही

गायब हो गई। आँखों से आँसू छलक पड़े—! शायद उस कह कहे के पीछे आँसूओं के बादल छुपे थे।

“तुम रो रहे हो राज !” संतरी की हँसी भी बन्द हो गई।

“नहीं....नहीं....तो...देखो...मैं तो हँस रहा हूँ....देखो संतरी भइया....हा हा...हा हा...तुम भी हँसे हा हा...हा...हा...!” लेकिन उसके आँसू न बन्द हो सके। वह हँस रहा था, अपने लिये नहीं बल्कि उस संतरी के लिये जिसे वह अपने बड़े भाई की तरह मानने लगा था। उसे मालूम था कि अगर वह उसकी उस खुशखबरी का इनाम नहीं देगा तो उसे बहुत दुख होगा। और इसीलिये उसे हँसना पड़ा। वह नहीं चाहता था कि अपने साथ किसी दूसरे के दिलको भी रुलाये। लेकिन उसकी उस हँसी के परदे में रोना छुपा था...आँसू छुपे थे और छुपी थी टीस, तड़पन, जलन और बेचैनी।

धीरे धीरे रात बीतती जा रही थी। सजा के घंटे कम होते जा रहे थे। जिन्दगी का किनारा पास आता जा रहा था—! मौत का किनारा दूर भागता जा रहा था।

सन्तरी कन्धे पर बन्दूक रख बूटों की आवाजें कर रहा था। और राज दिवार के सहारे बैठा अपनी अन्तिम घड़ियां को बिता रहा था।

उसके सामने भविष्य और भूत दोनों ही नाच रहे थे। एक को देखने की कोशिश करता तो दूसरा सामने आ जाता और दूसरे को देखने से पहले ही पहला आ रुकता।

सुबह वह जेल से बाहर निकल जायेगा। सजा की अवधि समाप्त हो जायेगी और वह हमेशा के लिये मुक्त हो जायेगा। जिन्दगी से नहीं बल्कि जेल से, जेलकी इन अपवित्र दिवारों से... जेल के इन खूनी जंगलों से और बेरहम पत्थर दिल जेल की इन

हथकड़ियों और बेड़ियों से—! लेकिन सुबह वह जायेगा कहाँ—? एक और सवाल आ खड़ा हुआ उसके सामने और जवाब यही कि अपनी माँ के पास, अपनी सुनसान भोपड़ी के पास। वह जायेगा और जरूर जायेगा। उसकी अंधी माँ आंगन में चार पाई पर लेटी होगी। उसकी बेनूर आँखों से छल छल आँसू वह रहे होंगे.....वह धीरे धीरे उसके पास जायेगा....अपने काँपते हाथों से उसके आँसू पोछेगा और वह चौंक कर पूछेगी “कौन है—?” मैं चुपचाप खड़ा रहूँगा। वह फिर घबड़ा कर कहेगी “राज” और मैं जा लिपटूँगा माँ से। उसकी गोद में छुपकर कहूँगा कि उसने तुमसे झूठा वायदा किया था.....उसने उससे झूठ कहा था माँ मैं कल सुबह ही आ जाऊँगा लेकिन आ रहा हूँ छे महीने के बाद—! माँ!”

और राज फूट पड़ा बच्चों की तरह।

तभी संतरी ने फिर उसे चौंका दिया। उसके आँसू को रोक दिया।

“राज।”

“.....!”

“रो रहे हो राज!”

“नहीं....नहीं तो!”

“झूठ न बोलो राज! मैंने खुद तुम्हारी सिसकियाँ सुनी है।

“.....”

“आखिर तुम्हें क्या तकलीफ है राज—?”

“कुछ नहीं।”

“तो रो क्यों रहे थे।”

“यूँ ही माँ की याद आ गई थी।

संतरी चुप हो गया।

राज पुनः ठंडी आहें भरने लगा ।

और रात अपनी ही चाल से चलने लगी ।

घड़ियां गुजरने लगती ही कितनी देर है—आँखकी पलकें खुलते ही तो जिन्दगी का सबेरा दिखाई पड़ता है, और बंद होते ही मौत का अंधेरा—! तो फिर एक रात जिसमें केवल बारह ही घंटे होते हैं कितनी देर अपने को काले परदे में छुपाये रखेगी—? जेल के घंटे घर ने भोर पाँच बजने की सूचना दी और थोड़ी देर के लिये चारों ओर कुछ खुसफुसाहट और आवाजें हुई । यह कोई नई बात नहीं थी, रोज ही पाँच बजे पहरेदारों की ड्यूटियाँ बदला करती थीं । रातके संतरी जाते और सुबह के संतरी आ खड़े होते अपनी अपनी कोठरी पर । कैदियों से इतना डर—? जो लोहे की कोठरी में लोहे की हथकड़ियाँ पहने बैठे हैं, उसपर भी इतना डर—!

राज भी आ खड़ा हुआ जंगले के पास । उसकी भी तो रोज की आदत सी हो गई थी कि पाँच बजे रात के साथी को अलविदा कह कर बेखबर सोता । लेकिन आज वह सोने के लिये अलविदा नहीं कहना चाहता था बल्कि हमेशा के लिये जुदाई का नक्शा खींचना चाहता था ।

“जा रहे हो संतरी भइया—!” राज ने धीरे से पूछा ।

“हाँ राज ! बारह घंटे के लिये जा रहा हूँ, और बारह घंटों के बाद फिर आ खड़ा होऊंगा यहीं पर । लेकिन.....”

“लेकिन मैं तुमसे न मिल सकूंगा ।” संतरी की बात को राज ने पूरी कर दी ।

“अच्छा राज ! सुबह तुमसे जेल के बाहर मिलूंगा !”

“.....!”

राज चुप रहा और संतरी अपना ताज दूसरे संतरीको पहना कर

चला गया। राज वैसे ही खड़ा देखता रहा उस अंजान मुसाफिर को जिससे राह चलते ही मुलाकात हो गई थी और शायद राह के बाद उनकी मुलाकात का भी अन्त हो जाये। रात की पलकें बंद होने लगीं और देखते ही देखते सुबह की सफेदी आकाश पर छाने लगी। राज के होठों पर मुस्कान और गम्भीरता साथ साथ नाच रही थी। नई जिन्दगी की मुस्कराहट आते ही नई मौत की गम्भीरता छा जाती, और.....!

सूरज की पहली किरण के साथ ही जेलर दो सिपाहियों के साथ आया।

कोठरी का ताला खोला।

लोहे की हथकड़ियाँ तोड़ीं—!

और राज की ओर देखते हुये कहा—!“ राज ! अब कभी इस जगह मत आना।”

“कोशिश तो करूंगा जेलर साहब ! कि अब कभी इस बेगुनाह कोठरी से प्रेम न करूं।”

“हम जानता है राज ! कि तुमने बहुत बड़ा कसूर नहीं किया, लेकिन तुम नहीं जानता, आज का कानून तुम जैसा लोगों का लिये नहीं है। यहाँ आनेवाला तुम जैसा दुबला पतला आदमी नहीं होता, वह जो खरीटें लेकर अभी तक सो रहा है ना, वैसा वैसा आदमी यहाँ आना सकता है। जेल उसी से डरता है तुमसे नहीं।”

“.....!”

“यह पाँच रुपया रखो वक्त जरूरत पर काम आयेगा।” जेलर ने जेब से पाँच रुपये का एक नोट राज की ओर बढ़ाते हुये कहा।

“रहने दीजिये जेलर साहब ! मुफ्त की कमाई पेट में बद-

हजमी पैदा कर देती है।”

“तुम भी कैसा बातें करता है राज ! सुबह सुबह मिलता चीज को ठोकर नहीं मारा जाता, समझा—!”

“समझ गया जेलर साहब !” और राज ने पाँच का नोट अपनी जेब में रख लिया।

जेल के कपड़ों को उतार कर अपने वही पुराने कपड़े पहने और जेलर को सलामी दाग चल दिया फाटक की ओर।

बाहर आते ही एक नई दुनिया दिखाई देने लगी। एक अजीब सी चहल पहल उसके कानों में गूँजने लगी। वह आश्चर्य से चारों ओर देख रहा था। जैसे किसी भयानक कूँये से कई साल की जिन्दगी गुजारने के बाद वह ऊपर आया हो। और अब उसे मालूम हुआ हो कि दुनिया क्या है—? और दुनिया में रहने वाले क्या हैं ?।

का खर्च जेल की वही छोटी सी कोठरी ही चलाती थी।

खाना खा चुकने के बाद राज ने कहा “संतरी भइया ! अब मुझे छुट्टी दो, घर पर माँ राह देख रही होगी ।”

“फिर कब मिलोगे—?”

“जिन्दगी रही तो मिलता ही रहूँगा, और अगर.....!”

“राज !” तड़प उठा संतरी आखिर तुम जिन्दगी को इस तरह बेचा क्यों करते हो—?”

“क्योंकि इसकी कोई कीमत जो न हुई । अगर इसकी कुछ भी कीमत होती संतरी भइया ! तो यह समाज उसे ठोकर न मारता फिरता बल्कि देवता की तरह मन्दिर में रख कर इसकी पूज करता—! इसे जिन्दा रखता ताकि यह भगवान के चरणों में जिन्दगी के फूल चढ़ा सकता । मगर....!” कहते कहते राज रुक गया ।

“मगर क्या—?”

“जाने दो संतरी भइया ! समुद्र से जाने कितना पानी निकलता रहता है लेकिन फिर भी वह कम नहीं होता....! देखो दोपहर होने को आ गई है, माँ बेचारी भूखी प्यासी बैठी होगी । कम से कम उसे कह तो आऊँ कि उनका राज जिन्दा है ।—! बेकसूर है तभी तो फाँसी पर नहीं चढ़ा ।”

“अच्छा राज ! जाओ लेकिन कभी कभी इस गरीब पर भी ध्यान रखा करना ।” कहते कहते उसकी आँखें भर आईं ।

और राज लिपट गया उसके गले से....! “संतरी भइया !”

“राज !”

“संतरी भइया ! कभी कभी अंजान की मुलाकात भी कितनी दर्दनाक जुदाई ले आती है ।”

“इसी का नाम तो मुलाकात है ।”

“अगर मुलाकात में खुशी है तो उसके साथ पीड़ा क्यों लिपटी रहती है....? मुस्कुराहटों का परदा हटते ही आँसू क्यों ढलकने लगते हैं....?”

“..... !”

“इसका तुम्हारे पास कोई जवाब नहीं है क्या—?”

“नहीं....!”

दोनों आँसू बहा रहे थे। दो अंजान राहीं....दो तस्वीरे... खुशी और गम....मुस्कान और आँसू.....!

×

×

×

वही पुराना कुर्ता और मैला पैजामा पहने तेजी से चला जा रहा था। बड़ी हुई दाढ़ी और सूखे बाल जिन पर तेल लगे भी एक मुद्दत सी हो गई थी। उसके पाँव एक के बाद दूसरे सड़क के सीने पर पड़ते और सड़क की जलन पाते ही उठ कर आगे बढ़ जाते। उसे कुछ भी होश न था कि वह कहाँ जा रहा है। अभ्यस्त रास्ते पर स्वयं ही चलता जा रहा था। इसी रास्ते से कभी वह यूनिवर्सिटी जाया करता था। यहाँ का कण कण उससे परिचित था एक विचार के जाते ही दूसरा विचार उसके मस्तिष्क के किनारों से टकरा उठता और साथ ही वह जलजले की तरह काँप जाता। कई बार तो वह फुटपाथ के खम्भों से टकराते टकराते बचता।

सूरज की सीधी किरणें धरती पर पड़ रही थीं और धरती आग की तरह धधक रही थी। गरम गरम भोंके उसके सूखे बालों को किसी हसीन के आंचल की तरह लहरा रहे थे। माथे की बूँदे जब गिरती तो कभी तो उसके कपड़े उन्हें छुपा लेते

और कभी वह मुक्त होकर भागने की कोशिश करते तो प्यासी जमीन उन्हें पी जाती ।

जा पहुँचा बस्ती की उस जमीन पर जहाँ उस जैसे सैकड़ों और गरीब रहते थे । लेकिन उनमें और इसमें बहुत अन्तर था ।

उसकी आँखें अपनी भोपड़ी को देख रही थीं... उसकी बेचैन पुतलियाँ अपनी माँ को ढूँढ़ रही थीं । तभी एक आदमी मिला—! “राज बाबू !”

“हाँ !” और वह फिर आगे बढ़ गया । उससे पूछा भी नहीं कि उसने उसे क्यों बुलाया है—? वह तो छटपटा रहा था अपनी भोपड़ी को पाने के लिये ।

एकाएक उसकी निगाह भोपड़ी पर पड़ी और साथ ही वह चीख उठा— “माँ—!” जैसे किसी भयानक जहरीले साँप काट लिया हो ।

दौड़ कर गया लेकिन.....

भोपड़ी तो राख हुई पड़ी थी—! उसके तिनके तो जाने कबसे जल कर राख हो चुके थे । भोपड़ी की मिट्टी तो जमीन की मिट्टी में मिल चुकी थी ।

और—!

उसकी माँ—?

उसकी अंधी माँ भी तो अपने बेटे की राह देखते देखते जा चुकी थी । अगर थक कर चली ही गई तो क्या हुआ—? आखिर कब तक इन्तजार करती बेचारी—? उसके बेटे ने तो सुबह ही आने का वायदा किया था, और माँ ने तो न जाने कितने ही सुबह आँखों ही आँखों में काट कर बिता दिये थे ।

वह भी जल चुकी थी—! अब तो उसकी खोखली हड्डियाँ ही बची थीं जो राज का इन्तजार कर रही थी ।

पागल हो उठा राज ! और जा लिपटा उन्हीं हड्डियों से जिनके ऊपर का मांस और खून जल चुका था, दुनियाँ की आग में, समाज की भट्टी में । जलती हुई जमीन पर पड़ा वह बुरी तरह तड़प रहा था ।

“माँ ! कम से कम आज की सुबह तक तो इन्तजार किया होता—! बोल माँ ! बोलती क्यों नहीं—? क्या तू भी अपने बेटे को दोषी और खूनी समझने लगी है....? नहीं....नहीं माँ ! मैं बेकसूर हूँ—! माँ ! माँ ! मैं बेगुनाह हूँ—! तेरी कसम माँ ! मैंने कोई पाप नहीं किया—! कोई जुर्म नहीं किया ! मुझ पर विश्वास कर माँ ! मैं तेरा ही बेटा हूँ....राज, राजू...हाँ, हाँ राजू माँ ! जिसे तू लाल कहा करती थी...! मुझे माफ कर दे माँ ! मैंने तुझसे झूठा वायदा किया था...सुबह आने के बदले छेः महीने के बाद आ रहा हूँ । लेकिन मैं क्या कर सकता था माँ ! पुलिस ने मुझे आने न दिया...अदालत ने मुझे तुझसे दूर कोठरी में बंद कर दिया...कानून ने भेगे हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी थीं.....सरकार ने माँ और बेटे को दुश्मना के लिये अलग अलग कर दिया माँ ! फिर तू ही बता मैं क्या करता--? मुझे माफ कर दे माँ ! मुझे माफ कर दे । राज जमीन पर सिर पटक रहा था । तमाम कपड़े काली राख से बुरी तरह लथपथ हो चुके थे लेकिन वह पागलों की तरह चिल्लाये जा रहा था—! “अगर मुझसे थोड़ी सी भूल हो गई तो इसका मतलब यह तो नहीं माँ ! कि तू मुझे सदा के लिये अपना बेटा कहने से इनकार कर दे...! माँ का दिल तो इतना कठोर नहीं होता माँ ! कि वह अपने पागल बेटे की दशा देखकर भी शान्त खड़ी रहे ।” वह चिल्ला पड़ा बच्चों की तरह ...! “लेकिन तू बोल भी कैसे सकती है....? तेरी जुबान तो बंद हो चुकी है...तुझे तो इस दुनियाँ से किसी दूसरी ही

जगह छुपा दिया गया है, ताकि तू अपने अभागों बेटे को देख भी न सके।” राज गीली आँखों से आकाश की ओर देख रहा था—“भगवान ! ओ जालिम भगवान ! देख ले आँखें खोल कर देख ले ! फिर न कहना कि इस जुल्म को तूने देखा नहीं । अपने न्याय की वही मैं यह भी लिख ले भगवान ! कि तूने उस इन्सान को कोई भी सजा नहीं दी जिसने एक गरीब की नगरी को उजाड़ कर तेरे मुँह पर थप्पड़ मारा—! और अपने संविधान में यह भी लिख ले कि आज से भगवान अमीरों का है केवल अमीरों का—पूँजीपतियों ने उसे खरीद लिया है....उसे गुलाम बना लिया है...ताकि वह किसी अनाथ का रक्षा न कर सके...! ओ इन्सानों की ओलाद के देवता कहलाने वाले ! इस आवाज को संसार की चारों दिशाओं में फैला दे कि आज से दुनियाँ का भगवान केवल धनवानों का ही है। वह गरीबों को बरबाद करने के लिये नियुक्त किया गया है....उसका नगरी से दूर उठकर अन्धेर छा चुका है। जिसमें हर भूखा और कमजोर इन्सान सूली पर चढ़ा दिया जाता है—! तुझे दया न आई भगवान अपना क्रोध इस अंधी बुढ़िया पर उतारते हुये—? वह तो पहले से ही मरी हुई थी, उसे मार कर तेरे मालिकों ने तुझे क्या इनाम दिया—?” राज पागलों की तरह चिल्लाये जा रहा था। गाँववाले चारों ओर इकट्ठा हो गये थे लेकिन किसी का साहस न था कि वह उस पागल को जली हुई मिट्टी से निकाले —!” माँ ने तेरा क्या बिगाड़ा था भगवान ! जो तूने उस यह सजा दी। वह तो दिनरात तेरी पूजा करती थी ना—? तेरी मूर्ति के सामने बैठी घंटों आँसू बहाया करती थी ना—? क्या तू अपने भक्तों को यही फल देता है—? तुझसे तो ऐसी आशा न थी भगवान ! कि तू भी इन्सानों की तरह चोर और रिस्वतखोर निकलेगा—? शायद

तुम्हें उस ठेकेदार ने काफी रुपया दिया होगा और फिर जब तू माँ से कुछ माँगने आया होगा तो उसने तेरे खाली दामन को आँसुओं से भरा होगा—! तभी तो तू उसके साथ जा मिला। और ठीक ही तो था रुपयों से खेलने वाला आँसुओं की कीमत को क्या जान सकता है? तू तो मन्दिरों में सोने और चाँदी के मूले में मूलना जानता है, अमीरों के बंगलों की नीव में दबना नहीं। फिर भला तू कैसे भोंपड़ी में रहनेवालों की दशा को जान सकता है...? अगर भगवान! तेरा नाम लेने से यही नतीजा निकलता है तो मैं आज ही दुनिया से चीख चीख कर कहूँगा कि ऐसे भगवान की मूर्ति को तोड़ कर चूर चूर कर दो... उसे मन्दिर के मूले में से निकाल कर बाजार के कीचर में फेंक दो... अब भगवान हमारा नहीं है... वह गरीबों का नहीं है... रंगते कीड़ों का नहीं है बल्कि अब वह सरेबाजार बिक चुका है... गुलाम हो चुका है... अमीरों का, पूँजीपतियों का समाज के ठेकेदारों का और...!” राज में दोनों हाथों में माँ की हड्डियों को लेते हुए कहा...! “माँ! मैं तेरी हड्डियों की कसम खा कर कहता हूँ कि बेटा तेरा बदला जरूर लेगा... भगवान नहीं रहा दुनियाँ में तो न सही, इन्सान तो अभी इस दुनियाँ में जिन्दा है। और जब तक इन्सान इस दुनियाँ में जिन्दा रहेगा तब तक इन्सानियत इस जहाँन में साँस लेती रहेगी..... इन्साफ जिन्दा रहेगा; और भगवान को उसके कदमों पर गिरना पड़ेगा... उसके पैरों को चूमना पड़ेगा...! इन पूँजीपतियों ने तो केवल एक गरीब का ही घर जलाया है, लेकिन एक गरीब तमाम पूँजी-पतियों का नाश कर देगा। उनका तख्ता उलट कर उन्हें पाताल में पहुँचा देगा... उनकी तिजोड़ियों में रखे कागज के नोटों को आग लगा कर इसी तरह हवा में उड़ा देगा जिस तरह किसी

गरीब की भोपड़ी के तिनके जलने के बाद हवा में उड़े हैं। अगर माँ नहीं तो क्या हुआ, उसका बेटा तो है जो इस समाज का नक्सा उलट देगा... इसकी काया पलट देगा। भगवान जो अमीरों के हाथों कैद है, उसकी हथकड़ियों को चूर चूर कर उसे आजाद करा देगा। और फिर हमारा भगवान हमारा होगा गरीबों का, भूखों का, नंगों का। अब और ज्यादा दिन तुम्हें इन्तजार नहीं करना पड़ेगा माँ! केवल थोड़े ही दिनों के बाद देखना तो सही! एक इन्कलाब होगा, भयानक इन्कलाब! क्रान्ति होगी ऐसी क्रान्ति कि जिसमें पूँजीवाद ही लुप्त हो जायेगा... पूँजीपतियों का नाश हो जायेगा... समाज के ठेकेदारों का अन्त हो जायेगा..."

राज राख से लथपथ उठा। उसके हाथों में माँ की हड्डियाँ थीं आँखों में जुदाई के आँसू थे....। गाँववाले चुपचाप खड़े थे, लेकिन उस खामोशी में से भी एक आह सी उठ रही थी। एक सिसक, पोड़ा, और दर्द सी उभर रही थी जो सबकी आँखों में आँसू बन कर चमक रही थी।

राज ने एक बार चारों ओर खड़े लोगो की ओर देखा और फिर एकाएक चिल्ला उठा—! "तुम लोग रा रहे हो? अरे! अब तो हंसने का जमाना आ गया है....! हंसो, जोर जोर से हंसो... खिलखिलाकर हंसो दोस्तो! अब तो इन्कलाब आनेवाला है ऐसा इन्कलाब... ऐसा इन्कलाब कि हम आजाद हो जायेंगे, हमेशा के लिये आजाद हो जायेंगे इन पूँजीपतियों का खात्मा हो जायेगा और.... और हमारा भगवान! हमारा भगवान भी आजाद हो जायेगा... स्वतन्त्र हो जायेगा... फिर वह हम लोगो की रक्षा करेगा... हंसो... जोर जोर से हंसो.... हाहा.... हाहा.... हा... हा.... इन्कलाब होगा... दुनियाँ बदलेगी... दुनियाँ का नक्शा बदलेगा..

इन्सानकी इन्सानियत भी बदल जायेगी...हंसो दोस्तो ! हंसो....
इन्कलाब होगा...इन्कलाब होगा....और.....

और राज अपनी माँ की हड्डियों को छाती से लगाये एक
ओर को दौड़ पड़ा। सब खड़े देखते रहे वह भागता ही गया।
लेकिन उसकी आवाज अभी भी उन लोगों को सुनाई दे रही
थी कि इन्कलाब होगा...एक भयानक इन्लाब...और फिर हमारा
भगवान हमारा होगा...केवल हमारा.....!!!



“बाबूजी”

“हूँ—!”

“एक पैसा मिल जाये बाबूजी !”

“एक पैसा—” राज ने आश्चर्य से कहा—! “कैसा पैसा—?”

“.....!”

“तुमने मुझे कभी दिया है, कि आज माँग रहे हो—?”

“भीख माँग रहा हूँ !”

“भीख—? ओह !” राज को जैसे याद आ गया हो—!

“मैं कुछ और ही समझ रहा था भिखारी। अच्छा यह बताओ
कि दिन भर में कितनी भीख मिल जाती होगी तुम्हें—?”

“पेट भरने के लिये किसी तरह मिल ही जाती है बाबू जी ! सुबह से अब तक एक रुपये के पैसे आये हैं । और यह देखिये कुछ खाने की चीजें भी मिल गई हैं ।”

“पेट तो अच्छी तरह भर जाता है ना...? तुम ही अच्छे हो । खैर !”

राज आगे बढ़ गया भिखारी का मुँह खुला ही रह गया—
“बाबू.....!”

लेकिन राज यह कहता हुआ आगे बढ़ गया— “पेट तो भर जाता है ना....?.....पेट तो भर जाता है ना.....”

भिखारी को कुछ समय में नहीं आ रहा था कि कैसा पागल था कि सब कुछ पूछने के बाद धीरे से चला गया । वह पुनः अपने काम में लग गया । राज बहुत आगे जा चुका था । एक के बाद दूसरा मकान जो सड़क के दोनों किनारों पर अपनी छतियाँ फैलाये खड़े थे पीछे भागे चले जा रहे थे । राज के मस्तिष्क में भिखारी के शब्द अब तक गूँज रहे थे । वह सोच रहा था कि, “इससे अच्छा और क्या हो सकता है, कि कम से कम साँस तो आराम से ली जा सकती है । कम से कम इस संसार का बोझ तो हलका किया जा सकता है । उन पढ़े लिखे से तो यह भिखारी ही अच्छे हैं जो शाम तक मेहनत करने के बाद चार रोटियाँ तो पेट में डाल लेते हैं जिनके मुँह से निकली माँग तो पूरी हो जाती है ।”

उसके दिल में एक तूफान सा उठ रहा था जो उसे अपनी उस जिन्दगी से निकाल कर दूसरी जिन्दगी की ओर बहा ले जाना चाहता था । वह उस तूफान के उबाल में उबलता चला जा रहा था । उसमें गोते खाते खाते घबड़ा गया था । वह खुद ही अपने इन दिनों को लात मार कर आने वाले दिनों का नकशा

बनाना चाहता था। वह चाहता था कि इन भड़कीले कपड़ों को उतार कर उन फटे हुये कपड़ों को पहने जिनमें असलियत भाँकती हो.....सच्चाई आँसू बहाती हो....जिसके हर छेद से देश की गरीबी और भुखमरी की असली तस्वीर दिखलाई देती हो। वह उस दिशा की ओर जाना चाहता था जिसे देख कर लोग घबड़ाते हैं, जिसका केवल नाम सुन कर दुनियाँ डर से चीख उठती है और भगवान के आगे नाक रगड़ रगड़ कर कहती है कि उसे उस दिशा का रास्ता न दिखाना लेकिन वह खुद उस दिशा की ओर जाना चाहता था क्योंकि वह भूख से मरना नहीं चाहता था बल्कि अपनी जिन्दगी को बढ़ाकर जिन्दा रहना चाहता था। उसके साथ किये गये जुल्मों का वह बदला लेना चाहता था। वगावत का तूफान बढ़ता ही जा रहा था उस तूफान की लहरों में वह बेसुध बहा जा रहा था।

और अन्त में जा लगा किनारे से। उस किनारे से जहाँ वह पहुँच कर मौत से अपने आप को बचा ले ! सड़क के एक किनारे आ खड़ा हुआ। राह चलते लोग आते और उसपर एक सरसरी नजर डालते हुये आगे चले जाते। वह उन राहगीरों से आँख मिलाने की कोशिश करता पर वे मुँह दूसरी ओर घुमा लेते। एक बार उसने अपने चारों ओर देखा दूर से एक सेठ जी आते हुये दिखाई दिये। ज़णभर के लिये उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी। उसे आशा हुई कि दिन भर की भूख एक ही असामी से मिट जायेगी। उसका हाथ बढ़ गया आगे। खाली हथेली आकाश को देख रही थी और राज की आँख कभी उस हथेली को और कभी आने वाले सेठ को। उसने पक्का इरादा कर लिया था कि वह भी उस भिखारी को तरह सेठजी को पास आते ही भरे हुए गले से कहेगा “सेठ जी कुछ मिल जाये, दो रोज से

भूखा हूँ। भगवान आपको पैसा देगा।” उसे आशा क्या पूर्ण विश्वास था कि वह अच्छी तरह भिखारी की ऐक्टिंग कर सकता है। और यह भावना उठते ही उसका अंग अंग फूल उठा। सेठ साहब नजदीक आते जा रहे थे और राज की आशा दृढ़ होती जा रही थी।

सेठ जी बिल्कुल पास आ गये....

राज तैयार हो गया ऐक्टिंग करने के लिये।

पर.....!

सेठ के सामने आते ही राज का फैला हाथ बंद हो गया।

जुबान सिल गई।

भरा गला सूख गया।

और वह कुछ न कह सका। ऐक्टिंग करके माँग न सका।

उसने हाथ पीछे खींच लिया उसकी आत्मा चीख उठी....!

“वुजदिल। भीख मांगता है....? शर्म नहीं आती तुम्हें अपने लाखों भाइयों की हत्या करते हुये। जिन सेठों के हाथों तुम जेल गये....जिन्होंने तुम्हारी भोपड़ी को आग लगा कर तुम्हारी अन्धी माँ को जिन्दा जला दिया, उन्हीं के सामने हाथ फैलाते हो ? भीख मांगता है पगले ? याद कर अपनी उस प्रतिज्ञा को जो तूने अपनी माँ की हड्डियों को पकड़ कर की थी कि इस पूंजीपतियों का नाश करके ही रहूंगा।—”

तड़प उठा राज ! दोनो हाथों से कानो को बंद कर लिया उसके अन्तर की वह दबी हुई चिनगारी अब फिर भड़क रही थी जो जख्मी शेर की तरह मरते दम तक चिंवारती रहती है !—

“—इस भीख से तो भूखों मर जाता राज तो अच्छा था। क्या तू चाहता है कि गरीबों की कमजोरी को यह दौलतमंद लोग देख लें और पहले से भी अधिक दया दिखायें....! काश भीख माँगने

बाला तेरा हाथ फैलने से पहले ही कटकर धरती पर गिर गया होता—! काश तू इस फुटपाथ के किनारे खड़े होने के बदले आंदोलन के मंच पर खड़ा होता ! काश तेरा भीख के लिये उठा हाथ बगावत के लिये उठा होता....!”

“हाँ....!” और चीख उठा राज ! “अब यह हाथ कभी भीख के लिये नहीं उठेंगे...! आज फिर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि फुटपाथ के किनारे खड़ा होने के बदले आंदोलन के मंच पर खड़ा होऊँगा। बगावत का झंडा उठाकर फाँसी के तख्ते पर चढ़ूँगा और मौत का फंदा गले में पड़ते ही मैं चीख उठूँगा कि इस आजादी से अच्छी तो गुलामी की वे जंजीरे ही थीं जब की खूनी लहरों को सहता हुआ देश का प्रत्येक नागरिक भारत की लाज के लिये सीना खोले खड़ा तो रहता था—माँ मुझे माफ करदे, मैंने तेरे ही दुश्मन के आगे हाथ फैलाया...मुझे विश्वास है माँ ! कि माँ की मागता बेटे की बड़ी से बड़ी गलती को हँसते हुये माफ कर देती हैं।”

राज ने धीरे से एक लम्बी सांस ली जैसे उसे माफ कर दिया गया हो। न्याय की अदालत से जैसे उसे बाइजत छोड़ दिया गया हो। लेकिन अब एक और प्रश्न उसके सामने खड़ा था जो उसकी उस दूसरी प्रतिज्ञा को भी तोड़ने के लिये लंगोट कस रहा था, और वह था आंदोलन का मंच ! वह मंच बनेगा कैसे ? किन सीढ़ियों के सहारे वह उस मंच तक पहुँचेगा ? उसके लिये तो एक समुदाय होना चाहिये...एक दल होना चाहिये ।

लेकिन दल और समुदाय भी तो व्यक्तियों से ही बनता है। एक एक व्यक्ति ही तो मिलकर किसी दल के निर्माता होते हैं तो क्या अगर एक एक बूँद से एक तालाब हो सकता है तो एक आदमी से एक पार्टी नहीं हो सकती। मगर—पेट ! पेट को

किस समुदाय में रखे ? उसे किस जेलखाने में बंद करके जीवन भर मंच पर खड़ा चीखता रहे। पेट की भूख को किस दवाई की गोली खिलादे कि वह हमेशा के लिये मर जाये। नौकरी कर नहीं सकता...भीख माँग नहीं सकता...रोजगार के तराजू पर रुपये चाहिये। तो फिर...फिर...

फिर के आगे वह कुछ न सोच सका कि फिर क्या करें ?

तभी उसके सामने एक रिक्सा आकर रुका

उसपर बैठे गोरे रंग के दो अजनबी नीचे उतरे। रंग रूप से दोनों व्यक्ति ही मालूम पड़ते थे। पैंट और कोट के परदे में अपने शरीर को छुपाये मुँह से सिगरेट का धूँआँ निकाल रहे थे। पर फिर भी उन दोनों के बातों में विभिन्नतायें थीं जिनसे नासमझदार व्यक्ति भी उनके स्त्री और पुरुष के भेद को मालूम कर सकता था। दोनों विदेशी थे...अंगरेज थे जिनसे हमारे देश ने आजादी की भीख माँगी थी...जिन के सामने नाक रगड़ कर भगवान की तरह पूजा की थी। जिन्होंने देश पर अपनी शक्ति के बल शासन जमाया था और अपनी मेहनत के बदले देश की सोने की जमीन को मिट्टी की जमीन भी न रहने दिया था। और जाते हुये कह गये कि उन्होंने भारतीयों को आजादी देकर उतना बड़ा अहसान किया है जितना एक स्वामी अपने दास पर भी नहीं कर सकता। शायद वे ठीक कहते हों। किन्तु हमारे देश के नेताओं ने तो उस आजादी को फिर गुलामी की जंजीरों में कस दिया। और इतनी तेज कसा कि शरीर पर उस जंजीर की हर कड़ी का दाग उमड़ आया।

राज की एकाएक दृष्टि दो रुपये के उस नोट पर जा पड़ी जो उस अंगरेज ने रिक्से वाले को दिये थे। उसे एक बार फिर अपनी जिन्दगी याद आई। सवारी के जाने के बाद राज धीरे

से रिक्से वाले के पास आया। रिक्से वाले ने सोचा कोई सवारी आई है। जल्दी से धोती की गाँठ बाँध पूछा—! “कहाँ जाना है—?”

“कहाँ जाना है—?” राज ने धीरे से दोहराया। वह तो कुछ और ही काम के लिये उसके पास आया था। लेकिन पास आते ही उसकी आशाओं पर पानी फिरने लगा क्या कहता कि कहाँ जाना है। कोई निशान भी तो नहीं, जहाँ वह जा सके।

“कहीं चलना हो तो कहिये, नहीं तो मैं अपना रास्ता देखू।” रिक्से वाले ने कुछ रुखाई से कहा।

“हाँ हाँ मुझे जाना है!”

“वही तो मैं पूछ रहा हूँ, कहाँ—?”

“जहाँ तुम जा रहे हो.....मैं भी वहीं जाना चाहता हूँ मेरे दोस्त!”

“मैं तो सवारी की खोज कर रहा हूँ। भई तुम्हारी तो एक भी बात मेरे समझ में नहीं आई की तुम चाहते क्या हो—?”

“मैं जो चाहता हूँ क्या उसे तुम पूरा कर सकोगे—? दोस्त! तुम्हारी तरह मैं भी गरीब हूँ। लेकिन दुनियाँ वालों ने मेरी उस गरीबी को भी जला कर राख कर दिया। मेरी अंधी माँ को जिन्दगी भर के लिए मुझसे छिन लिया। मेरा सब कुछ लुट गया” कहते कहते राज की आँखें भर आईं! “बी. ए. पास किया नौकरी के लिये नहीं, सड़कों के किनारे खड़े हो कर भीख माँगने के लिये और.....

“भीख—!” भीख का नाम सुनते ही रिक्सा वाला चौंक गया—! “भगवान के लिये भीख कभी न माँगना भइया! भीख माँगना सब से बड़ा पाप होता है। अगर व्यक्ति जीवित रहना चाहता है तो उसे अपने हाथों से काम करना चाहिये। अगर

उसके पाँव चलने से जवाब दे चुके हैं, अगर उसके हाथ उसका साथ नहीं देते तो वह घर के किसी कोने में पड़ा रहे.....भूख लगे तो वह तड़प उठे पर दूसरे के आगे कभी हाथ न फैलाये... भूख से अगर उसकी आत्मा उससे बेवफाई करके किसी दूसरे रूप में समा जाती है तो समा जाये लेकिन भीख न माँगे। भगवान ने इन्सान के दोनों हाथ काम करने के लिये बनाये हैं, उन हाथों को दूसरे के सामने भीख माँगने के लिये नहीं। हमें देखो दोस्त ! जो भरे हुये मकानों को छोड़ कर आगये। अपने छोटे छोटे बच्चों को अपने आँखों के सामने जिन्दा आग में जलते हुये देखा। अपने स्त्री और बहनों की बेइज्जती अपने सामने होते देखी—! आजादी भारत को मिली, मगर बलि हमारी हुई। तीन कपड़ों के इलावा और कुछ भी न ला सके मेरे दोस्त ! और लाखों का काफला अपने सजे हुये महलों को छोड़ कर चल दिया। पाकिस्तान की सीमा को पार कर भारत की सीमा में पाँव रखा। भारत वालों की दशा को देखा और अपनी दशाओं को दिखाया। कांग्रेस के नेतृओं के सामने अपने दर्द की गठुरी को खोला। कुछ ने आंसू बहाये और कुछ घृणा की दृष्टि से देखते हुये चले गये। अपने नये देश में जब हम आयें तो हमें शरणार्थी की पदवी दी गई। अगर हमने सड़क के किनारे अपनी लकड़ी की दुकानों को बसाना चाहा तो हमें पुलिस की लाठियों ने मार मार कर भगा दिया। अगर हमने पटरियों के सहारे पेट भरना चाहा तो हमारी चिजों को सड़क के इवाले कर दिया गया। अगर हमने शहीद नेताओं के बुतों के सामने अपने आँसू बहाने चाहे तो हम पर बगावत का इल्जाम लगा कर हमें जेल की धमकी दी गई। यह सब कुछ हुआ दोस्त ! पर तुमने किसी पंजाबी बच्चे को भीख माँगते न देखा होगा—! उन्हें इस तरह

की शिक्षा नहीं दी गई की वे मुसीबत के समय किसी का सहारा लें। उन्होंने अपने हसीन पंजाब को अपने ही हाथों सजाया था....अपनी ही मेहनत की कमाई से उसमें सोने और चाँदी के फूल भरे थे। उन्हें पैदा होते ही कसम दिलवा दी जाती है कि चाहे मर जायें लेकिन किसी से भीख न माँगे। दोस्त ! क्या तुमने आज तक किसी पंजाबी को भीख माँगते देखा है—? क्या तुमने उनके किसी बच्चे को किसी के आगे हाथ पसारते देखा है—?

“.....” राज चुप था। उसे अपने पर अफसोस आ रहा था कि क्यों वह भीख माँगने के लिये आगे बढ़ा। मन ही मन में अपने आप को कोस रहा था कि क्यों उसने इतना नीच काम किया—?

“क्या सोच रहे हो दोस्त ! क्या मैं मूठ बोल रहा हूँ या अपने ही मुँह से मियाँ मिट्टी बन रहा हूँ—?”

“नहीं ! यह बात नहीं। मैं अपने आपको गालियाँ दे रहा हूँ कि मैंने भूख से तंग आकर भीख के लिये हाथ.....पसा..... पा—! लेकिन मैंने कुछ माँगा नहीं.....मैं सच कह रहा हूँ मेरे दोस्त ! मैंने उस सेठ से यह भी नहीं कहा कि मुझे कुछ दे दो। भगवान की कसम खा कर कहता हूँ मेरे दोस्त ! उसके पास आते ही मेरा हाथ हट गया। और मैं भागा तुम्हारे पास आया। अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ—? मेरे हाथ हैं, पाँव हैं, दिल है, दिमाग है, आँखें हैं, कान हैं, लेकिन फिर भी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ—?”

“काम करो, मेहनत करो। मैं सच कहता हूँ दोस्त ! जरा मसीने की कमाई की रोटियों को तो खाकर देखो कितना मजा आता है। मैं दिनभर रिकसा चलाने के बाद रात को जब घर

जाता हूँ तो अंधेरे कमरे को दिये की रोशनी से चमकाता हूँ, अंगीठी में कोयले जला कर अपने हाथ से रोटियाँ बनाता हूँ और जब उन रोटियों को अचार के साथ खाता हूँ तो मुझे मालूम होता जैसे मैं दुनियाँ की सबसे बड़ी चीज खा रहा हूँ ।”

“ तो क्या तुम अकेले हो—? ”

“ हाँ बिल्कुल अकेला ! ”

“ तो क्या अपने पास मुझे भी थोड़ी सी जगह दे दोगे ? ”

“ थोड़ी क्या पूरी जगह ले लेना ।

“ और.....

” और क्या—? ”

“ और अपना काम भी मुझे सिखा दोगे—? ”

“ क्यों नहीं ! अगर हजार आदमी मुझसे यह काम सीखने के लिये कहें तो मैं सिखा दूँ । दोस्त ! हम गरीब हैं लेकिन हमारा दिल गरीब नहीं होता । अगर भवान ने पैसा दिया होता तो आज अपने भाइयों को जो दर दर की ठोकरें खा रहे हैं कोई न कोई काम करा देता—! खैर ! आओ तुमको अपना मकान दिखा दूँ । ”

“ चलो ”

“ रिक्से पर बैठ जाओ । ”

“ अब तो रिक्से पर बैठाऊँगा बैठूँगा नहीं ।

दोनों पैदल चलने लगे । काफी दूर जाने पर रिक्से वाले ने ने रिक्सा रोका और राज को ले गया गली में । गली का चौथा मकान ही उसका था । नीचे की एक छोटी सी कोठरी किराये पर मिली थी उसे । जब सारे शहर में कोई खाली जगह न मिली तो इसी कोठरी में आकर उसने अपने आपको बचाया और अब उसका एक और साथी भी आ गया था ।

रिक्से वाले के बाँह पर खुदे अक्षरों से राज को मालूम हो गया था कि उसका नाम धन्नूमल है और उसे भी राज ने अपना नाम बता दिया था। राज को वहीं ठहरा धन्नू बाजार गया, मेहमान की कुछ खातिरदारी की और फिर अपने काम पर चला गया। राज कमरे में बैठा अपने बारे में सोचता रहा।

और जब रात को धन्नू आया तो राज के लिये भी खाना बना दोनों ने हँसते हुए खाया और हर इन्सान की तरह सो गये।

और दूसरे दिन से——!

×

×

×

राज रिक्सा सीखने लगा। धन्नू अपने ही रिक्से पर बैठा कर उसे मैदान में ले जाता। वहाँ वह खुद रिक्से पर बैठकर राज से चलवाता। हर मोड़ पर घूमने और घूम कर रुकने का अभ्यास कराता।

और अन्त में राज ने प्रत्येक कठिनाइयों को पार करने के बाद रिक्सा चलाना सीख लिया। धन्नू ने उसे केराये पर एक रिक्सा भी दिलवा दिया। अब राज भी उस कमरे के किराये में हिस्सा बटाने लग गया था। खाना उसी तरह बनता था पर अब राज भी उसका सूखा सामान ले आता था। और अब राज, राज न था बल्कि रिक्सा चलाने वाला राजू था। बी. ए. पास इन्सान न था बल्कि अनपढ़ और गँवार व्यक्ति था।

यह भी अन्याय का एक दृश्य था जो दुनिया के स्टेज पर खेला जा रहा था।

एक महीना हो गया उसे रिक्सा चलाते। महीने के अन्त में

उसने हिसाब लगाया तो उसे मालूम हुआ कि एक सौ पचास रुपये कमाये हैं। और तब उसने ठंडी सांस लेकर दिल को समझाया कि कम से कम नौकरी में भी तो इतना ही मिलता। अब उसकी दशा भी कुछ सुधरने लगी। अन्य रिक्सेवालों की तरह वह गंदे कपड़े न पहनता था, फटे हुए रहने के बाद भी वे साफ रहते थे। एक बार वह चला जा रहा था कि एक मकान की सीढ़ियों से आवाज आई—! “ओ रिक्से वाले!”

राज ने रिक्सा रोक दिया। सवारी शायद किसी गर्ल्स कालेज में पढ़ती थी क्योंकि हाथ में पकड़ी किताबें उसकी पढ़ाई का सबूत दे रही थी। “बसंत कालेज चलोगे! कितने पैसे?”

“जो दे दीजियेगा, वैसे होते तो चार आने हैं।”

लड़की बैठ गई और राज उसे जानवरों की तरह खींचने लगा। थोड़ी चढ़ाई पार कर ढाल पर आया तो रिक्सा हवा की तरह भागने लगा। उसकी सवारी की धोती हवा की लपेटों में आ रही थी और वह हाथ से दबाए हुये थी। एकाएक सामने एक गढ़ा आया और रिक्से का एक पहिया उस पर पड़ा तो रिक्सा इतनी जोर से उछला कि लड़की अपने को संभालने में अपनी किताबों से हाथ धा बैठी। उसकी कई किताबें उछल कर जा गिरी सड़क पर जैस वे उस लड़की का प्रतिनिधित्व कर रही हों।

राज ने ब्रेक लगा कर रिक्सा रोका।

लड़की क्रोध से लाल पीली हो रही थी।

कई लोग जमा हो गये थे, जो कि सवारी का ही पक्ष लेकर कह रहे थे—! “बदमाश कहीं का इतनी तेज रिक्सा चलाता है—!” दूसरा कह रहा था—! “रेसबाजी करता है जनानी सवारियों को बैठा कर।” तभी कोई विद्यार्थी भी धीरे से बोल उठा—! “बुढ़ौती में भी जोश चढ़ता है।” इन सब बातों को

सुनने के बाद जब राज बिखरी किताबों को उठा कर सवारी के पास आया तो क्रोध में भरी सवारी भी बोल उठी.....! “अन्धे हो देखके नहीं चलाते।”

आंखें होते हुए भी अंधे की कुर्सी दी गई उसे। और उसने उस पर बैठते हुए धीरे से कहा! आई ऐम वेरी सौरी मिस!
(I am Very sorry miss)

सवारी सन्न हो गई एक रिक्से वाले के मुँह से यह बातें सुनकर। अब मन ही मन में बहुत पछता रही थी कि क्यों उसने बेकार में उसे अंधा बनाया। रिक्सा जा रुका था कालेज के फाटक पर और वह सोच में बैठी हुई थी। राज ने उसे भावनाओं से जगाते हुये कहा! “आपका कालेज आ गया है मिस!”

“ओह!” वह चौंक गई। पर्स से चार आने निकाल कर उसके हाथ पर रखे और एक बार उसकी ओर देखते हुए कहा.....! “शाम को चार बजे आ जाना!”

“.....!”

“बोलो आओगे ना....?”

“अगर रिक्सा खाली रहा तो!” राज ने लापरवाही से कहा। सवारी चल दी। राज के होठों से धीरे से निकल पड़ा “बिमला।” किताब उठाते हुये राज ने उसका नाम पढ़ लिया था और उसे यह भी मालूम हो गया था कि वह साइंस पढ़ रही है।

शाम चार बजे बिमला आ खड़ी हुई कालेज के गेट पर। लड़के लड़कियाँ जा रहे थे पर वह रिक्से की राह देख रही थी। जब आध घंटे तक रिक्सा वाला न आया तो वह खिजला कर पैदल ही चल दी। थोड़ी दूर पर एक चौराहा था। उस की दृष्टि एकाएक जा पड़ी रिक्से पर जिसका चलाने वाला एक चाय की दुकान में बैठा चाय पी रहा था। वह जा बैठी रिक्से

पर और चाय पीकर राज फिर चलाने लगा उसे ।

“चार बजे आये क्यों नहीं जी !”

“एक बीमार को अस्पताल में पहुँचाना था उसी की नौकरी करने लगा था ।”

“पहला सौदा तो मैंने किया था ।”

“आपके पास पैसा है, आप चाहे जब जैसा और जिससे चाहें सौदा कर सकती हैं, लेकिन वह गरीब था । उसके पास सौदा करने के लिये पैसे नहीं थे, तो मैंने उसका साथ दिया ।”

“कितना दिया उस सवारी ने, जरा मैं भी तो सुनूँ !”

“आप न सुनिये तो अच्छा है ।”

“क्यों आठ आने से भी ज्यादा दिया है ।

“नहीं आठ पैसे से भी कम ।” राज ने धीरे कहा ।

“अजीब हो तुम भी कि आठ आने को सवारी को छोड़ कर आठ पैसे से भी कम की सवारी को पकड़ते हो !”

“अन्धा जो ठहरा !” राज ने पुरानी चोट दिखाई ।

और उस चोट को देखते ही बिमला चुप हो गई ।

“लीजिये आपका घर आ गया है ।” राज ने रेक्सा रोका ।

बिमला ने उतरते हुये कहा : “कल सुबह दस बजे आ जाना ।”

“अगर कोई सवारी न मिली तो—!”

और राज फिर खाला रिक्से को सवारी की खोज में लेकर इधर उधर घूमने लगा ।





“फिर आ गये सुबह सुबह लड़ने के लिये !”

“यह तुम्हें कैसे मालूम !”

“तुम्हारी सुरत ही देख कर मालूम हो जाता है कि तुम आज भी बातों के नशे में हो ।

“कभी कभी तुम भी क्या सोच बैठती हो शैल ! आज तो मैं तुमसे कुछ पूछने आया हूँ ।”

“अभी और कुछ पूछना है क्या....? अच्छा पूछो क्या पूछ रहे हो ।”

“मैं तो यही पूछने आया था कि सेवापुरी चल रही हो....?”

“क्यों वहाँ क्या करने....?”

“अरे वाहरे शैल ! तुम भी कैसी पार्टी की कार्यकर्ता हो जब कि तुम्हें उसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं । क्या तुम नहीं जानती कि वहाँ बिनोबा जी भूमिदान यज्ञ करा रहे हैं ।”

“और तुम तो बहुत अच्छे कार्यकर्ता हो भइया !” शैल खिलखिला कर हंस पड़ी....! “अरे वह यज्ञ तो जाने कब का खत्म हो चुका है ।”

“खत्म भी हो गया....?”

“हाँ भइया ! उसे तो समाप्त हुये लगभग चार महीने हो रहे हैं ।”

“ओह !” राजन कुछ शर्मा गया ।

मगर उसकी शर्म पर हाकर ने परदा डाल दिया ।

वह चिल्ला रहा था—“यह देखिये आज का ताजा समाचार !.....नेताओं के विरुद्ध गर्भपात कराने का अभियोग..... यह देखिये हाथ-पैर में रस्सी बांधकर पगली बनाने का रहस्य ।”

राजन दौड़ता हुआ नीचे गया और एक आने में “बनारस” खरीदा । अखबार के पहले पृष्ठ पर बड़े बड़े अक्षरों में छपा था—“विद्यापीठ में युवती ? रोमांचक खबर ! नेताओं के विरुद्ध गर्भपात कराने का अभियोग । हाथ पैर में रस्सी बांधकर पगली बताने का रहस्य ?”

राजन फिर दौड़ता हुआ कमरे में आया । शैल बैठी कोई उपन्यास पढ़ रही थी !

“उपन्यास को छोड़ो शैल ! जरा अखबार को भी पढ़ो !”

“क्या कोई खास खबर है...?”

“हाँ तुम्हारे नेताओं की वह दुनियाँ...खहरधारियों की वह सेवायें जो सेवापुरी में की गई थीं । आँखें खोल कर पढ़ो !”

“मैं नहीं पढ़ती, तुम ही पढ़ो !”

“हाँ अब तुम क्यों पढ़ोगी....? तुम लोगों का भंडा जो फूट रहा है । खैर ! मैं ही पढ़ता हूँ, जरा ध्यान से सुनना ।”

“..... ?”

शैल चुप रही और राजन् ने पढ़ना शुरू किया—

“बनारस शुक्रवार । गत बुधवार को विद्यापीठ के मैदान में विनोवाजीसे साक्षात्कार करने की इच्छा व्यक्त करते हुये रस्सियों से जकड़ी हुई जो युवती दिखाई दी थी और जिसे सेवापुरी के कार्यकर्त्ताओं ने “पगली” कहते हुये रस्सियों से बलपूर्वक हटा दिया था, उसके संबन्ध में अत्यधिक सनसनी पूर्ण बातों का पता लगा है ।

हमारे प्रतिनिधि का समाचार है कि युवती ने विद्यापीठ में कुछ समाजसेवियों के समक्ष अत्यंत संयत किन्तु कातर भावसे सेवापुरी के एक कथित अधिकारी तथा उत्तरप्रदेशमें विनोवाजीके भूमिदान यज्ञमें प्रमुख भाग लेनेवाले व्यक्ति और एक प्रसिद्ध गांधीवादी नेता एवं बनारस के एक डाक्टर का नाम लेते हुये कहा कि “इन लोगों ने मेरा गर्भ गिराकर मेरे पाँच मास के बच्चे की हत्या की है।” इसके बाद उसने अपनी पूरी एक कहानी सुनाई—!

बनारस के विशेष प्रतिनिधि का “समाचार है कि” उपयुक्त युवती आजमगढ़ निवासिनी है। उसकी शादी जिस व्यक्ति से हुई वह अयोग्य निकला और उसका भरण-पोषण न कर सका। युवती की बहन अपने पति के साथ सेवापुरी रहती है। कुछ लोगों की राय से युवती सेवापुरी भेज दी गई। युवती के कथनानुसार सेवापुरी में उसके साथ व्यभिचार किया गया। जब गर्भ के पाँच मास हो गये तो सेवापुरी के उपर्युक्त कथित अधिकारी तथा गांधीवाद और एक अन्य व्यक्ति उसे बनारस शहर के चेतगंज हल्के के एक डाक्टर के पास ले गये और आपरेशन कराकर युवती का गर्भ गिरवा दिया। इसके बाद युवती अपने पति के पास भेजी गई। पति इसका खर्चा नहीं चला सकता था। इसी बीच उसे गर्भपात का भी पता लग गया था। उसने युवती को उसके भाई के पास कानपुर भेज दिया। गर्भपात की दुखद घटना के फल स्वरूप युवती हिस्टीरिया की शिकार हो गई। यहाँ से उसके भाई ने उसे आजमगढ़ पहुँचाने का निश्चय किया।

युवती पढ़ी लिखी है। उसे यह मालूम था कि इस समय वे

लोग जिन्होंने कथित अत्याचार किया था, बनारस में हैं। उसने अपने भाई से बनारस होकर आजमगढ़ चलने को आग्रह किया।

उपर्युक्त युवती जिस समय ट्रेन में सवार होकर बनारस कैंट स्टेशन पर पहुँची वहाँ उसे वही सेवापुरी के कथित अधिकारी तथा गांधीवाद नेता दिखाई दिये वह ढब्बे से बाहर निकल आई और उसने दौड़कर कथित गांधीवाद नेता का पैर पकड़ लिया और कहा कि आपने मेरा गर्भपात गिराया है। मेरे पति ने मुझे निकाल दिया अब मैं कहा जाऊँ। यह सुनकर भीड़ एकत्र हो गई। सेवापुरी के कथित अधिकारी ने कथित गांधीवाद नेता को छुड़ाकर विद्यापीठ भेज दिया और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे कि यह पागल है। कुछ लोगों ने उसका हाथ पैर बाँधने की कोशिश की और कहा कि हम इसे अस्पताल ले जायेंगे। युवती ने हाथ पैर न बाँधने देने के लिये हाथ पैर बाँधने वालों को दाँत काटा और मारा। इससे उन लोगों ने पगली कहते हुये जबरदस्ती हाथ पैर बाँध दिये। उसे और उसके भाई को अस्पताल ले गये। अस्पताल में डाक्टरों से कहकर उसे एक दवा पिलाई गई। इसके बाद उसके भाई को उसे घर पहुँचाने के लिये कहा गया। युवती का भाई उसे लेकर रिक्शेपर स्टेशन की ओर रवाना हुआ। जब युवती स्टेशन के चुंगी के चौकी के पास त्रिमुहानी पर पहुँची तो उसने रिक्शेवाले को विद्यापीठ की ओर ले चलने के लिये मजबूर करने को दाँत काट लिया। रिक्शेवाला डर कर उसे विद्यापीठ ले गया। विद्यापीठ के फाटक पर उसका हाथ पैर बँधा देखकर एक युवक खड़ा हो गया और उसने रिक्शेवाले से पूछा यह कौन है। रिक्शेवाले ने कहा कि इसने यहाँ पर पहुँचाने के लिये मुझे मजबूर किया और दाँत काट लिया।

युवती ने उपर्युक्त युवक को जो खहर के कपड़े पहने था

देखकर कहा कि क्या आप सेवापुरी...के हैं। युवक ने कहा कि नहीं मैं यहाँ का हूँ और सामाजिक कार्यकर्त्ता हूँ इसपर युवती ने कहा तब आप मेरी सहायता कर सकते हैं। पहले मुझे कृपाकर एक गिलास पानी पिला दीजिये।

उपर्युक्त युवक ने उसे पानी पिलाया। उसने उसके हाथ पैर के बंधन खोलने की चेष्टा की ही थी कि सेवापुरी के कुछ कार्य-कर्त्ता विद्यापीठ के एक जिम्मेदार व्यक्ति के साथ वहाँ पहुँच गये और युवक को हटा दिया गया। इसके बाद वहाँ विद्यापीठ के कुछ छात्र पहुँच गये। सेवापुरी के कार्यकर्त्ताओं के कहने पर विद्यापीठ के अधिकारियों ने छात्रों को वहाँ से दूर हटा दिया।

शाम को कुछ सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने उपर्युक्त युवती की खोज की तो वह विद्यापीठ के गार्डन होस्टल में मिली। उसका भाई साथ था। कुछ लोगों ने उससे बात की और कुछ लोगों ने युवती से। युवती ने कातर स्वर में अपनी कहानी सुनाई और कहा कि मैं विनोबा जी से सब हाल बताना चाहती थी किन्तु मुझे पगली बताकर रोक दिया गया है। उसकी राम कहानी सुनकर विद्यापीठ में काफी असन्तोष फैला। एक व्यक्ति ने उसके भाई को सारी घटना की सूचना पुलिस को देने की धमकी दी। यह सुनकर सेवापुरी के कार्य कर्त्ताओं में खलबली मज गई और वे दौड़े दौड़े विद्यापीठ के उच्चाधिकारियों के शरण में गये। अधिकारियों ने आकर सबको वहाँ से हटा दिया।

बाद में विद्यापीठ के कुछ छात्रों के संरक्षण में यह कहकर युवती को छोड़ दिया गया कि इसे रात्रि में आजमगढ़ पहुँचाया जायेगा। छात्रों के यह कहने पर कि इसे हिस्टीरिया का रोग है और यह घबराई हुई है इसलिये रात्रि में भेजना ठीक न होगा, अधिकारियों ने उसे दिन चढ़ते ही भेजने का निर्णय किया।

छात्रों ने उस युवती से नहाने तथा कपड़े बदलने का अनुरोध किया। युवती ने अनुरोध स्वीकार करते हुये भली-भाँति स्नान किया और कपड़े बदले। इसके बाद उससे भोजन करने का आग्रह किया गया। इसे स्वीकार न करते हुये युवती ने बताया कि टांसिल में दर्द है। मैं थोड़ा थोड़ा दूध पीती हूँ। भोजन न कर सकूंगी।

रात्रि में लगभग साढ़े नौ बजे कुछ जिम्मेदार व्यक्तियों के साथ सेवापुरी के कथित अधिकारी द्वारा सेवापुरी के दो गण युवती के पास भेजे गये और उससे आजमगढ़ चलने को कहा। जिम्मेदार व्यक्तियों को सामने देखकर इच्छा रहते हुये भी छात्र प्रतिवाद न कर सके। सेवापुरी के उपर्युक्त कथित अधिकारी द्वारा अपने गणों को खर्च के लिये बीस रुपया दिये जाने का भी समाचार मिला है।

छात्रों ने सहायतार्थ बारह रुपये एकत्र किये थे, वे नहीं लिये गये। युवती रात्रि ही में स्टेशन ले जाई गई।

विद्यापीठ में उपर्युक्त घटना की गहरी चर्चा है। बड़े बड़े लोगों के विरुद्ध युवती द्वारा अभियोग चलाये जाने के कारण विद्यापीठ के अधिकारी पेशोपेश में पड़े हैं। एक ओर छात्रों में उत्तेजना फैली है—दूसरी ओर नेताओं का प्रश्न है। विद्यापीठ के अधिकारी इस चिन्ता में घुलते प्रतीत हो रहे हैं कि क्या करें-?”

“देख लिया शैल ! अपने नेताओं के काले करतूतनामे !” राजन ने मुँह के आगे से अखबार हटाया तो देखा शैल की कुर्सी खाली थी—! “अरे तुम चली गईं शैल ! शायद अच्छा ही हुआ कि तुम चली गईं नहीं तो आज तुम्हें वह भाड़ सुनाता कि तुम या तो इस पार्टी को ही छोड़ देती या मुझे हमेशा के लिये इस घर से निकलने के लिये मजबूर करती।

राजन ने अखबार को मोड़कर अपनी जेब में रखा। इस समय उसे रह रह कर क्रोध आ रहा था। उसके सीने में आग सी सुलग रही थी उन हरामजादों के विरुद्ध जिन्होंने विनोबा जी के यज्ञ को अपवित्र कर कांग्रेस के नाम पर न मिटने वाला टीका लगा दिया था।



“आपने मुझे बुलाया है—?”

“हाँ! तुम कब से रिकशा चला रहे हो—?”

“अभी तो छे ही महीने हुये हैं।

“रिकशा तो अच्छा चलाना जानते हो। क्या नाम है तुम्हारा—?”

“राज!”

“अच्छा, बात यह है राज! कि मेरे पास भी एक रिकशा है, लेकिन उसे कोई चलाने वाला नहीं है। मुझे एक आदमी चाहिये जो उसे चलाये।

“लेकिन……!”

“हाँ मैं जानता हूँ तुम इससे जितना कमा सकते हो उतना शायद मैं तुम्हें वेतन न दे सकूँ, लेकिन यह भी तो देखो कि

अभी तो तुम दिन भर सवारी को लादे फिरते हो और तब तो कभी कभी ही चलाना पड़ेगा ।”

“तो आपका मतलब है कि मैं आप के यहाँ नौकरी कर लूँ ।”

“हाँ ! और सौ रुपये मिलेंगे हर महीने । अगर चाहोगे तो रहने के लिये तुम्हें एक कोठरी भी मिल जायेगी ।”

“लेकिन मैं नौकरी नहीं करना चाहता सेठ जी ।”

“क्यों—? क्या यही जिन्दगी तुम्हें अच्छी लगती है—?”

“हाँ आप लोगों के यहाँ नौकरी करनेसे कहीं अच्छी यह जिन्दगी है जिसमें दिन भर पसीना बहता रहता है ।”

“यह तो तुम्हारी इच्छा है । मैंने तो सोचा था कि गरीब है कुछ रहम कर दूँ लेकिन तुम.....”

“अपना रहम अपने ही दिल में रखिये सेठ जी । कभी काम आयेगा ।” राज ने जलते हुये दिल से कहा और अपने रिक्शे को आगे बढ़ा ले गया—। नौकरी देंगे... रहम करना चाहते है, मूठे, धोखेबाज, जालिम, बेरहम—। अगर इतना ही रहम होता इनके दिल में तो क्यों आज मैं रिक्शा खींचता—? उस समय कहाँ मर गये थे ये सेठ, जब कि मैं छे महीने तक दर दर की ठोकरें खाता रहा, जब मैं भूख से कई रोज तड़पता और अंधी माँ को मूठी तसल्ली देकर सेठों के दरवाजों को खटखटाता । आज दया दिखा रहे हैं, अपने आपको निर्दोषी कहते हैं । समाज के नेता हैं ना, इसीलिये तो इतनी बातें बनाना जानते हैं । चलटी छूरी की नोक से धोरे धीरे खून निकालते हैं । और.....”

और राज जाने क्या से क्या सोचता जा रहा था अपनी ही धुन में कि एकाएक उसके रिक्शे पर कोई उछल कर जा बैठा । राज ने घुमकर देखा थानेदार साहब थे । पहले तो राज को

क्रोध आया कि इस तरह उछल कर चढ़ बैठा है। पर फिर यह सोच कर कि चलो कोई सवारी तो मिली। उसने रिक्शा खींचते हुये ही पूछा—“कहाँ जाना है दारोगा जी—?”

“थाने, और कहाँ।” दारोगा ने अपनी कुत्ते की पोछ की तरह टेढ़ी मोछों को और भी टेढ़ा करते हुये कहा।

रिक्शा अब चढ़ाई पर था। शहर की यही एक चढ़ाई ऐसी थी जिस पर रिक्शेवालोंका खून सूख जाता था॥ पूरे आधे मील की चढ़ाई और वह भी इस ढंग की थी कि दोहरी सवारी साइकिल तो चढ़ ही नहीं पाती फिर भला रिक्शे की क्या मजाल। इस चढ़ाई को पार करने के लिये आठ आने लेते थे वे लोग। राज ने सोचा कि अगर आठ आने नहीं तो कम से कम छे आने की तो बोहनी होगी सुबह सुबह।

गरमी की सुबह ही जाड़े की दोपहर मालूम पड़ती है। धूप निकल चुकी थी। राज पूरी ताकत से रिक्शा खींच रहा था और दारोगा साहब दो सवारी की जगह घेरे आराम से बैठे थे। आधी चढ़ाई पार करने के बाद राज ने क्षण भर के लिये रिक्शा रोक दिया। सोचा, दो चार तेज साँसे ही ले लूँ। लेकिन तभी थानेदार की रोबीली आवाज गरज उठी—“अबे जल्दी चल, बहुत देर हो गई है।”

“ठहर जाइये थानेदार साहब! बहुत थक गया हूँ।”

“तो मैं क्या करूँ हरामजादे—? चलता या दूँ दो चार खाने भरको।”

राज का खून खौल उठा गालियाँ सुनकर, पर एक जानबर की दैसियत से चुप रहा। क्योंकि वह रिक्शा खींचने के लिये बना था। सवारी को जल्दी से जल्दी उसकी मंजिल पर पहुँचाने के लिये था। उसका जी चाहा कि वह उस मुँह को नोच ले जिसने

उसे इतनी बड़ी गाली दी थी पर पैसे की लालचने उसका ही मुँह पकड़ लिया। वह इन्सान नहीं हैवान था, जानवर था घोड़े और बैल की तरह तीन पहियों की गाड़ी में जुता हुआ था। उसकी आत्मा मानव की आत्मा नहीं, तभी तो थानेदार साहब उसे बहादुरी का इनाम दे रहे थे।

पसीने पर पसीना चढ़ता जा रहा था। सांस पर सांस चढ़ रही थी और रिक़शेवाला चढ़ाई पर चढ़ रहा था। सभी में प्रतियोगिता हो रही थी। पसीना तेज धार की तरह बहना चाहता था...सांस तेज हवा की तरह चलना चाहती थी और राज तेज घोड़े की तरह भागना चाहता था। और थानेदार साहब तीनों की प्रतियोगिता को देख रहे थे। पसीना धार बन रहा था...सांस हवा बन रही थी पर—। पर राज घोड़ा न बन पाया। उसके पाँव काँप रहे थे, फेफड़े जवाब दे रहे थे पर फिर भी वह चढ़ता जा रहा था।

अन्त में चढ़ाई समाप्त हुई।

तीनों की प्रतियोगिता समाप्त हुई जिसमें राज सबसे पीछे रह गया था।

थानेदार उतरा और राज की पीठ पर हाथ फेरते हुये “शाबाश” इस तरह कहा जैसे कोई कोचवान अपनी कठिन मंजिल पर पहुँचने के बाद तौंगे से उतर कर अपने घोड़े की पीठ पर हाथ फेरता है।

राज चुप रहा। मगर जब थानेदार थाने की ओर घूमे तो राज ने हाँफते हुये कहा—। “पै.....से।”

“क्या कहा—?” थानेदार घूम पड़ा फिर उसकी ओर।

“पैसे.....दीजिये.....थानेदार सा.....हब.....!” राज हाँफ रहा था।

“हम लोगों से भी पैसे लोगे—?”

“क्यों, आप कोई भगवान हैं—? मेहनत की……है तो पैसे……माँग रहा हूँ।”

जा अपना काम देख नहीं तो चलान कर दूँगा।” थानेदार ने लाल आँखों से घूरते हुये कहा।

“लोग क्या देख नहीं रहे हैं कि मैंने आपको उतारा है और आप चलान की धमकी दे रहे हैं।” राज ने भी जोर से कहा, थानेदार सरेबाजार में अपनी बेइज्जती न सह सका। उसने दाँत पीसते हुये कहा—। “अच्छा थाने में आओ तुम्हें पैसे देता हूँ, कितने चाहिये—?”

“आठ आने।”

“पूरे—?”

“जी हाँ।”

राज उसके पीछे पीछे थाने के अन्दर चला गया। फाटक पर खड़े दो चार सिपाहियों ने सलाम किया। अपनी कुर्सी पर बैठते हुये उसने आवाज दी—। “रहमान—!”

“जी साहब!” एक मोटा ताजा काले रंग का सिपाही दौड़ता हुआ आया।

“यह आठ आने पैसे माँगता है।” उसने राज की ओर इशारा करते हुये कहा—। “मेहनत जो की है बेचारे ने।”

खड़े क्या हो ले जाओ इसे—।”

“चल बे!”

“कहाँ।” राज को कुछ संदेह हुआ।

“पैसे लेने।”

राज को क्या मालूम था कि वह पैसे देगा या……

चुपचाप चल दिया उसके पाँछे। सिपाही उसे एक कमरे

में ले गया। राज ने देखा दो सिपाही और आ गये हैं। वह बाहर की ओर दौड़ा पर दोनों सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और उसके दोनों हाथों को बाँध दिया।

“यह क्या कर रहे हो—? छोड़ो मुझे...” राज चिल्ला पड़ा।

“तुम्हें पैसे चाहिये ना हरामजादे—! सिपाहियों के मुँह लगते हो।” रहमान के हाथ में चमड़े की ब्रैतें लहरा रही थी।

“मुझे माफ कर दो.....अब कभी ऐसी गलती.....”

लेकिन बात पूरी होने से पहले ही जालिम बेंत लहरा उठी हवा में।

“सटाक—!”

“आह !” चीख उठा राज !

“सटाक...सटाक.....”

“आह...भग...वान.....चिघाड़ उठा राज !

“सटाक...सटाक...सटक...” बेंत लहरा उठे।

“आ.....आह...ह...!” राज बेहोश हो रहा था। पीठ का कपड़ा बेंत के साथ चिपक कर फट चुका था खून की नली बह रही थी और पीठ की लाल और सफेद चमड़ी बाहर निकल रही थी।

“अभी दो और बाकी है !” रहमान ने घृणा भरी दृष्टि से देखते हुए कहा—! “हिन्दुओं के साथ ऐसा ही होना चाहिये !” और दो बेंतें और लहरा उठी।

“सटाक....!”

“.....!” बेचारा बेहोश हो गया था।

“सटाक !” बेंत रुकी नहीं।

“.....!” मुर्दा घोड़े पर चाबुक पड़ रही थी।

“खोल दो साले के हाथ !” रहमान ने बूट को ठोकर उसके

सिर पर मारते हुये कहा । और साथ ही सिर का खून भी बाहर आ गया ।

“दे दिया इनाम बदमाश को !” तभी थानेदार ने भी दो ठोकरें मार दी !

बचा हुआ चेहरा भी नालदार बूटों से जख्मी हो गया और चमड़ी के अन्दर का गुदा भी बाहर भाँकने लगा ।

“हाँ हजूर !”

“बाहर किसी रिक्शे पर लदवा कर भेज दो जंगल में !”

“बहुत अच्छा हजूर !”

और दो सिपाही उसको दोनों हाथों से पकड़ कर घसीटते हुये ले आये थाने के बाहर । तमाम कपड़े खून से लथपथ हो गये थे । माँस के लोथड़े जमीन पर लटक रहे थे । चेहरा नालों की चोट से चिपटा हो गया था । चारों ओर खून ही खून गिर रहा था । बाहर खड़ी जनता उसकी दशा को देखकर रो उठी । आह भर उठी, और दिल को थाम कर वापस चली गई ।

यह था उसकी मेहनत का इनाम । यह था देश के रक्तकों के काम जो गरीब जनता के साथ किये जा रहे थे । यह वह थाना था जहाँ बाहर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था कि “यहाँ रिपोर्ट करवाई कुछ नहीं लगता” यह जनता का है और जनता इसकी है” और उसी जेल के अन्दर वह दृश्य था जिसे सुनने मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं और जिसे देखकर दिल के आँसू आँखों में आ जाते हैं ।

यह है हमारे आजाद देश की आजाद पुलिस जो आजादी से जो चाहे सो कर सकती है । बंदों की मौत जो कभी भगवान के हाथ में थी, आज इन चंडालों के हाथ में आ गई है । जिसे चाहें उस कोठरी में बंद कर दें जहाँ मौत मँह फैलाये चिंघाड़ रही है ।

रहमान ने जाते हुये एक रिक्से को आवाज देकर बुलाया ।
 “इसे ले जाकर फेंक आओ बाहर !”

रिक्सेवाला भीड़ को चीरता हुआ बेहोश राज के पास आया । उठाने के लिये उसके शरीर को उलटा किया और साथ ही चीख उठा—

“ राज !”

वह धन्नू था जो बेहोश राज को उठाने आया था ।

“देख लो समाज वालों है तुम्हारी सरकार का इन्साफ हम गरीबों के साथ !” धन्नू ने चारों ओर जनता को देखा और राज को पीठ पर लादकर अपने रिक्शे की ओर चल दिया । उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे । आज पहली बार उसने सिपाहियों का जुल्म देखा था । रिक्शे को सड़क पर लाया और ढाल पर उतार कर ले गया अस्पताल की ओर ।

राज की दशा को देखकर डाक्टर के हाथ भी काँप गये कि किस तरह वह लटकी हुई चमड़ी को औजार से काटकर उसमें दवाई भरे । लेकिन एक डाक्टर की हैसियत से उसे पत्थर दिल होना ही था । उसने भरे गले से कहा— “शायद, पुलिस की मेहरबानी हुई है बेचारे पर !”

“हाँ डाक्टर साहब ! देश के रक्त जो हुये वे लोग । राज को उन्होंने क्या दिया है, जानते हैं डाक्टर साहब ! आठ ? आने दिये हैं । आठ आने.....इस गरीब ने मेहनत की और इसे इसकी मजदूरी मिली है । पूरी मजदूरी.....इन्साफ के साथ.....। उन लोगों ने इसमें से एक पैसा भी नहीं चुराया डाक्टर साहब ! मैं सच कह रहा हूँ डाक्टर साहब ! उन्होंने इसे पूरी मजदूरी दे दी है.....और.....। कहते कहते फूट पड़ा धन्ना । दिल की सिसकियों को वह रोक न सका ।

डाक्टर ने देखा, पूरे आठ निशान थे। डाक्टर ने काँपते हाथों से उसकी निकली हुई चरबो पर दवाई लगाई। लटके माँस को कैची से काटा और पट्टियों को बाँधने के बाद उसे होश लाने की दवा पिलाई।



१०

“अब कैसी तबियत है—?”

“वैसी ही है राज !”

“यह लो दवाई पीलो।”

“दवाई—?”

“हाँ, मैं अभी लेकर आया हूँ। डाक्टर ने कहा है कि दो ही खोराक पीने से बुखार उतर जायेगा।”

“लेकिन बुखार तो उतर चुका है राज !” धन्ना ने धीरे से कहा। “वह तो दिल को भी चीर चुका है।”

“ऐसा न कहो धन्ना भइया। जब तक राज है तुम चारपाई पर नहीं पड़ सकते। लो पीलो।”

“कैसे पी सकता हूँ—? तुम्हारी कमाई को मैं अपनी बिमारी में लगाऊँ—? यह कभी नहीं हो सकता। यह कभी नहीं हो सकता राज ! कि रोटी के पैसों को बिमारी पर लगाया जाये।”

“तो फिर उस समय क्यों लगाये थे जब मैं अस्पता.....

“राज !” तड़प उठा धनू—! “भगवान के लिये अस्पताल का नाम न लो राज ! अस्पताल में गरीबों का मुफ्त इलाज करके उन्हें फिर जिन्दा कर दिया जाता है, ताकि वह फिर चंडालों के जुलम का शिकार बनें। अगर वे डाक्टर जिन्दगी का इलाज न कर मौत का इलाज करें तो कम से कम गरीब दुबारा शिकार बनने से बच तो जायें। लेकिन वे ऐसा क्यों करने लगे। वे भी तो समाज की जंजीर की एक कड़ी है जो जंजीर को पूरी बनाये रखते हैं। अगर वे अलग हो जायें तो जंजीर टूट कर बिखर जाये और गरीबों की गरदन पर लगी हुई तलवार हट तो जाये।”

“तो फिर तुमने मुझे क्यों जिन्दा रहने के लिये डाक्टर के पाँव पकड़े थे ?”

“क्योंकि तुम्हें अभी बहुत काम करना था—राज ! अगर मैं चाहता तो तुम्हें किसी नदी या तालाब में फेंक कर तुम्हें हमेशा के लिये समाप्त कर देता। लेकिन तुम्हें मैंने जिन्दा किया.....अपने आप को बेचकर तुम्हें जिन्दा रहने के लिये मजबूर किया.....लेकिन राज ! मैंने तुम्हें जिन्दा रहने के लिये जिन्दा नहीं किया, बल्कि मुझ जैसे हजारों और लाखों बेगुनाह इन्सानों को जिन्दा करने के लिये जिन्दा किया। मैं जानता हूँ राज ! कि तुम इस जिन्दगी को किस तरह गुजार रहे हो और इसीलिये मैंने तुम्हें इस जिन्दगी में फिर ढकेल दिया ताकि तुम इसके हर पक्ष को उलटकर अच्छी तरह पढ़ सको.....इसके प्रत्येक रेशे को देख सको.....इसकी उलझी हुई गंठों को सुलझा सको.....इसके फटे हुये दामन में भाँक सको.....और इसमें गोते खाते खाते तंग आ जाओ और फिर—। इस जिन्दगी के खिलाफ आवाज उठाओ.....ऐसे जीवन की बगावत का झंडा उठाओ और हर

गाँठ को खोल दो.....हर दामन को सी दो.....हर रेशे को मिला दो.....और हर पन्नों पर गिरी हुई स्याही को साफ कर दो, ताकि उसका प्रत्येक शब्द स्पष्ट दिखाई दें और आज का डूबता हुआ समाज उसे पढ़ सके।”

राज ने देखा धन्नू सीमा से अधिक उत्तेजित हो गया है, जो कि उसकी हालत को और भी हानि पहुँचा सकती है। उसने धीरे से कहा—“धन्ना भइया ! तुम ठीक कह रहे हो, लेकिन इस समय तुम्हें आराम की जरूरत है ज्यादा बोलने से दिलपर और भी धक्का लगेगा।”

“धक्का तो इतना तेज लगा है कि शायद मैं उसे सह भी न सकूँ।”

“नहीं धन्ना भइया ! अगर तुम हिम्मत हार बैठोगे तो हारा हुआ सिपाही तो पहले से हो हार मान चुका है।”

“इसीलिये तो तुम्हें कह रहा हूँ राज ! कि अपने गिरे हथियारों को उठाओ और शेर की तरह इन्साफ के मैदान में कूद पड़ो। इन्साफ का बीज बोओ और इन्साफ का ही फल खाओ।”

“लेकिन तुम्हारा सहारा भी तो आवश्यक है।”

“तुम तो मजाक कर रहे हो राज ! तुम पढ़े लिखे और मैं अनपढ़ ! तुम जनता के सामने बोल सकते हो, उन्हें अपनी ओर खींच सकते हो.....उनका रास्ता बदल सकते हो और मैं.....

“और तुम उस रास्ते पर चलनेवाले पहले व्यक्ति हो सकते हो, जो कि पीछे आनेवालों को ठीक रास्ता दिखायेगा।” राज ने उसकी बात को पूरा करते हुये कहा। और बात का पहलू बदलते हुये कहा—“अच्छा धन्ना भइया तुम दवाई पीलो और मैं रिकशा लेकर जाऊँ।”

“अरे हाँ ! मैं भी कितना पागल हूँ राज ! कि बातों ही में इतना समय बरबाद कर दिया । लेकिन क्या करूँ राज ! दिल में लगी आग भी तो नहीं बुझती कि मैं चुप हो जाऊँ । तुम ही बताओ राज ! जिसकी बीबी उसके आँखों के सामने लूट ली गई हो.....जिसकी बहन को उसकी आँखों के सामने ही बर्छे की नोक पर उछाल दिया गया हो.....और जिसके चार साल के बच्चे को जिन्दा ही जलती हुई आग में फेंक दिया गया हो.....उसके दिल की आग कभी बुझ सकती है—? कभी नहीं.....फिर वह उस जलती हुई आग से घबड़ाकर पागल नहीं हो जायेगा तो और क्या होगा—? रो पड़ा धन्नू और साथ ही सिसक उठा राज !

“धन्नू भइया !”

“राज !”

“भइया !”

“जाओ राज ! रोना इन्सान का काम नहीं है । दिल रोता है तो क्या हुआ होंठ तो मुस्कुराते हैं । जाओ.....जाओ राज ! काम करो, रिक्शा खींचो, मजदूरी करो, और.....और.....।” और फिर फूट उठा धन्नू ! चाहते हुये भी आँसू रुक न सके ।

और राज गीली आँखों से उठकर बाहर चला गया । वह जानता था कि जब तक वह उसके सामने रहेगा उसके आँसू निकलते ही रहेंगे ।

मकान के बाहर आकर आस्तीन से आँसू पोंछे और चल दिया । रिक्शा स्टैंड की ओर । अपना रिक्शा लिया और आदत के अनुसार उसके पाँव स्वयं ही पैडिल पर चलने लगे । अभी वह थोड़ी ही दूर गया था कि किसी ने पुकारा—। “ओ रिक्शा !”

“जी !” राज ने रिक्शा रोक दिया । एक बार पुकारने वाले

को देखा और फिर सिर झुका लिया। शायद वह उससे अपने आपको छुपाना चाहता था।

“गाँधी मैदान चलोगे—?”

“आइये बैठिये।” उसने वैसे ही झुके हुये सिर से कहा।

“क्या लोगे।”

“छे आने।”

सवारी बैठ गई। और राज चलाने लगा।

“क्या बात है रिक्शेवाले, बहुत खोये खोये से मालूम हो रहे हो।”

“यूहीं! और फिर मनुष्य तो दुनियाँ में आते ही खो जाता है। अगर उसे अपने आपका ज्ञान रहे तो फिर इस दुनियाँ का कारोबार ही नहीं चल सकता।”

“क्या मतलब—?”

“मतलब यही कि यह जो चलती हुई दुनियाँ आपको दिखाई दे रही है ना? दोरंगी है। एक ओर आग लगी हुई है और दूसरी ओर पानी की धारा बह रही है। लेकिन वह धारा लगी आग को बुझाना नहीं चाहती—। एक ओर ऊँची इमारतें अपना सीना ताने खड़ी हैं, तो दूसरी ओर गरीबों की झोपड़ियाँ काँप रही हैं—। एक ओर सेठों के पेट अपने क्षेत्र को छोड़कर सीमा से अधिक चले गये हैं, तो दूसरी ओर निर्धनों के पेट हार कर उनकी पीठ से लग गये हैं। क्यों मैं ठीक कह रहा हूँ ना—?”

“.....।”

“शायद मैं झूठ बोल रहा हूँ—?” राज ने फिर कहा।

“ऐं...! नहीं...तुम ठीक कह रहे हो।” सवारी चौक गई।

“क्या सोच रहे थे आप—?”

“कुछ नहीं—। अच्छा यह बताओ कि कितना कमा लेते हो दिन भर में ?”

“जितने से पेट भर जाये ।”

“तुम तो पहेलियाँ कर रहे हो । शायद किसी सभ्य समाज से संबंध रखते हो ।

“अगर सभ्य समाज से संबंध रखता होता जनाब ! तो आज रिक्शा न चलाता, किसी गद्दी पर बैठ कर नोटों की बंडले गिनता ।”

“तो तुम्हारा मतलब यह कि अमीरों का समाज, सभ्य समाज है । और गरीबों का असभ्य समाज ?”

“मेरा कहना नहीं, आप लोगों का ही कहना है ।”

“नहीं, असली सभ्यता तो गरीबों की भोपड़ी में छुपी बैठी है ।”

“मैं भी पहले यही सोचता था ।

“और अब ।”

“और अब वह सभ्यता भोपड़ी से निकलकर महल में चली गई है.....फटे दामन से गिरकर मखमल के गद्दे पर चली गई है ।”

“तुम्हारा नाम क्या है रिक्शेवाले—? कहाँ रहते हो..... इससे पहले क्या करते थे ।” उसने एकाएक सवाल पूछ लिये ।

“मैं.....मैं.....” राज घबड़ा गया—। “लेकिन आप.....आपका मतलब क्या है ।”

“मुझे तुम पर शक हो रहा है कि तुम रिक्शा चलाते नहीं लेकिन चला रहे हो ।

“जी.....!”

“और तुम्हारी आवाज.....तुम्हारी आवाज मेरे एक दोस्त

से मिलती जुलती है। वह भी पहेलियों ही में सवाल जवाब किया करता था... और जब जोश में बोलता था तो.....

“अरे आप भी कैसी बातें कर रहे हैं ? आपका दोस्त और रिक्शा चलाये—? कभी नहीं—। आप बहम में न पड़िये, बाबूजी !

“लेकिन वह अपनी ही धुन में कह रहा था—उसका नाम राज था।

“राज !” राज के मुँह से अनायास ही निकल पड़ा।”

“हाँ ! राज ही था उसका नाम। वह मेरे साथ ही पढ़ता था पर कुछ कारणों से मेरी पढ़ाई छूट गई और मैं यहाँ आ गया। उसका पत्र बराबर आया करता था.....लेकिन दो साल पहले उसका पत्र आया था जिसमें लिखा था कि वह बी. ए. की परीक्षा में पास हो गया है। लेकिन उसके बाद उसका कोई पत्र नहीं आया....। आज पूरे दो वर्ष हो रहे हैं उसे पत्र भेजे हुये। मालूम नहीं क्या बात है।”

“किसी कारोबार में लग गया होगा—।” राज ने धीरे से कहा—। “कारोबार में छुट्टी भी तो जल्दी नहीं मिलती।”

“अरे ऐसा कारोबार किस काम का जिसमें एक पत्र लिखने की भी छुट्टी न हो। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि.....

“किसी दूसरी जगह चला गया है—।” राज ने उसकी अधूरी बात को पूरा करते हुये कहा— “शायद आपका विचार ठीक ही हो।”

“तुम्हारी आवाज सुनकर ऐसा मालूम होता है कि मेरा राज ही बोल रहा है। हम दोनों का चोली और दामन की तरह साथ रहता था। अंगरेजों के जमाने में उसने ऐसे ऐसे काम किये जिसे सुनकर दिल काँप उठता था.....

“तब तो स्वतन्त्रता के बाद सरकार ने उसे जरूर किसी अच्छी जगह बैठा दिया होगा।”

“अगर सरकार इसी लायक होती तो फिर रोना ही काहे का था। सरकारी जगह तो उन लोगों को मिली है जो बड़े बड़े नेता थे.....बड़े शिकारी थे.....निशाने बाज थे.....जिन्हें शासन चलाने का ढंग था.....जो कांग्रेस के नाम पर अपनी जेब भरना जानते थे और.....

और एकाएक रिक्शा रुक गया।

गांधी मैदान सामने पड़ा सो रहा था।

सवारी ने जेब से पैसे निकालकर रिक्शेवाले की ओर बढ़ाये।

ध्यान से उसकी आँखों को देखा।

एकाएक हाथ रुक गया।

राज अपना सिर झुका न सका।

“तुम.....तुम.....

“.....!”

“तुम्हारी सूरत.....!” वह ध्यान से देख रहा था। उसकी जुबान लड़खड़ा रही थी।

“.....!” राज चुपचाप खड़ा था।

“तुम...राज.....राज.....तुम.....मुझे.....

“.....!” राज की आँखें भर आई और साथ ही

चीख उठा वह।

“राज !”

“राज !”

“राज !” लिपट गया राज से।

छलछला पड़े दोनों के आँखों से आँसू।

“राजन !”

“राज !”

दोनों फूट फूट कर बच्चों की तरह रो रहे थे ।

“मैंने...तो सोचा था...कि...शायद तुम मुझे पहचान...
न सको ।”

“यह तुमने क्या किया राज !”

“जो किस्मत में था वही हुआ !

“तुम रिक्शा नहीं चला सकते राज ! तुम्हें अपने राजन की
कसम है, अभी इस रिक्शे को आग लगा दो !”

“राजन ! यह तुम कह रहे हो राजन ! कि उस दौलत को
आग लगा दूँ, जिसपर लाखों लोग जी रहे हैं—? उस मकान
को जला डालूँ जिसमें हजारों लोग रह रहे हैं.....और उस
रस्सी को काट दूँ, जिस के सहारे लाखों गरीब लटके हुये हैं—?
यह कभी नहीं हो सकता ।”

“तुमने पहले क्यों न कहा राज ! कि तुम वही राज हो
जिसके लिये दो सालों से मैं तड़प रहा हूँ ।

“अगर पहले कह देता तो शायद तुम इतबार भी न करा
कि बी. ए. पास राज रिक्शा चलायेगा—?”

“अगर पहले बताते तो मैं कभी इस पर न बैठता ।”

“अगर बता देता तो मेरे छे आने मारे जाते ।” राज
हँसते हुये कहा ।

“तुम्हारी शरारत अभी तक नहीं गई राज ! दोनों की आँ
अब भी गीली थी ।

“शरारत तो चली गई पर तुम्हें देखकर फिर आ गई

“अच्छा अब घर चलो ।”

“घर ! यह कैसे हो सकता है कि एक रिक्शेवाला.....

“राज !” चीख उठा वह—। “आज के बाद अगर तुमने ऐसी बात कही तो याद रखो कि मेरा और तुम्हारा साथ हमेशा के लिये छूट जायेगा ।

“तुम तो नाराज हो गये राजन ! मैं तो मजाक कर रहा था । खैर ! असल बात यह है राजन कि मेरा एक दोस्त बहुत बिमार है । अभी उसकी दवाई लेकर जाना है बेचारा मेरी राह देख रहा होगा ।”

“मैं यह कुछ नहीं सुनना चाहता, तुम्हें चलना ही होगा ।”

“राजन ! जरा सोचो, अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या करते—? क्या तुम चाहते हो कि अब मैं अपने सिद्धान्त को भूल जाऊँ—? जिसने मुझे सहारा दिया—जिसने मेरे पेट में लगी आग को बुझाया—और जिसने मुझे मौत के मुँह से निकाल कर जिन्दगी के गोद में डाला, अब जब वह लाचार, बेबस है, ती क्या मेरा यही कर्तव्य है कि मैं उसे छोड़कर चला जाऊँ—? क्या इन्सानियत यही कहती है कि न्याय का बदला अन्याय से दो—क्या दोस्ती के माथे पर यही लिखा है कि बेवफाई करो—?”

“.....!”

“बोलते क्यों नहीं राजन ! अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या उसे छोड़कर दूसरी जगह जा सकते थे—?”

“लेकिन—.....!”

“पहले मेरी बात का जवाब दो । क्या मनुष्य का सिद्धान्त यही कहता है कि किसी की लाचारी को देखकर आँखें बंद कर लो और उसके पास आते ही उस पर हमला कर दो—?”

“नहीं ।”

“तो फिर मैं कैसे जा सकता हूँ उसे छोड़कर । जिसने मेरे

“राजन !”

“राज !”

दोनों फूट फूट कर बच्चों की तरह रो रहे थे ।

“मैंने...तो सोचा था...कि...शायद तुम मुझे पहचान...
न सको ।”

“यह तुमने क्या किया राज !”

“जो किस्मत में था वही हुआ !

“तुम रिकशा नहीं चला सकते राज ! तुम्हें अपने राजन की
कसम है, अभी इस रिकशे को आग लगा दो !”

“राजन ! यह तुम कह रहे हो राजन ! कि उस दौलत को
आग लगा दूँ, जिसपर लाखों लोग जी रहे हैं—? उस मकान
को जला डालूँ जिसमें हजारों लोग रह रहे हैं.....और उस
रस्सी को काट दूँ, जिस के सहारे लाखों गरीब लटके हुये हैं—?
यह कभी नहीं हो सकता ।”

“तुमने पहले क्यों न कहा राज ! कि तुम वही राज हो
जिसके लिये दो सालों से मैं तड़प रहा हूँ ।

“अगर पहले कह देता तो शायद तुम इतबार भी न करते
कि बी. ए. पास राज रिकशा चलायेगा—?”

“अगर पहले बताते तो मैं कभी इस पर न बैठता ।”

“अगर बता देता तो मेरे छे आने मारे जाते ।” राज ने
हँसते हुये कहा ।

“तुम्हारी शरारत अभी तक नहीं गई राज ! दोनों की आँखें
अब भी गीली थी ।

“शरारत तो चली गई पर तुम्हें देखकर फिर आगई ।”

“अच्छा अब घर चलो ।”

“घर ! यह कैसे हो सकता है कि एक रिकशेवाला.....

“राज !” चीख उठा वह—। “आज के बाद अगर तुमने ऐसी बात कही तो याद रखो कि मेरा और तुम्हारा साथ हमेशा के लिये छूट जायेगा ।

“तुम तो नाराज हो गये राजन ! मैं तो मजाक कर रहा था । खैर ! असल बात यह है राजन कि मेरा एक दोस्त बहुत बिमार है । अभी उसकी दवाई लेकर जाना है बेचारा मेरी राह देख रहा होगा ।”

“मैं यह कुछ नहीं सुनना चाहता, तुम्हें चलना ही होगा ।”

“राजन ! जरा सोचो, अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या करते—? क्या तुम चाहते हो कि अब मैं अपने सिद्धान्त को भूल जाऊँ—? जिसने मुझे सहारा दिया—जिसने मेरे पेट में लगी आग को बुझाया—और जिसने मुझे मौत के मुँह से निकाल कर जिन्दगी के गोद में डाला, अब जब वह लाचार, बेबस है, तो क्या मेरा यही कर्तव्य है कि मैं उसे छोड़कर चला जाऊँ—? क्या इन्सानियत यही कहती है कि न्याय का बदला अन्याय से दो—क्या दोस्ती के माथे पर यही लिखा है कि बेवफाई करो—?”

“.....!”

“बोलते क्यों नहीं राजन ! अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या उसे छोड़कर दूसरी जगह जा सकते थे—?”

“लेकिन.....!”

“पहले मेरी बात का जवाब दो । क्या मनुष्य का सिद्धान्त यही कहता है कि किसी की लाचारी को देखकर आँखें बंद कर लो और उसके पास आते ही उस पर हमला कर दो—?”

“नहीं ।”

“तो फिर मैं कैसे जा सकता हूँ उसे छोड़कर । जिसने मेरे

लिये अपने आपको बेच दिया, अब मैं उसकी बिमारी को देखकर उससे दूर भाग जाऊँ—? उससे घृणा करने लगूँ—?”

“मैंने कुछ दूसरा समझा था राज ! खैर, कल तो आओगे—?”

“हाँ ! कल शाम को आ जाऊँगा ।”

“दिल तो नहीं करता पर तुम्हारे आगे मेरी कोई पेश नहीं चलती ।”

“तुम ही बताओ राजन ! मैं क्या कर सकता हूँ ? क्या मैं नहीं चाहता कि इस जिन्दगी से निकलकर आराम की जिन्दगी बिताऊँ—?”

“.....।”

“अच्छा, तुम काम से जा रहे थे ना—?”

“कल जरूर आना —।”

“जरूर आऊँगा ।”

“भूलना नहीं—”

“कोशिश करूँगा ।”

राजन गांधी मैदान की ओर चल दिया और राज फिर अपनी सवारी पर बैठ कर चलाने लगा रिक्शा कुछ क्षणों के लिये बहता पानी रुक गया था, और अब फिर चलने लगा अपनी ही गति से ।



“आज बड़े खुश हो रहे हो भइया !”

“हाँ कुछ ऐसी ही बात है ।”

“कौन सी बात है, जरा मैं भी तो सुनूँ ।”

“अगर तुम सुनोगी शैल तो मैं जितना खुश हो रहा हूँ तुम उतनी ही दुखी होगी ।”

“क्यों—?”

“वह बात ही ऐसी है ।”

“तुम तो हमेशा अटपटांग ही बकोगे ।”

“खैर यही समझो ।”

“तो फिर क्यों नहीं बताते कि क्या बात है—?”

“बात यह है कि आज शाम को मेरा एक दोस्त आनेवाला है ।

“बस यही बात थी । बाहरे दोस्त वाले । दोस्त के लिये इतनी खुशी—?”

“जब अंधे को दोनों आँखें मिल जाती हैं, तो जानती हो शैल ! उसकी क्या दशा होती है—?”

“यही कि वह खुशी से नाच उठता है ।”

“और नाचते नाचते पागल हो जाता है । वही दशा आज मेरी भी है । आज तक मैं अंधा था पर अब मुझे दोनों आँखें मिल गई हैं । मैं बेसहारे था पर अब मेरे हाथ में लाठी आ गई है ।”

“कौन है वह दोस्त—?”

“राज !”

“राज—?”

“हाँ वह राज, जो मेरे दिल में आया और मेरी जिन्दगी को बदल दिया। आजादी से पहले मैं अंगरेजों का पिछू था... नौकर शाही को पसंद करता था, पर राज ने मेरी आँखें खोल दी। मुझे सोते हुये को जगा दिया और कहा कि अपने आप को देखो। राजन ! कि तुम किस खाई में पड़े हो, जो नीचे ही चली जा रही है। उसने बताया कि अंगरेजी सरकार किस तरह हमारे साथ व्यवहार कर रही है और जुल्म और अत्याचार की ऊँची से ऊँची चोटी बना रही है। साम्राज्यवादी नीति को अपना कर भारत के सोने को मिट्टी का रूप दे रही है। लेकिन इसमें दोष अंगरेजों का नहीं है, दोष तुम्हारे जैसे उन भारतीयों का है जो अंगरेजों की चापलूसी करते हैं, जो नौकर शाही का दम भर कर अपने भाइयों के गले में फाँसी का फंदा लटकाते हैं। और.....” और उसके बाद मैं भी उसी पार्टी में मिल गया जिसमें वह था। उस समय कांग्रेस दल का बोलबाला था। महात्मा गांधी और जवाहरलाल जैसे महापुरुष भारत की स्वतन्त्रता के लिये अंगरेजी सरकार से लड़ रहे थे। भारत माता को विदेशी शासन से मुक्त करा रहे थे। राज पार्टी का माना हुआ कार्यकर्त्ता था। उस समय में दो विचार धाराओं के लोग थे एक शान्ति विचार के और दूसरे क्रान्तिकारी विचार के। राज उन्हीं क्रान्तिकारियों में से एक था। उसके साथ साथ कुछ ही दिनों में मैं भी क्रान्तिकारी बन गया था। आग में अंगरेजी शासन को जला डालना चाहता था। हमेशा मेरे दिल में बगावत की भावना उठती रहती थी—। क्षण भर के लिये राजन

चुप हो गया ।

“.....!” शैल भी चुपचाप सुन रही थी ।

“वही राज आज आ रहा है । और अब वह हमेशा मेरे साथ रहेगा । शैल ! कांग्रेस के लिये वह चार बार जेल गया..... जाने कितनी ही बार सत्याग्रह में लाठियों की मार खाई । उसने अपना सब कुछ लुटा दिया केवल अपने दल के लिये । उसके दिल में यह भावना थी कि उसका देश स्वतन्त्र हो जाये देश के भाई आजाद तो हो जाये । जाने कितनी ही बार उसे पढ़ाई से भी हाथ धोना पड़ा । पर उसने दल को न छोड़ा—अन्त में आजादी मिली पर उसके लिये वह आजादी बरबाद थी ।

“वह कैसे—?” शैल ने आश्चर्य से पूछा ।

“वह ऐसे कि वह क्रान्तिकारी राज आज रिकशा चला रहा है । देश की आजादी के लिये लड़ने वाले की यही दशा हो रही है । वह बी. ए. पास है शैल ! पर जानवरों से भी बुरी दशा है उसकी । कल एकाएक उससे मुलाकात हो गई और उसने आज आने का वायदा किया है—। मुझे सन् १९४२ का वह दिन याद है शैल जब कि—।

+

+

+

चारों ओर बगावत की आग लगी हुई थी ।

नारों की तड़पन से धरती का कण कण काँप रहा था ।

“महात्मा गांधी की जै” “जवाहरलाल की जै” और “भारत छोड़ो” की आवाजे आकाश को चूम रही थी । मालूम होता था कि सन् १८५७ के बाद सन् १९४२ का ही दिन ऐसा है जो अंगरेजी शासन को मौत का पैगाम सुना रहा है देश के सभी दल देश की स्वाधीनता के लिये मैदान में आगये थे । कांग्रेस सत्याग्रह कर रही थी । रोज सैकड़ों लोग जेल की कोठरियों में

हूसे जा रहे थे। कांग्रेस का क्रान्तिकारी दल भी भगतसिंह के दल की याद दिला रहा। इस दल में लगभग सभी नवयुवक ही थे जिनका नया खून अपने देश के प्रति खौल रहा था। उन्हें उनकी जवानी धिक्कार रही थी कि इतने जवान वीरों से क्या फायदा जब कि उनकी भारत माता जंजीरों में जकड़ी ही रहे। जहाँ कहीं रेल की पटरियाँ उखाड़ी जा रही थीं...टेलीफोन की तारें तोड़ी जा रही थीं...सरकारी इमारतों को आग लगाया जा रहा था। रेल गाड़ियों को लूटा जा रहा था। अंगरेज अफसरों को देखते ही जिन्दा निगलने के लिये लोग दौड़ते थे।

अंगरेजी सरकार भी पूरी शक्ति से दमन की नीतिको अपना रही थी। सैकड़ों लोगों को सरे बाजार फाँसी पर लटकाया जा रहा था...लोगों को पैरों के साथ उलटा पटका कर उन पर बेतों की मार बरसाई जा रही थी। छोटे छोटे बच्चों को जलती हुई आग में फेंक दिया जाता था। और स्त्रियों—! स्त्रियों के साथ भ्रष्टाचार अत्याचार.....सब कुछ किया जा रहा था। यह सब हो रहा था एक विदेशी सरकार द्वारा। बंदूक और ब्रेनगन से जलूस के जलूस उड़ा दिये जाते थे।

ऐसे ही आग में राज भी अपने दस साथियों को लेकर जा पहुँचा एक गाँव में। वहाँ की जनता सो रही थी। दुनियाँ में क्या हो रहा है इसका कुछ ज्ञान न था। राज ने उन्हें फिफोड़ते हुये कहा—”ओ भारत के नौजवानों उठो.....जाग उठो भारत के बेटों। तुम्हारी माँ तुम्हें पुकार रही है...उसकी चीखों को सुनों...उसकी फरियाद को सुनों...उसके बहते आँसुओं को देखो, जो चालिस करोड़ बेटों के होते हुये भी गुलामी की जंजीरों में जकड़ी पड़ी है। उसकी जंजीरों को तोड़ डालो.....उसे चूर चूर कर जला डालो.....तानत है तुम नौजवानों पर

जो अब तक सो रहे हैं... चुल्लूभर पानी में डूब मरो देश के वीरों जो बुजदिलों की तरह विदेशी शासन की मार खा रहे हो... मुँह पर काला रंग लगा कर कहीं जा छुपो ताकि तुम्हारी कायरता को कोई देख न सके। वीरों उठो—तुम लोग भारत वासी हो—भारत के नागरिक हो—आर्यों की संतान हो। अपने देश को विदेशी शासन से मुक्त करो... गोरी चमड़ी को काली चमड़ी बना दो—। दोस्तों ! क्या जलयानवाला बाग की बह खूनी नदी भूल गये जो तुम्हारे ही भाइयों के खून से बनी थी— याद करो उस दृश्य को जब कि चारों ओर से बंदूकों और स्टेनगनों से अमृतसर की जनता को घेर लिया था और लाखों आदमियों को चने की तरह भून दिया गया था। दोस्तों ! उठो और एकवार फिर छत्रपति शिवाजी, और महाराणा प्रताप की याद को ताजा कर दो... उठो जवानों ! अगर अब भी सोते रहे तो याद रखो तुम सदियों तक सोते रहोगे... तुम्हारी माता सदियों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ी तड़पती रहेगी... उसका खून निकलता रहेगा और लाल बंदरों का शासन तुम लोगों पर सदियों तक चलता रहेगा।”

राज के चुप होते ही राजन चिल्ला पड़ा—। “इन्कलाब—!”
और गाँव की तमाम जनता चीख उठी—। “जिन्दाबाद !”
और फिर नारों पर नारे लगने लगे।

“भारत माता की जै।”

“अंगरेज भारत छोड़ो।”

“जवाहर लाल की जै।”

“इन्कलाब जिन्दाबाद।”

हजारों आदमियों की चीखें गूँज उठी।

“आओ मेरे साथ।” राज चिल्ला उठा।

और पूरी जनता राज के पीछे चल दी।

उनके नारों से गाँव की कच्ची जमीन काँप उठी। जैसे भारत माता की जंजीरे टूट रही हों। हजारों व्यक्तियों का जनसमूह पुलिस चौकी की तरफ जा रहा था। जलूस को देखते ही पुलिस भरी हुई बंदूकों को लेकर बाहर आ गई।

जनसमूह आगे बढ़ता ही गया।

पुलिस ने निशाने लगा लिये।

उठा हुआ तूफान पास आ गया।

अंगरेज अफसर चिल्ला पड़ा—। “वापस चला जा... नहीं तो हम तुमको मार डालेंगे... चला जा... तुम काला आदमी चला जा।” उसकी पिस्तौल की नली ठीक राज के सामने थी।

“भारत हमारा देश है, इसे तुम लोग छोड़ दो—।” राज गरज रहा था—। “यहाँ तुम्हारा कोई अधिकार नहीं। तुमने हमें गुलाम बना रखा है। हमारी दौलत पर कब्जा किया हुआ है। हमारे देश पर शासन किया है। तुम लोग चले जाओ। विलायत से आये हो विलायत भाग जाओ।” राज ने एक कदम आगे बढ़ाया।

“खबरदार ! अगर तुम आगे आया। गोली से एक एक को मार डालेंगे..... हम अपनी टाकट से आया है और टाकट से जायेगा... तुम काला.....”

“चुप रहो हरामजादे !” और राज एक साथ टूट पड़ा अंगरेज पर।

और—।

साथ ही पूरा जनसमूह शेर की तरह झपट पड़ा पुलिस पर। गोलियाँ बेतहासा चल उठी।

“आह—!”

“इन्कलाब जिन्दाबाद ।”

“भारत माता की जै ।”

“आह—।” “आह....।”

“भारत माता...आह ।”

“माता की जै ।”

गोलियों के चलते रहने पर भी लोग आगे बढ़ते गये और अन्त में तमाम सिपाहियों को पकड़ लिया ।

कुछ आदमियों ने चौकी को आग लगा दी ।

राज अंगरेज की छाती पर चढ़ा उसे बुरी तरह मार रहा था । दूसरा अंगरेज राजन के नीचे था । प्रत्येक आदमी ने अंगरेजों को लात से कुचला और फिर अधमरा कर उसी जलती हुई इमारत में फेंक दिया । चौकी के साथ ही वे दोनों विदेशी भी जल कर राख हो गये । कुछ सिपाही तो भाग गये और कुछ ने माफी माँग ली राजने उन्हें माफ कर दिया ।

बीस आदमियों को गोली लगी थी जिन में से दो तो मर चुके थे पर बाकी घायल हो गये थे ।

गाँव के पास दोनों की चितायें बनाई गई और.....

राज रो पड़ा—“आज दो शहीद हम से जुदा हो रहे हैं । लेकिन इनका खून वेकार नहीं जायेगा ।”

घायलों को पास के अस्पताल में पहुँचाया गया और राज अपने आठ साथियों को लेकर आगे बढ़ा । राज के दो साथी कम हो गये थे । उसने गाँववालों को कहा कि—“नीब को मजबूत बनाना अब तुम्हारा काम है हम नीब बन सकते हैं पर इमारत तुम्ही लोग बन सकते हो ।”

एक बार फिर “भारत माता की जै” हुई और राज दूसरे गाँव की ओर चल दिया ।

इस विद्रोह की खबर सरकार को लग गई थी और उन्हें यह भी मालूम हो गया था कि क्रान्तिकारी अब किस ओर जा रहे हैं।

राज के दूसरे गाँव में पहुँचते ही जनता पहले से तैयार बैठी थी। गाँव की दीवारें गूँज उठी।

लेकिन—

पूरी आवाज गूँजने से पहले ही गारद ने उन पर हमला कर दिया।

सैकड़ों पुलिस ने राज की टोली को घेर लिया। सब भाग कर छुप गये पर छुप न सके।

राज के सात साथी गिरफ्तार हो गये।

पुलिस ने दिल खोलकर गाँववालों पर अत्याचार किया।

अब राज का केवल एक साथी बचा था और वह था राजन ! दोनों पुलिस की नजरों से बचकर गन्ने के खेत में जा छुपे थे और वही से वे छुपते छुपते आगे बढ़ते जा रहे थे। एकाएक उन्हें गाड़ी की सीटी सुनाई दी। उन्हें मालूम हो गया कि पास ही कहीं स्टेशन है।

“अब क्या करना चाहिये राजन !” राज ने निराशा भरे शब्दों में पूछा।

“यही तो मैं भी सोच रहा हूँ। सभी साथी पकड़े जा चुके हैं।”

“मेरे ख्याल में तो वापस चला जाये और वहाँ पर सब हाल बताकर जैसा प्रोग्राम हो किया जाये।”

“जैसे तुम्हारी मर्जी।”

“तो चलो स्टेशन पास ही मालूम होता है, कोई गाड़ी आती होगी पकड़ ली जाये।”

दोनों खेतों के बाहर आये। गाँव बहुत पीछे छुट चुका था। स्टेशन पर जब पहुँचे तो मालूम हुआ कि अभी गाड़ी को आने में एक घंटे की देरी है। दोनों एक ओर बैठकर भविष्य का प्रोग्राम बनाने लगे।

अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि राज की दृष्टि थोड़ी दूर पर खड़े एक अंगरेज पर जा पड़ी जो एक व्यक्ति से झगड़ रहा था। व्यक्ति ने खहर का कुर्ता और गांधी टोपी पहन रखी थी। राज दौत पीसता हुआ उठा पर राजन ने उसे पकड़ लिया—“अभी नहीं राज !”

“अभी नहीं तो और कब—? जब शिकार हाथ से निकल जायेगा—?”

“समय आने दो। राजन ने इतना कहा ही था कि राज चीख उठा—। “देख लो राजन !”

राजन ने देखा—।

अंगरेज ने उसकी टोपी को उतार कर जमीन पर फेंक दी और उस पर अपना पाँव रख उसे मसल दिया—। “गांधी टोपी पहनटा है बदमाश ! हमारा दास और हमी से बगावट करटा है। तुम काले आदमियों को तो जिन्दा ही टोपखाने से उड़ा देना चाहिये। गांधी को मानटा है, हमारे दुशमन को हाथ जोड़ता है, कांग्रेसी है तुम और.....”

और तभी राज भूखे शेर की तरह उसपर दूट पड़ा।

“टुम.....टुम !”

“हाँ साला मैं हूँ कांग्रेसी...क्रान्तिकारी.....तुमने हमारी इज्जत को जमीन पर कुचला है।” राज के झटके को वह सह न सका। पाँव फिसला और धड़ाम से जा गिरा जमीन पर। राज उसकी छाती पर चढ़ बैठा। उसकी आँखों से खून उबल

रहा था। राज के एक ही घूसे से नाक टेढ़ी हो गई। खून की नली बह निकली.....।

“टुम.....टुम !”

“हाँ हम काला आदमी है। गांधी तुम्हारा दुश्मन है ना।

“न.....नहीं....।”

“नहीं....।” और राज ने मुँकों की बौछाड़ कर दी।

अंगरेज बेसुध हो गया।

लोग जमा हो गये। स्टेशन मास्टर ने पुलिस को फोन कर दिया।

“राज ! भाग चलो पुलिस आ रही होगी।

“तुम चुप रहो राजन !” राज चीख उठा। उसे राजन पर क्रोध आ रहा था कि अगर वह पहले ही आ जाता तो देश का ताज नीचे तो न गिरता।

राजन चुप हो गया। किसी व्यक्ति की हिम्मत न पड़ती थी कि वह अंगरेज को छूये।

अंगरेज बेसुध पड़ा था।

राज उठा—और

दाँत पर दाँत पीसा और...

और अपना भारी बूट उसकी कनपटी पर रख दिया।

उसने करवट लेना चाहा।

पर।

इससे पहले राज ने उसके सिर को कुचल दिया।

दिमाग का गूदा बाहर जमीन पर आ गया।

“ओ—!” चीख निकली और हमेशा के लिये वह ठंडा हो गया।

जिस तरह उसने गांधी टोपी को मसला था, उसी तरह

राजने उसके सिर को कुचल दिया। पूरा चेहरा भरता हो गया था !

तभी लोगों की आवाजें उठी—।” पुलिस !”

राज ने धूमकर देखा पुलिस उसको चारों ओर से घेरे हुई थी।

“तुमने इसे मारा है।”

“हाँ ?”

“क्यों—?”

“उसने हमारे ताज को कुचला, मैंने उसके सिर को कुचल दिया।” राज ने निडर होकर कहा।

“पकड़ लो बदमाश को।

“र...आ...!” राजन ने मुँह खोला ही था कि राज ने आँख के इशारे से उसे चुप करा दिया। वह नहीं चाहता था कि उसके साथ राजन भी पकड़ा जाये।

पुलिस राज को मोटर में बैठा कर थाने की ओर ले गई। और राजन रोता ही रह गया।

+

+

+

हाईकोर्ट में बड़ी चहल पहल थी।

कमरा खचाखच भरा हुआ था। आज राज के मुकदमें का फैसला था। उस पर अंगरेजी सरकार ने दो मुकदमें चलाये थे। एक राजविद्रोह का, बगावत का और दूसरे खून का।

सरकार ने कहा कि राज क्रान्तिकारी है और इसीलिये इसने कई सरकारी इमारतों को जलवाया है सरकार के विरुद्ध बगावत करके गद्दारी की है। और खूनी की हैसियत से इसने उस अंगरेज को मारा है जो सरकारी कर्मचारी था और पुलिस ने इसे रंगे हाथों पकड़ा है। इसलिये अदालत की ओर से इसे

कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिये ।

कोर्ट का प्रधान न्यायाधीश अंगरेज था और उसके जूरी भी आधे अंगरेज थे । सभी लोगों को विश्वास था कि राज को फाँसी की सजा होगी या काला पानी ।

“मुजरिम !” जज की आवाज गूँजी ।

“.....!” राज ने आँखें उठाकर जज की ओ देखा ।

“तुमने खून किया है—?”

“हाँ !”

“क्या तुम नहीं जानते थे कि खून करने की क्या सजा होती है—?”

“जानता था ।”

“टो फिर तुमने खून क्यों किया—?”

“माई लार्ड !” राज ने एक बार भरी अदालत की ओर देखा । उसके दल के सभी लोग थे । राजन भी एक किनारे खड़ा था—। “अगर कोई इन्सान किसी की कमजोरी से नाजायज फायदा उठाता है तो इसका मतलब यह तो नहीं कि वह कमजोर इन्सान अपना अस्तित्व भी खो बैठता है—। अगर ब्रिटिश सरकार ने हमारे देश पर अपना शासन जमाया है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम उसके दास हो गये हैं और हमारी इज्जत को जिस तरह चाहे वह लूटे । अगर आज हम गुलामी की जंजीरों में जकड़े हैं तो क्या हुआ—? हमारे सीने में भी दिल है, जो कभी तूफान भी पैदा कर सकता है—। माई लार्ड ! इन्सान को सबसे प्यारी अपनी जान होती है लेकिन उससे भी प्यारी चीज उसके देश की इज्जत होती है । दुनियाँ का कोई भी इन्सान यह नहीं देख सकता कि उसकी आँखों के सामने उसकी इज्जत उतार दी जाये—। माई लार्ड ! अगर आपके सिर का ताज जो

आपने पहन रखा है, अगर कोई उसे जबरदस्ती उतार कर आपकी आँखों के सामने उसे अपने पैरों से कुचल दे, तो क्या आप खामोश रहेंगे—? क्या आपके पिस्तौल की गोली उसके सीने से पार न हो जायेगी—? अगर आपसे ऐसा हो सकता है तो हर देशका नागरिक कर सकता है। और माई लार्ड ! अगर यह करना पाप है, गुनाह है तो मैं गुनाहगार हूँ। अगर इज्जत को लूटनेवाले की जान लेना जुर्म है तो मैं मुजरिम हूँ। उसने गांधी टोपी को पाँव से कुचल दिया, मैं देख न सका और मैंने उसके सिर को कुचल दिया।” राज चुप हो गया।

“दुमने सरकार के साथ बगावत भी की है।” जज ने फिर कहा।

“हाँ ! हर बँधा हुआ मनुष्य अपने बंधनों को तोड़ना चाहता है। हमारा देश गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ है, हम उसे तोड़ रहे हैं और...। इसीलिये मैंने बगावत की है। और माई लार्ड ! तब तक बगावत करता रहूँगा जब तक हमारा देश आजाद न हो जायेगा। निकम्मी सरकार का विरोध करना कोई बुरा काम नहीं।”

“और कुछ कहना चाहते हो—?”

“नहीं।”

जूरियों ने अपने फैसले जज के सामने रख दिये। भारतियों को छोड़ सभी जूरियों ने राज को फाँसी की सजा लिखी थी।

सब लोग साँस बंद किये जज का फैसला सुन रहे थे। जज ने फैसला सुनाते हुये कहा—।

“जहाँ तक मुजरिम के ऊपर खून का जुर्म है। वह जुर्म होते हुये भी जुर्म नहीं है। अगर इस आदमी की जान लेने वाला खूनी हो सकता है तो उससे बढ़कर वह खूनी होगा। जिसने देश

की इज्जत उतारी। इसलिये मुजरिम ने अपनी लुटती इज्जत के लिये अगर उसका गला घोंटा तो कोई जुर्म नहीं किया—। अब रहा बगावत का सवाल तो हर खराब शासन में लोग बगावत करते हैं, अगर मुजरिम ने किया तो क्या हुआ! लेकिन फिर भी कानून की नजरों में सरकार के खिलाफ बगावत करना जुर्म है और उस जुर्म के लिये मुजरिम को दो साल की कड़ी सजा दी जाती है।

जज ने फैसले पर दस्तखत कर दिये।

अदालत में तालियों के साथ आँसू भी बहे।

तालियाँ इसलिये बजी की एक अंगरेज होते हुए राज के साथ यह व्यवहार किया। उसने न्याय की कलम तोड़ कर रख दी थी। इससे बढ़कर और कोई न्याय नहीं हो सकता।

और आँसू इसलिये बहे कि देश का एक महान क्रान्तिकारी युवक दो वर्ष के लिये देश से अलग कर दिया गया था।

अंगरेजों ने इस न्याय के खिलाफ बहुत कुछ शोर मचाया लेकिन जज ने केवल यही कहा कि न्याय की कलम केवल एक ही बार चलती है। फैसला वही है जो दुबारा बदला न जा सके। अगर मैं अंगरेज हूँ तो क्या हुआ—? मेरे दिल में भी भारतीयों के प्रति जलन हो रही है कि इन्होंने मेरे एक अंगरेज भाई को मार डाला। लेकिन न्याय की कुर्सी पर बैठने के बाद वह जलन गायब हो जाती है! मैंने उसके साथ जो कुछ भी किया केवल एक न्यायाधीश की हैसियत से किया है, एक अंगरेज की हैसियत से नहीं।”

+

+

+

“देखा शैल! वह भी एक समय था जब कि हमने कांग्रेस में रह कर अपने आपको भुला दिया था। तुम तो अभी नई आई

हो ना—? इसीलिये उससे इतना प्रेम कर रही हो। लेकिन बाद में तुम्हें मालूम हो जायगा कि तुम एक ऐसी पार्टी की मेम्बर हो जो मूठी और धोखेबाज है।”

“क्या धोखेबाजी की है उसने तुम लोगों के साथ, जो दिन रात गालियाँ ही दिया करते हो—?”

“क्या यह कम धोखेबाजी है—? राज ही को देखो जिसने क्या कुछ न किया उनके लिये—? लेकिन आजादी के बाद तुम्हारी सरकार ने उसके लिये क्या किया—? कौन सा पद दे दिया उसे—? कौन सी इज्जत का बिल्ला लगा दिया उसके माथे पर—? जिस गांधी टोपी के लिये वह दो साल तक जेल में सड़ता रहा, उन गांधीवादियों ने उसके घर पर क्या भेजा—? उसकी अंधी माँ को कितनी सहायता दी तुम्हारी कांग्रेस सरकार ने—? अगर कुछ दिया तो यही कि उसकी भोपड़ी को आग लगा कर उसकी अंधी माँ को जलाया... उसको बे सरोसामान की हालत में दूसरे शहर दौड़ाया और यहाँ उसके साथ जो बरताव हुआ है और हो रहा है वह भी किसी से नहीं छुपा है, और यह सब कांग्रेस द्वारा हो रहा है इन सब की जिम्मेदार तुम्हारी कांग्रेस सरकार.....

तभी बाहर का दरवाजा किसी ने खटखटाया।

“शायद राज है।” राजन ने दौड़ कर दरवाजा खोला—।

“राज !” और लिपट गया उसके गले से। थोड़ी देर के बाद वह उसे कमरे में ले आया। शैल बैठी हुई थी।

“यह कौन है राजन !” राज ने आश्चर्य से शैल की ओर देखते हुये कहा।

“अरे तुम इसे नहीं जानते—? शैल है।”

“ओ शैल ! अब तो बहुत बड़ी हो गई। और एक जमाना

भंडा हमने उठाया तो अब कांग्रेस के विरुद्ध नहीं उठा सकते—?”

“आँखें खोलकर देख लो शैल ! फिर न कहना कि तुम्हारी मक्कार सरकार ने तो कुछ किया ही नहीं। वह तो देवता की तरह सीधी है।”

शैल उठ कर चली गई। राजन हँस पड़ा और राज आश्चर्य में पड़ गया।

“अच्छा राजन ! मैं भी चलता हूँ, फिर कभी मिलूँगा।”

“अपने मकान का पता तो बतादो—।”

“लिखो—! राज, रिक्सेवाला, लक्सा रोड—नम्बर ३०।३७।”

“किस समय रहते हो।”

“दोपहर को खाने के लिये आता हूँ और रात को सोने के लिये बस—।”

“अतवार को आओगे।”

“कोशिश करूँगा। अच्छा, नमस्ते—!”

“राज जब नीचे पहुँचा तो देखा शैल नाक मुँह चढ़ाये खड़ी थी। राज ने और भी चिढ़ाते हुये कहा। गांधी जी ! आपको अगर हमारी बातें बुरी लगी हैं तो लीजिये हम चले। नमस्ते !”

“जी.....।”

“फिर कभी।” राज उसकी बात को सुने बिना ही दरवाजे के बाहर चला गया। और राजन शैल के क्रोध पर खिलखिला कर हँस पड़ा।



“अब कैसी तबियत है धन्नू भइया ?”

“अभी तक तो जिन्दा हूँ राज ! आगे भगवान जाने ।”

“ऐसी बातें मुँह से न निकालो भइया ! कभी कभी.....!”

राज रुक गया कहते कहते ।

“रुक क्यों गये राज ! कह दो कभी कभी सच भी हो जाती है ।” धन्नू ने हँसने की कोशिश की पर सूखे हुये होठों से हँस न सका ।

“धन्नू भइया ! आपने मेरे लिये इतना कुछ किया, पर मैं आपके किसी काम नहीं आ रहा हूँ । आपने मेरी मौत को मुझसे बहुत दूर भगा दिया परन्तु मैं आपकी बिमारी को भी नहीं भगा सका । भला मुझसे भी बढ़कर कोई अन्यायी होगा—?

तुम कर भी क्या सकते हो राज—!.....बिमारी को भगाना तुम्हारे और मेरे बस की बात तो है नहीं ।”

“.....!”

“जमाने की क्या चाल ढाल है राज ! एक महीना हो रहा है बाजार का मुँह देखे । जी चाहता है कि टूटी कमर को ही लेकर सड़क तक जाऊँ लेकिन टाँगों ने भी तो दोस्ती छोड़ दी है । तुम्हारे आने से थोड़ी देर पहले एक जलूस काहे का गया था—?”

“मिल मजदूरों का होगा । चार रोज से उन्होंने हड़ताल जो कर रखी है ।”

“यह हड़ताल की बला भी अच्छी चलाई है महात्मा गांधी

ने। उन्होंने अंगरेजों को भगाने के लिये यह काम शुरू किया था लेकिन अब तो इसका जनता नाजायज फायदा उठा रही है। जहाँ देखो वहीं हड़ताल। कभी डाकखानों की हड़ताल तो कभी रेलगाड़ी के कर्मचारियों की हड़ताल। मेरी समझ में नहीं आता राज ! कि हड़ताल होने पर जो यह मिल मालिक इतना घाटा सह लेते हैं, अगर वही कुछ वेतन मजदूरों का ही बढ़ा दिया करें तो कौन सा हर्ज हो जाये—?”

“अगर हमारे भाइयों में इतनी ही समझ होती धन्नू भइया ! तो फिर रोना ही काहे का था इसी बुद्धिमानी के कारण तो आज हमारा देश बरबाद हो रहा है। दूसरा विदेशी चाहे भले ही क्यों न सब कुछ लूट कर ले जाये, लेकिन अपने भाइयों को यह एक पैसा भी नहीं दे सकते।”

“ऐसे ऐसे मौकों पर तो गुन्डे और दूसरे दलवाले भी लाभ उठाते हैं। कम्युनिस्ट, जनसंघी आदि तो हमेशा इसी ताक में लगे रहते हैं कि कहाँ हड़ताल हो कि वे अपना लाल और पीला झंडा लेकर पहुँचे। कम्युनिस्ट तो लगी हुई आग को और भी भड़का देते हैं। गरीबों के नाम पर अपनी ओर से कांग्रेस को गालियाँ देते हैं। वे तो चाहते ही हैं कि किसी तरह जनता सरकार का विरोध करे और वे अपना शासन जमायें—। और यह जनसंघ—यह तो और भी मुर्दा दिल है। इन्हें तो केवल कुत्तों की तरह भूँकना ही आता है। शेर की तरह मैदान में उतरना नहीं। जहाँ किसी ने कांग्रेस की कुछ बुराई की कि इन्होंने उसकी हाँ में हाँ मिलाकर सोने पर सोहागा डाल दिया। जरा उनसे पूछो तो सही कि अगर आज वे कांग्रेस की जगह होते तो क्या करते—? देशकी उलझी हुई दशा को देखते हो तो उनका दम घुटने लगता—। उस समय यह जनसंघ और हिन्दू

महासभा कहाँ गई थी जब कि अंगरेजों की तोपें भारत में गूँज रही थीं उस समय समाजवादी और साम्यवादी कहाँ जा छुपे थे जब कि पुलिस की लाठियाँ भारत पर पड़ रही थीं—। आज देश को आजादी मिली तो सभी दल बिस्तर पर से उठ बैठे और लगे सरकार की आलोचना करने कि सरकार ने यह नहीं किया और वह नहीं किया । अपने तालाब की तो थाह नहीं लगा पाते और लगते हैं समुद्र में गोते लगाने । कौन कम्युनिस्ट है जिनसे भारत की स्वतन्त्रता के लिये अपने आपको जेल की सीखों में बंद करवाया है । कौन है वह हिन्दू महासभाई जिस भारत माता की हथकड़ियों को अपने हाथों में पहना है—और कौन है वह जनसंघी जिसने गांधी और जवाहर के कंधे से कंधा मिलाकर सत्याग्रह में लाठियाँ खाई हैं ?”

“.....!”

राज चुपचाप सुन रहा था और धन्नू जोश में कहे जा रहा था—।

“शायद तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा राज ! कि मैं उसी कांग्रेस की बड़ाई कर रहा हूँ जिसने हमारे देश की ईंट ईंट उखाड़ फेंकी । जिसने आजादी के रूप में बरबादी ली...जिसने हमारे बच्चों की जाने लेकर हमारे घरों को तबाह कर दिया... जिसने भारत माता के सिर और धड़ को दो भागों में बाँट दिया—। लेकिन फिर भी राज ! उसने जो कुछ भी कर दिया चाहे अच्छा हो अथवा बुरा, वह दूसरा कोई भी दल नहीं कर सकता । कोई पार्टी अथवा दल खराब नहीं होता, बल्कि उसके कार्यकर्त्ता और अधिकारी ही चरित्रहीन होते हैं । नीब बनावे वाला हमेशा सीधी ही नीब बनायेगा लेकिन उस पर काम करने वाले कारीगर उस पर किसी भी प्रकार की इमारत बना

सकते हैं।”

“.....!”

राज फिर भी चुप रहा।

“क्या सोच रहे हो राज ! क्या मैं झूठ कह रहा हूँ—?”

“नहीं। तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो धनू भइया ! लेकिन अगर कारीगर टेढ़ी इमारत बनाते हैं, तो उन्हें हटा क्यों नहीं दिया जाता—?”

“अगर उनसे अच्छे कारीगर आ जायेंगे तो वे स्वयं ही हट जायेंगे।”

“यह कैसे हो सकता है—? कौन व्यक्ति अपने मिलते हुये पैसे को ठुकराना चाहता है।”

“तो तुम्हारा मतलब है कि उन्हें जबरदस्ती हटा दिया जाये—?”

“हाँ, और उनकी जगह दूसरों को काम पर लगाया जाये।”

“यह भी हो सकता।”

“हो सकता क्या हो रहा है।”

“.....!”

“खैर, छोड़ो इन सब बातों को धनू भइया ! तुम दवाई पीलो तो मैं बाहर जाऊँ।

“इस समय—?”

“हाँ, यह जो गली के पास वाला मैदान है ना—? वही पर रिक्सेवालों का जलसा है उसी में कुछ बोलना है।”

“यह काम कब से शुरू कर दिया—?” धनू ने आश्चर्य से पूछा।

“जब से रिक्सा चलाना शुरू किया। क्यों कोई बुरा काम है—?”

“यह मैं कब कह रहा हूँ कि यह बुरा काम है—? मेरे विचार में तो हमें संगठन अवश्य रखना चाहिये।”

“यही सोच कर तो अपने ही साथियों से यह काम शुरू किया है। अगर भगवान ने चाहा भइया ! तो मजदूर दल की मिटिंग भी करवा दूँगा।”

“अगर कहीं सरकार ने दया दिखाई तो—?”

“तो उससे डरता ही कौन है—? न्याय पर चलनेवाला, फाँसी के फंदे से नहीं डरता भइया ! वह तो केवल न्याय से ही डरता है। अगर जेल भी चला गया तो सोचूँगा कि अंगरेजों ने इतनी बार जेल में ठूँसा है कांग्रेस ने उसमें एक दो संख्या और जोड़ दी सही। लेकिन इन निर्धनों का तो कुछ फायदा हो जायेगा।”

“हाँ ! यह बात जरूर है।”

“अच्छा, काफी देर हो रही है।”

धनू ने दवाई पी और राज बाहर चला गया।

+

+

+

लगी चिनगारी हवा का झोंका पाते ही आग का रूप धारण कर लेती है और फिर वह आग आग ही होती हैं, जिसका काम ही अपने दुश्मनों को जलाना और जला कर राख करना होता है। राज के दिल की चिनगारी जमाने के झोंके खाते खाते आग का रूप धारण करती जा रही थी और रिकसे ने उसे विकास का और भी रास्ता दिखा दिया था। जिस आग को दिल में लेकर वह इस नये शहर में आया था उस आग की चिनगारी दूर दूर छिटकने लगी थी और फिर राजन के सहयोग ने उसे और प्रोत्साहित किया और उसने दिल की चिनगारियों को बाहर फेंकना शुरू कर दिया। उसे एक संगठन बनाने में इसलिये कोई कठिनाई

नहीं हुई क्योंकि वह तो पुराना खेलाड़ी था, केवल हथियार की कमी थी उसके पास। हाथ में हथियार आते ही उसने अपना खेल दिखाना शुरू कर दिया और अपने साथियों को भी उस खेल का सामीप्य बनवा लिया।

इस समय उसके पचास साथी थे और वे सभी उसी राह के राही थे जिसका राज। राज ने उन्हें उनके अधिकारों की ओर झुकाया और उनकी आँखों को खोलकर उन्हें दिखाया कि वे अपने अधिकारों को भूलकर केवल कर्तव्यों को ही निभा रहे हैं।

आज उसने उनको एक जगह इकट्ठा होने को कहा था और उनसे यह भी कहा था कि जितने भी राही मिलें सबको लेते आये ताकि सब भटके हुये राही मिलकर एक नये रास्ते का निर्माण करके उस पर चलें और अपनी मंजिल पर पहुँचे।

राज चलता जा रहा था। उसके दिमाग में विचारों का तूफान उठ रहा था। आज कई वर्षों के बाद वह जनता के अंग के सामने बोलने जा रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या कहना चाहिये। अपने भाषण में उसे सरकार की बड़ाई करनी चाहिये अथवा उसकी आलोचना कर लोगों में उसके प्रति विरोध की भावना उत्पन्न करने के लिये प्रोत्साहन देना चाहिये।

सोचते ही सोचते गली का वह भाग आगया जहाँ छोटा सा खड्गहर पड़ता था। वहीं पर लोग बैठे राज की राह देख रहे थे। यद्यपि राज भी उन्हीं की तरह एक रिक्सा चलाने वाला था, लेकिन फिर भी वे लोग राज की बातों से इतने प्रभावित हो चुके थे कि उनके लिये राज एक नेता की तरह था और वे उसे अपना नेता ही मानते थे। उन्हें विश्वास हो गया था कि अगर राज उनका साथ देगा तो वे अपनी गिरी हुई स्थिति को उठा सकने

में सफल होंगे और अपने स्तर को सँभाल सकेंगे। उन व्यक्तियों में सभी धर्म के लोग थे, सभी जाति के लोग थे। लेकिन राज को इससे मतलब न था वह तो मनुष्य था और मनुष्य को ही चाहता था।

राज को देखते ही सब लोग उठ खड़े हुये।

एक बार उसने अपने साथियों की ओर देखा और फिर बोलना शुरू किया—।

“भाइयों—! आप लोग इतनी देर से मेरी राह देख रहे थे पर मुझे आने में कुछ देर हो गई इसके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। आप जो मुझे देखकर उठ खड़े हुये थे इसके लिये मैं आभारी हूँ। दोस्तों मैं भी आप की ही तरह एक रिक्सा चलाता हूँ। अन्तर केवल यही है कि मैं कुछ पढ़ा हुआ हूँ और आप.....।” क्षणभर के लिये वह चुप हो गया और फिर बोलना शुरू किया—। “आज मैंने आप लोगों को इसलिये बुलाया है ताकि कुछ मैं आप लोगों से कह सकूँ और कुछ आपकी सुन सकूँ। यद्यपि मुझे मालूम है कि मैं न तो आपके काँटों को ही दूर कर सकता हूँ और न आपकी समस्याओं को ही सुलझा सकता हूँ लेकिन फिर भी मैंने आप लोगों को यहाँ आने का कष्ट दिया। दोस्तों! इन्सान शुरू से ही अपने आपको सँभालता आया है। वह अपने आस पास का वातावरण साफ करता आया है। अगर कभी उसे इस बात का संदेह होता है कि वह वातावरण उसे खराब कर देगा तो वह या तो उस वातावरण को ही समाप्त कर देता है या स्वयं ही वहाँ से हट जाता है। इस तरह वह अपनी स्थिति को हमेशा मजबूत बनाये रहता है। और हर मनुष्य को चाहिये कि वह अपना कदम अपने भविष्य को सोचकर रखे। आज के युग में जो हवा चल रही है उससे हमें और आपको

बचना चाहिये। क्योंकि यह धारा एक ऐसी धारा है जो अपने साथ बरबादी को छुपाये हुये हैं और इसकी लपट में आया व्यक्ति कभी भी अपने आपको नहीं संभाल सकता। इसलिये मेरे दोस्तों ! आज जो हमारी दशा हो रही है उसको देखते हुये हमें यह कहना पड़ता है कि इस दशा के पीछे भी बहुत कुछ छिपा है। अगर हम अपनी स्थिति को सुधारना चाहते हैं, अगर हम चाहते हैं कि हमारा सामाजिक स्तर ऊँचा हो तो हमें इसके लिये एक आंदोलन चलाना होगा। एक संगठन करना होगा और उस संगठन के द्वारा हम अपनी स्थिति को सुधारते हुये आगे बढ़ सकते हैं। आंदोलन का अर्थ यह नहीं होता कि खून बहाया जाये। क्योंकि अब हमारी ही सरकार है। हमारा स्वतन्त्र देश है और उस स्वतन्त्रता को हमें बनाये रखना है। अगर घर का कोई सदस्य किसी बुरे रास्ते पर चला जाता है तो इसका मतलब यह नहीं कि उसे घर से निकाल दिया जाये या उसे मारकर हमेशा के लिये समाप्त कर दिया जाये। बल्कि उस बिगड़े सदस्य को सुधारना चाहिये उसकी आँखें ठीक रास्ते पर ले जानी चाहिये और इसके लिये उसके साथ प्यार और नफरत, सख्ती और नरमी दोनों ही करनी पड़ती है। मनुष्य की आदतें अगर बिगड़ती हैं तो सुधर भी सकती हैं। अगर हमारी सरकार में कुछ व्यक्ति ऐसे आगये हैं जो अपने स्वार्थ के लिये पूरी सरकार को बदनाम कर रहे हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि हम उस सरकार के खिलाफ इन्कलाब का नारा लगायें और उसका अन्त कर दूसरी सरकार बनायें। बल्कि हमें उसी सरकार को सुधारना है और उन धोखेबाज और बेइमान व्यक्तियों को निकालना है जिन्होंने अपनी गंदगी से सारे तालाब को गंदा कर रखा है। हमें न तो कम्युनिस्टों की तरह नारों और तलवारों से आंदोलन

करना है और न महात्मा गांधी की शान्ति के सिद्धान्त को ही मानना है। बल्कि उन दोनों के बीच के रास्ते पर चलना है। दोस्तों ! मैं जानता हूँ कि बिना संगठन और एकता के कुछ भी नहीं हो सकता और इसीलिये मैंने आप लोगों को बुलाया है कि आप ही उस एकता की डोर और एकता के मोती हैं जो जिस रूप में चाहें परोये और बाँधे जा सकते हैं। और अन्त में मैं आपसे यही कहूँगा कि हमें अब जागना चाहिये, अपने अचेतन मन को चेतना के मंच पर लाना चाहिये और अपनी समस्याओं की एक एक गाँठ को खोलना चाहिये। हमें न्याय का झंडा पकड़ना चाहिये और मानव दल की स्थापना करनी चाहिये जिसका उद्देश्य मानवता हो जिसका सिद्धान्त इन्सानियत हो—।”

राज के चुप होते ही लोगों ने उसका स्वागत तालियों से किया और एक नेता की तरह उसके चारों ओर घिर गये।

राज ने कहा—! “अच्छा भाइयों अब आप लोग जाइये। यह हमारी पहली मुलाकात की नीव थी अब उस पर इमारत बनाना आपका काम है आप चाहें तो उस नीव को खूबसूरत महल का रूप भी दे सकते हैं और चाहें तो उस नीव को खँड़हर भी कर सकते हैं।”

“हम महल बनायेंगे।” एक साथ सब बोल उठे।

राज ने सबको बिदा किया और फिर दो चार व्यक्तियों के साथ अपने मकान की ओर चल दिया।

“आओ, आज तुम्हें शहर की रंगीनियाँ दिखालाऊँ।”

“आज नहीं फिर कभी सही।”

“क्यों—?”

“अभी तो रिक्शा जमा करके आ रहा हूँ। हाथ पाँच थक के चूर हो रहे हैं और तुम कह रहे हो कि शहर घुमा लाऊँ।”

“इसीलिये तो कह रहा हूँ कि अगर यहाँ की उड़ती हुई चिड़ियों को देखोगे तो तमाम थकावट दूर हो जायेगी।”

“और भूख—?” राज ने ऐसा मुँह बनाया जैसे पूछ रहा हो कि उन चिड़ियों को देखने से पेट की भूख भी दूर हो जायेगी—?”

“इसीलिये तो मैंने भी अभी खाना नहीं खाया।” राजन हँस पड़ा।

“खैर, चलो! कुछ तो सवारियों को घुमाते घुमाते शहर को देखा और अब जो बच गया है उसे तुम दिखा दो।” राज ने मैले कपड़े को उतार कर साफ कपड़े पहने। बालों में कंधी लगाई और राजन के कंधे पर हाथ रखते हुये कहा—
“चलो भाई।”

दोनों जब सड़क पर आये तो रात की रोशनी शुरू हो चुकी थी। दुकानों की बिजलियाँ चमक उठी थीं और लोग अपने आपको सजाये हुये मस्ती से घूम रहे थे। इस समय राज, एक रिक्सा चलानेवाला नहीं मालूम पड़ रहा था बल्कि किसी

कालेज में पढ़ने वाला विद्यार्थी दिख रहा था। चलते चलते राजन एक अधखुली सड़क की ओर घूम पड़ा—“इस बाजार का नाम तो तुम जानते ही होगे।”

“अच्छी तरह!” राज ने सजी दुकानों को देखते हुये कहा—। और कई बार तो यहाँ की सवारियों से पैसे लेने ऊपर भी गया हूँ।”

“और—।” राजन ने मजाक उड़ाया।

दोनों अब उस बाजार को पार करके एक चौड़े बाजार में आ पहुँचे थे।

“इस बाजार को भी जानते ही होगे।”

“हाँ!” एकाएक राज का चेहरा गंभीर हो गया।

“क्या बात हुई राज—?”

“कुछ नहीं... अगर इस बाजार को न जानता होता तो शायद यहाँ से मुझे काफी फायदा होता।”

“वह कैसे—?”

“एक एक सवारी से दुगुना और तिगुना केराया मिलता। लेकिन मुझे मालूम हो गया था कि यहाँ लखपतिसे नीचे कोई रहता ही नहीं है, इसलिये मैंने यहाँ आना छोड़ दिया। आज तक मैंने किसी फूली तोंदवाले को अपने रिक्से पर नहीं बैठाया। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि उनकी अपवित्र बिमारी को अपने रिक्से के साथ लगाऊँ। और इसीलिये इन पूजीपतियों के बाजार में आना भी बंद कर दिया।”

दोनों आगे बढ़ते जा रहे थे—। और यह देखो आलीशान होटलों की इमारतें जो चाँदनी रात में दूध से नहाई हुई मालूम होती हैं।” राजन ने चमकते हुये होटलों की ओर इशारा करते हुये कहा।

“हाँ और यह भी जानता हूँ कि यहाँ केवल चमकते कपड़ों वाले ही आते हैं। यहाँ भी हम लोगों का ठीकाना नहीं होता—।”

“क्यों—?”

“क्योंकि यहाँ लोग रेक्से पर चढ़कर आना अपनी बेइज्जती समझते हैं। या तो वे लोग मोटरों पर चढ़कर आते हैं और अगर उनके पास मोटरें न हुई तो कोई केराये की टेक्सी पकड़ लेते हैं और उस पर अपना मूठा दावा करके यह कहने लगते हैं कि हम दौलतमंद हैं... हम होटलों को खरीद सकते हैं और दुनियाँ को भी खरीद सकते हैं।

दोनों और आगे चले सिनेमाघरों को देखते हुये राजन एक गली में घुस गया। राज को आश्चर्य हुआ कि राजन बाजार को छोड़ गली में क्यों चला गया—। “इधर क्या है राजन?”

“जो कुछ उधर है। इधर भी एक बाजार है। जिसे तुमने शायद नहीं देखा होगा।”

“अगर रिकशा इसके अन्दर जाता तो शायद इसमें भी पहुँच जाता और फिर तुमसे कहता कि यह बाजार भी देखा हुआ है।”

“इसीलिये तो तुम्हें यहाँ ले आया हूँ ताकि तुम कुछ और अधिक अनुभव कर सको। और यह देख सको कि दुनियाँ कितनी बड़ी है।”

अब तो भई, भूख लग रही है। हो सके तो चलो किसी होटल में बैठ जाया जाये। लेकिन राजन! अपने राम तो उतना ही पैसा खर्च सकते हैं जितना एक रिक्सेवाला खर्चता है।”

“इसीलिये तो इन होटलों में तुम्हें ले आया हूँ ताकि तुम इनके भी समान को देख लो।” राजन क्षणभर के लिये खड़ा हो इधर उधर देखने लगा और फिर राज की ओर देखते हुये कहा—। “वह सामने वाला होटल सस्ता और अच्छा मालूम

होता है।”

“चलो उसी में सही।” राज भी उसके साथ चल दिया। लेकिन उसके पास पहुँचते ही राज ने आश्चर्य से पूछा—!

“राजन ! यह होटल है या किसी का घर—?”

“क्यों—? राजन धीरे से मुस्कुरा दिया।

“बाहर तो कोई भी बोर्ड दिखाई नहीं देता।”

“बोर्ड की जरूरत ही क्या है—? कुछ ग्राहक बँधे हैं, रोज आते हैं पेट भरते हैं और रास्ता पकड़ते हैं।”

तभी दो व्यक्ति ऊपर से उतरे। किसी अच्छे घर के मालूम होते थे। राज को यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि इतने छोटे से होटल में यह लोग—? लेकिन कुछ पूछ न सका उनसे कि यह खाने का होटल है अथवा…………

“खड़े क्या हो, ऊपर चलो।” राजन ने राज को कूँहनी मारते हुये कहा।

दोनों सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर पहुँचे तो काफी रोशनी दिखाई दी। बरामदे में मेज कुर्सियाँ सजी हुई थी और एक कोने में काउन्टर पर एक युवती बैठी थी।

“यह यहाँ की मैनेजर है क्या—?” राज ने पास खड़े बैरे से पूछा।

“जी नहीं ! मैनेजर साहब उस कमरे में हैं।” उसने बगल वाले कमरे की ओर इशारा किया।

“खैर, कुछ खाने के लिये लाओ।” राज ने कुर्सी पर बैठते हुये कहा। बैरा काउन्टर के पास जाकर युवती से कुछ बातें करने लगा। राज को यहाँ की व्यवस्था देखकर बहुत घृणा सी हो रही थी। उसने राजन से धीरे से कहा—। “राजन ! यहाँ खाने का तो दिल नहीं करता लेकिन चूकि आगये हैं तो इसलिये चाय

ही पीलें।”

“जैसी तुम्हारी मर्जी।”

राज ने बैरे को फिर बुलाकर कहा कि—। खाना रहने दो केवल दो कप चाय ही लेते आओ।

“बहुत अच्छा।” कहकर बैरा फिर चला गया। अब की वह एक दूसरे कमरे में चला गया था।

“राजन—!” राज ने समय काटने के लिये कहा—। “देखते हो दुनियाँ कितनी तेजी से बदलती जा रही है। कितना नीच होता चला जा रहा है मानव—? जिधर देखो रुपये की ही भूख बरस रही है। औरतों को होटलों में बैठाकर रुपया कमाने का रास्ता खोजा जा रहा है। ग्राहकों को लूटने की तरकीबें सोची जा रही हैं। अगर अब भी हमारा समाज तबाह न हुआ तो फिर कब होगा—? वाहरे भारत, और वाहरे भारत की संतानों। अगर तुम्हारे जैसा देश उन्नति नहीं करेगा तो और कौन करेगा?”

राज कहे जा रहा था और राजन मुँह पर रुमाल रखे मुस्कुरा रहा था।

“तुम मुस्कुरा रहे हो राजन ! शर्म आनी चाहिये तुम्हें अपने भाइयों की यह हालत देखकर।”

“मुझे तुम पर हँसी आ रही है कि तुम भी कितने भोले हो—? अरे अभी तो रंगीनियों की पहली ही सीढ़ी है।”

“तो क्या अभी और सीढ़ियों पर चढ़ने का विचार है क्या—?”

“कम से कम दो चार सीढ़ियाँ तो और देखलो—।”

राज को एक ओर तो राजन पर क्रोध आ रहा था कि किस दलदल में ला फँसाया और दूसरी ओर उस बैरे पर क्रोध आ रहा था कि आधे घंटे से चाय ला रहा था। तभी बैरा ने

आकर कहा—“चलिये बाबूजी !”

“कहाँ—?” राज घबड़ा गया ।

“चाय तैयार है ।”

“तो यहाँ ले आओ ।”

“आप शायद पहली बार यहाँ आ रहे हैं । इस होटल में चाय यहाँ नहीं आती आपको ही जाकर पीना होगा ।”

राज थोड़ी देर तो सोचता रहा और फिर यह समझ कर कि शायद यहाँ का रिवाज ही ऐसा हो चुपचाप उठ खड़ा हुआ । राजन चुपचाप बैठा था—। “तुम बैठे क्यों हो ?” राज ने पूछा राजन भी उठा और दोनों बैरे के पीछे हो लिये ।

बैरा दोनों को एक कमरे में ले गया और कहा “यही बैठ जाइये”

दोनों दो कुर्सियों पर बैठ गये ।

बैरा बाहर चला गया । राज ने एक बार कमरे के चारों ओर देखा तो उसकी दृष्टि कमरे के अन्दर ही एक दूसरे कमरे में पड़ी जहाँ बिल्कुल अँधेरा था । राज अन्दर अन्दर ही जल रहा था—। “अजीब होटल है ।”

तभी उस अँधेरे वाले कमरे से एक महीन आवाज आई—। “इधर आइये ।”

राज चौंक कर उठ खड़ा हुआ ।

उसकी दृष्टि अँधेरे कमरे की ओर गई ।

और—!

एक युवती को देखकर वह सन्न रह गया ।

“यह सब क्या है राजन—?”

“देखते चलो—।”

और राज ने देखा कि दो युवतियाँ उनके सामने आ

खड़ी हुई ।

“आइये बाबूजी !”

“कहा—?” राज ने पूछा ।

“आपको चाय चाहिये ना—? गरम गरम चाय । आइये हमारे साथ ।”

अब राज को सब कुछ समझते देर न लगी । वह जान गया कि यह होटल नहीं बल्कि.....

और अधिक वह कुछ भी न सोच सका । दरवाजा खोल जा पहुँचा मैनेजर के कमरे में । वह पहुँचते ही राज पर जैसे बिजली गिर गई हो । एक व्यक्ति गांधी टोपी और खदर का कुर्ता पहने बैठा था । उसके पास ही एक युवती बैठी थी जिसकी आधी साड़ी मैनेजर की धोती को ढाँके हुये थी ।

राज का खून खौल उठा—। “तो आपही हैं यहाँ के मैनेजर ।”

“क्यों क्या बात हुई—? इन्तजाम अच्छा नहीं है क्या—?”

“इन्तजाम भी अच्छा है और आप भी अच्छे हैं—।” राज ने घृणा की दृष्टि से देखते हुये कहा—। “आपको शर्म नहीं आती यह होटल चलाते हुये—?”

“इसमे शर्म की क्या बात—? यह तो व्यापार है, और व्यापार में कोई भी काम बुरा नहीं होता । और फिर चोरी से तो कर नहीं रहा हूँ । सरकार का लाइसेंस है मेरे पास ।”

“अब मालूम हुआ कि तुम जैसे कांग्रेसियों का यही काम है । जरा शीशे में अपनी शक्ति को तो देखो जिसने गांधी टोपी लगाकर पाप का बेड़ा सिर पर उठा रखा है । अगर तुम जैसे लोग कांग्रेस में होंगे तो फिर भला क्यों न उसकी बदनामी होगी । कांग्रेसी बनते हो—? चुल्लू भर पानी में डूब मरो जो अपनी माँ बहनों को इज्जत को रुपयों के बदले बेच रहे हो ।

जिस संस्था को उन महापुरुषों ने अपने खून से सींच सींच कर इतना फैलाया अब तुम्हारे जैसे नालायक लोग उसे बदनाम कर रहे हैं। तुम्हारे जैसे धोखेबाज लोग खहर को जला रहे हैं, उसके महत्व को खाक में मिला रहे हैं, सैकड़ों सालों से बनी इमारत को जर्जर कर रहे हैं।”

मैनेजर चुप हो गया था। उसे क्या मालूम था कि कभी यह भी हो सकता है कि कोई उसके घर ही आकर उसी के मुँह पर तमाचा मारे। वह तो सोच रहा था कि खहर के कपड़े सबकी जुबान रोक सकते हैं।

राज उसे घूरता हुआ बाहर निकल आया। बाहर राजन गम्भीर खड़ा था।

इसीलिये मुझे यहाँ लाये थे—?”

“हाँ! ताकि तुम्हें मालूम हो जाये कि तुम्हारी सरकार क्या कर रही है। ताकि तुम अपनी आँखों से गांधीवादियों के कारनामों को देख सको। यद्यपि मैं इसके बारे में सब कुछ जानता था, लेकिन फिर भी तुम्हें भी दिखाना चाहता था कि हमारा समाज कितनी तेजी से विनाश की ओर बढ़ता जा रहा है। और अगर अब भी इस खुदी हुई खाई को भरा न गया तो हम सब उसी में गिरकर समाप्त हो जायेंगे।”

“चलो।”

दोनों फिर सड़क पर आ गये।

“और कुछ देखोगे—?”

“नहीं राजन! बहुत देख लिया। अब तो अपने आप को देखना है कि.....।”

“कि क्या—?”

“कुछ नहीं।” राजने बात को पलटते हुये कहा—। “अब

घर चलो काफी रात हो गई है ।”

दोनों दोस्त चल दिये वापस घरों की ओर ।

वहाँ के बाजार वैसे ही सजे हुये थे और हर व्यापारी अपने काम में उसी तरह लगा हुआ था ।

१४

“कौन, भइया !”

“हाँ !” राजन गम्भीर था उसकी लाल आँखें बंद होती जा रही थीं ।

“आजकल तुम्हें हो क्या गया है भइया ! जो इतनी रात गये घर से बाहर रहते हो ।” शैल ने परेशान होकर पूछा ।

“कुछ नहीं” तू जा सो जा । यह सब तेरे काम की बातें नहीं हैं ।” राजन ने सीढ़ियाँ चढ़ते हुये पूछा—“माँ सो गई हैं क्या—?”

“हाँ ! लेकिन तुमने अपनी दशा क्या बना रखी है ।

“एक बार जो कह दिया, कि तेरे काम की बात नहीं है ।” उसका चेहरा उतरा हुआ था ।

“चाहे जो हो तुम्हें बताना ही होगा भइया कि इतनी रात तक कहाँ रहे !”

“शमसान घाट !”

“शमसान घाट—” वहाँ क्या करने गये थे—?”

“एक गरीब की चिता बनाने । समझी—! जो तुम्हारे इस

समाज के हाथों तंग आकर यहाँ से चला गया है। और अपने दो छोटे छोटे बच्चों और स्त्री को छोड़ गया है।” राजन शैल को घृणा की दृष्टि से देख रहा था जैसे उसे शैल से भी नफरत हो गई हो—। “जाकर अपने समाज से कह दो शैल ! कि अब वह उन बेगुनाहों को भी सतायें ताकि वे भी अपने पति और पिता की तरह चिता में जा सोयें अथवा किसी नदी में अपने आपको रस्सियों से बाँध कर फेंक दें।”

“मरने वालों को कोई नहीं रोक सकता भइया ! फिर तुम इस समाज पर दोष क्यों लगाते हो—?”

“कुछ को भगवान मारता है और कुछ को तुम्हारी यह दुनियाँ—! आज जितने भी गरीबों के शरीर शमशान घाट के किनारे जलते हैं उन सबका जिम्मेदार तुम्हारा यह समाज है। हाँ, हाँ, यह तुम्हारा समाज ही उनकी मौत का कारण है। इसने उनकी स्थिति को इतना नीचे गिरा दिया है, इतना नीचा कि वे उठ नहीं सकते—। उनका स्तर... उनका रहन-सहन इतना बिखर चुका है कि वे बंटोरे नहीं जा सकते और उसको बटोरते ही बटोरते उनकी कमर टूट जाती है और वे दम तोड़ देते हैं। उनके पास इतना रुपया नहीं होता कि वे अपनी बिमारी का इलाज करा सकें, डाक्टरों को फीस दे सकें—। उनके पास इतने पैसे नहीं होते कि वे अपने बच्चों को शिक्षा दिला सकें। जिसका नतीजा यह होता है कि वे तन से नंगे और पेट से भूखे ही आगे बढ़ते हैं। मिट्टी में खेलते खेलते उनका जीवन भी मिट्टी हो जाता है। लोगों को ललचाई हुई आँखों से देखते ही देखते वे जवान होते हैं और उसी जवानी में वे अपने बुढ़ापे को पाल लेते हैं जिससे बुढ़ापे के आने से पहले ही वे मौत की गोद में सो जाते हैं। उनकी बिलबिलाती बीबी और बच्चे दर दर की भीख माँगते हैं...”

बोगों के सामने हाथ पसारते हैं... आँसू बहाते हैं और तुम्हारा समाज उनकी इस दशा को देखकर जलता है... खिलखिला कर उनका मजाक उड़ाता है... उनकी कमजोरी से नाजायज फायदा उठाता है... और जब उसका काम पूरा हो जाता है तो उन्हें लात मार कर दूसरे दरवाजे का रास्ता दिखाता है—। तो क्या इन सब का जिम्मेदार तुम्हारा यह समाज नहीं है—? क्या तुम्हारी दुनियाँ उनके मौत का कारण नहीं है—?

“.....!”

“बोलो ! क्यों अब तुम्हारे पास इसका कोई जवाब नहीं है—? शैल ! समाज में रह कर समाज के नियमों को मानना बहुत कठिन है। आज कितने पूँजीपति हैं जो कि समाज के नियमों को मानते हैं—? कितने ऐसे लोग हैं जो उसके ठीक रास्ते पर चलते हैं—? कोई नहीं—। जो यह कह सके कि वह समाज के नियमों को मानता है कोई पूँजीपति ऐसा नहीं है जिसने उसका ठीक रास्ता पकड़ा। सभी उसके नियमों को तोड़ते और मनमानी करते हैं लेकिन उन्हें कोई कुछ नहीं कहता। क्योंकि वे समाज के ठेकेदार हैं... रहनुमा हैं रक्षक हैं और... और इसीलिये जो चाहते वही करते हैं—। लेकिन जरा दूसरी ओर भी घूमकर देखो, जिन्हें तुम्हारा समाज नीच, जलील, नालायक और कमीने कहता है, जो दिन रात तुम्हारे समाज की सेवा करते हैं... उसके पाँव को धो धोकर पीते हैं... उसके भारी बोझ को अपने कंधे पर उठाते हैं। उसके बनाये नियमों को देवता की तरह पूजते हैं... मरते मर जाते हैं लेकिन उन कानूनों को नहीं तोड़ते—। तुम्हारा समाज अगर उन पर मूठा इलजाम लगाकर उन्हें अपने में से निकाल देता है तो वे आफ तक नहीं करते... उनकी पीठों पर कोड़े मारता है तो वे आह

तक नहीं भरते ।”

“तुम तो छोटी छोटी बात पर नाराज हो जाते हो भइया !” अन्त में शैल ने अपनी हार मानते हुये कहा— “मैंने तो यूँ ही पूछ लिया था ।”

“हाँ, बकरी की जान जाये, और खाने वाले को मजा ही न आये । किसी की दुनियाँ उजड़ गई और तुम लोगों के लिये छोटी सी बात ही है ।”

“खैर, खाना भी खाओगे या यूँ ही खड़े रहोगे ।”

“मैं खाना नहीं खाऊँगा और तुम जाओ आराम से सो जाओ ।”

“और तुम—?”

“मेरा क्या—? तीन बज ही गये हैं और दो तीन घंटे हैं, बैठे ही बैठे गुजर जायेंगे ।”

“नहीं भइया ! अगर सोइएगा नहीं तो तबियत खराब हो जायेगी—।”

“बस और कुछ तो नहीं होगा—?”

“भगवान न करे और कुछ हो ।”

“और अगर हो गया तो—।”

“भइया !”

“शैल !”

“खाना खालो भइया ! मैं जानती हूँ कि उसकी मौत पर तुम्हें कितना दुख है लेकिन क्या दुख करने से या रोने से मरा हुआ जिन्दा हो जायेगा ।”

“अगर जिन्दा नहीं होगा तो कम से कम उसकी आत्मा को शान्ति तो होगी कि दुनियाँ में उसे भी याद करने वाले कुछ उसके भाई हैं ।” राजन ने एक ठंडी साँस भरते हुये कहा—। “उस

बैचारे की दशा को याद करके अब भी दिल भर आता है शैल !
उसके घर में इतने पैसे भी नहीं थे कि उसके लिये कफन तक
लाया जाता—।”

“तो क्या बिना कफन के ही उसे जला दिया गया—?”

“नहीं, कुछ लोगों ने पैसे मिलाये और दो गज कफन लाया
गया। उसका शरीर सूखकर लकड़ी हो गया था। खून का तो
कहीं निशान तक न था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह खून
पानी भी बनकर नहीं रहा। जलने के बाद उसकी हड्डियों को
देखा गया तो देखने वाले रो उठे। तमाम हड्डियाँ छल्लनी की तरह
छेदी हुई थीं जैसे मदमक्खी का जाला होता है। बिमारी के
कीड़ों ने उसे चाट चाट कर बेजोड़ कर दिया था।”

“लेकिन अब उसको सोचने से क्या होगा।”

“यही मालूम होगा कि हर व्यक्ति की यही दशा होती है
लेकिन फिर भी लोग यह जो दुनियाँ भर के परपंच रचाये रहते
हैं, इनसे क्या फायदा—? शैल ! क्या यह बड़ी बड़ी कोठियों
वाले हमेशा जिन्दा ही रहेंगे—? क्या यह पूँजीपति मरने के
बाद अपनी तिजोड़ियों को अपने साथ लेते जायेंगे—?

“नहीं”

“अगर नहीं तो फिर क्यों यह दूसरों को समय से पहले
मारना चाहते हैं—? क्यों वे निर्धनों के साथ अन्याय करते
हैं—?” अगर वे अपनी रोटी में से एक टुकड़ा गरीबों को भी
दे दिया करें तो क्या वे मर जायेंगे—? अगर नहीं तो फिर क्यों
नहीं वे ऐसा करते ?”

“.....!”

“बोलो शैल ! आखिर उन्हें इन सब से क्या मिलता है—?”

“.....!” वह फिर भी चुप रही। और जवाब भी

क्या देती। क्योंकि वह तो जानती थी कि एक जवाब देने का अर्थ है दस बातों को सुनना और दस बातों के लिये सौ बातों का इन्तजार करना होगा।

“खैर, शायद तुम्हें नींद आ रही है।”

“नहीं तो—?” शैल ने चौंकते हुये कहा।

“मैं तुम्हें अपने साथ नहीं जगाना चाहता, इसलिये तुम जाओ।

“लेकिन खाना···!”

“मुझे भूख नहीं है।”

“थोड़ा सा—।”

“बिल्कुल नहीं।”

“नहीं तो न सही, मैं तो चली।”

“तो तुम्हें रोका किसने है।

शैल उठकर चली गई और राजन फिर सोचता रहा उसके और उसकी बीबी बच्चों के बारे में।

“अब कैसे बे अपना दिन बितायेंगे—? जिनके घर से कफन के लिये पैसे न निकले वहाँ से रोटी के लिये कहाँ से पैसा आयेगा। कौन देगा उसे सहायता? सभी तो स्वार्थी और मतलबी हैं। जिसे देखो वही अपने फायदे के लिये ही कोई काम करता है। अगर वह भीख माँगती हैं तो हो सकता है कि जमाना उनकी कमजोरी का दुरुपयोग करे। और यह भी संभव है कि वह अपने जीवन से घबड़ा कर आत्महत्या करले। लेकिन उसके बच्चे—? उसके बच्चे क्या कर सकते हैं, जिन्हें खुद अपने आप की होश नहीं। और·····

और सोचते ही सोचते उसकी आँख लग गई।

उसके माथे की सिंकुड़ने अब भी गवाही दे रही थी कि उसकी

आत्मा किन्हीं उलझनों को सुलझाने की कोशिश कर रही है।

+

+

+

“आज किस घाट किनारे गये थे।”

“.....।”

“बोलो भइया ! आज इतनी रात तक कहाँ रहे।

“न पूछो तो अच्छा है।

“क्यों—?”

“क्योंकि तुम्हें बुरी लगेगी।” राजन ने एक बार शैल की ओर देखा और फिर अपने कमरे की ओर चल दिया। लेकिन शैल कब मानने लगी। वह भी पीछे पीछे जा पहुँची उसके कमरे में।

“कौन ऐसी बात है जो मुझे बुरी लगेगी”—?”

“यही कि तुम्हारी सरकार के खिलाफ हम काम कर रहे हैं।”

“क्या मतलब—?” उसकी दिलचस्पी और बढ़ी।

“यही कि राज ने मजदूरों का एक दल बना रखा है और मैं भी उस दल के संगठन को और भी मजबूत बना रहा हूँ।”

“और अगर सरकार को इसका पता लग गया कि तुम लोग उसके तख्ते को उलटना चाहते हो तो, जानते हो क्या दशा होगी ?”

“यह तो बाद में देखा जाता है कि मंजिल तक पहुँचने में कितनी कठिनाइयों को सहना पड़ेगा—? जो इन्सान भविष्य की तकलीफों को देखकर डर जाता है वह अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता।”

“फिर भी भइया ! जान बूझकर आग में नहीं कूदना चाहिये—।”

“आग से तो उसे डरना चाहिये जिसका कभी कोई अंग उसकी लपटों में नहीं आया हो। और जिसका पूरा शरीर पहले

से ही झुलस चुका हो वह भला उससे कैसे डरेगा—? आग जले हुये को नहीं जला सकती ।”

“यह तो ठीक है लेकिन सरकार के सामने यह आन्दोलन सफल भी तो नहीं हो सकता ।”

“तुम नहीं जानती शैल ! कि बोये हुये बीज से कुछ न कुछ उगता अवश्य है चाहे अच्छा हो या बुरा । सफल होने को तो १८५७ का सिपाही विद्रोह भी नहीं हुआ था लेकिन फिर भी उसे स्वतन्त्रता के आंदोलन का पहला पग कहा जाता है ।”

“तुमसे तो मैं बात ही नहीं कर सकती भइया ! तुम्हें तो हमेशा अपना ही भूत चढ़ा रहता है ।”

“जिस तरह तुम्हें !” राजन ने व्यंग कसते हुये कहा—। “शैल ! अब भी समय है छोड़ दो उस व्यर्थ के दल को जिसमें नीच और बेइमान व्यक्ति ही भरे पड़े हैं । जो कांग्रेस के नाम पर गांधी टोपी पहन कर भिखारियों की तरह भीख माँगते हैं ।”

“देखो भइया ! फिर तुम रास्ते को छोड़ रहे हो—।” शैल ने सूचना देते हुये कहा ।

“रास्ता तो तुम भूल गई हो शैल जो अपने कमरे का रास्ता भूलकर यहाँ आ खड़ी हुई हो ।”

“खैर, मैं ही भूल गई सही ।” शैल ने अपने को कमजोर बनाते हुये कहा—। “तो आज कहाँ लगा दी इतनी देर ।”

“एक मिटिंग में चला गया था । वहाँ के बाद अन्य लोगों को भी अपने साथ मिलाने की कोशिश करता रहा । अब ज्यादा समय नहीं लगेगा शैल ! हमें सरकार के खिलाफ मैदान में आते ।”

“तो इसका मतलब है कि अब तुम रोज रात को देर से आया करोगे ?”

“मैं तो आकर यहाँ सो भी लेता हूँ शैल ! लेकिन राज

बेचारा तो रात भर जाग कर ही बिता देता है। दिन को रिक्सा चलाता... आधी रात तक दल का काम करता है और फिर आधी रात के बाद अपने बिमार साथी की देख भाल करते करते सबेरा कर देता है।”

“भइया ! तुम इस दलबंदी के भंभट में न पड़ो। उसका क्या, वह तो अकेला है चाहे जहाँ जा सकता है। अगर सरकार उसे फाँसी भी दे दे तो भी उसके पीछे कोई रोने वाला नहीं है। लेकिन तुम.....”

“मैं क्या मेरे जैसे हजारों लोग उसके साथ हैं। मेरी तो न बीबी और न कोई बच्चा है। लेकिन उसकी दशा पर जरा ध्यान दो जिनके घर पर छे-छे बच्चे हैं... जिनको सुबह खाना मिलता है तो शाम का पता नहीं होता कि घर में आग जल सकेगी या नहीं। लेकिन वे भी राज के साथ है। क्या उन्हें अपनी जान प्यारी नहीं—? क्या उन्हें नहीं पता कि उनके इस आंदोलन को सरकार कठोरता से दमन करने की कोशिश करेगी—? क्या उन्हें अपने बच्चों का ख्याल नहीं कि उनके मरने के बाद उनकी स्त्री और छोटे छोटे बच्चे क्या करेंगे—? लेकिन नहीं—। वे जानते हुये भी मौत के मुँह में जाना चाहते हैं ताकि उनकी कुर्बानी से उनके अन्य भाइयों की हालत सुधर जाये। वे अपने खून से अपने समाज को सौँचना चाहते हैं, ताकि उनका गरीब समाज उन्नति करे। अपने फिसले पाँव को सँभाल सके और.....”

एकाएक राजन चुप हो गया।

“चुप क्यों हो गये।”

“यह दरवाजा कौन खटखटा रहा है—?”

शैल ने भी सुना कोई बाहर से राजन को पुकार रहा था।

“इस समय कौन आ सकता है?!”—

“राज की आवाज मालूम पड़ रही है।” राजन ने नीचे उतरते हुये कहा—। “लेकिन इस समय—?”

राजन ने जब बाहर का दरवाजा खोला तो देखा सचमुच राज ही था।

“इस समय तुम—।”

“हाँ राजन ! जल्दी चलो।

“कहाँ—?”

“वह जो अपने दल का श्याम है ना—? उसकी स्त्री की तबियत काफी खराब है और घर में एक पैसा भी नहीं है। अगर हो सके तो कुछ रुपया भी ले लेना क्योंकि डाक्टर को भी बुलाना है।”

“लेकिन इस समय कौन डाक्टर जागता होगा—?”

“चाहे जो हो, किसी न किसी डाक्टर को ले ही जाना होगा नहीं तो वह बेचारी.....।”

“अच्छा ठहरो मैं अभी आया।”

राजन दौड़ता हुआ कमरे में आया और ज्यों ही नीचे उतरने लगा तो शैल ने पीछे से बुला लिये—। “कहाँ जा रहे हो भइया !”

“शैल !” तिलमिला उठा राजन आवाज सुनकर । उसे विश्वास हो गया है डाक्टर को ले जाना बेकार होगा।

और शैल को धूरता हुआ वह नीचे उतर आया।

किसी तरह एक डाक्टर को लेकर रात के दो बजे जब श्याम के मकान पर पहुँचे तो टिमटिमाते हुये चिराग की रोशनी में कुछ लोग बैठे हुये थे। उसकी स्त्री चारपाई पर बेहोश पड़ी थी। उसके बच्चे बेखबर सो रहे थे। उन्हें क्या मालूम था कि जब सुबह वे उठेंगे तो उनकी माँ उनसे बहुत दूर जा चुकी होगी...।

उनकी छोटी उमर में उनकी दुनियाँ उजड़ जायेगी, इसका अगर उन्हें ज्ञान होता तो शायद रात को वे सोते भी नहीं । लेकिन—

डाक्टर को देखते ही सब लोग उठ खड़े हुये ।

डाक्टर धीरे धीरे मरीज के पास आया ।

मुँह पर से चादर उठाई—

नब्ज देखी—

और—

सिर भुका लिया ।

“डाक्टर साहब !” चीख उठा राज !

“बहुत देर हो गई ।” डाक्टर ने गम्भीरता से कहा ।

“क्या हुआ डागडर साब !” श्याम हाथ जोड़े डाक्टर के सामने आ खड़ा हुआ ।

“.....!”

डाक्टर चुपचाप बाहर चला गया ।

“राजन भइया !” वह रोता हुआ राजन के पास आया—

“डागडर साब ! चले क्यों गये—? क्या वे बचवा की माँ का इलाज नहीं करेंगे—? मैं उनको पूरी फीस दूँगा...अपने को बेच दूँगा...राजन भइया !...उनसे कहो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ...वे बचवा की माँ को अच्छा करदे...”

“.....!”

राजन सिर भुकाये खड़ा था ।

श्याम काँपते कदमों से राज के पास आया जिसकी आँखों से आँसू बह रहे थे ।

“राज भइया !”

“.....!” राज ने गीली आँखों से उसकी ओर देखा ।

“तुम रोते क्यों हो भइया—? डागडर साब, चले क्यों गये ?”

“.....!”

“बोलो राज भइया ! श्याम ने उसके कंधे को भिभोड़ डाला ।

“.....!” वह चुप रहा कैसे कहता कि पंछी पिंजरे को छोड़ कर चला गया है ।

“तुम भी नहीं बोलोगे—?” श्याम लड़खड़ाता हुआ उस मरीज की चारपाई के पास गया । धीरे से उसके सिर को उठाया । लेकिन माँस के एक लोथड़े की तरह वह एक ओर को लुढ़क गया और साथ ही वह चीख उठा— “बचवा !”

“श्याम !”

“राज ने उसके कंधे पर हाथ रखा ।

“राज भइया —! क्या हमारी दुनियाँ इसी तरह उजड़ा करेगी—? क्या बिमारी हमें हमेशा चाटती रहेगी—?”

“नहीं श्याम ! नहीं ।” राज रो रहा था ।

धीरे से उसके नंगे चेहरे को चादर से ढक कर पीछे हटा तो श्याम के आठ वर्ष के बच्चे को खड़े देखा ।

“माँ को क्या हो गया है राज भइया !”

“माँ ! कुछ नहीं...कुछ नहीं बचवा...तू जा सो जा ।” राज ने उसे उठा कर सीने से लगा लिये ।

“आप रो क्यों रहे हैं—? बाबा क्यों रो रहे हैं—” उसने फिर पूछा ।

“यूँ ही तू जा सोजा ।”

“नहीं राज भइया आप बताइये ।

“बचवा !”

और.....!

मरी लाश को कफन में लपेटा और.....!



“क्या समाचार है राजन !”

“सब ठीक है ।”

“और काम कितना हो गया—?”

“पूरा ।” राजन ने बैठते हुये कहा—। “सब लोग तैयार हैं । बस तुम्हारे कहने की देर है कि सब आ पहुँचेंगे ।”

“अब प्रश्न यह है कि जलूस निकाला कहाँ से जायेगा—?”

“बस इसके लिये गांधी मैदान ही सबसे अच्छा होगा । कुछ लोगों को शहर में हड़ताल कराने के लिये नियुक्त कर दिया है ।”

“तुम्हारी क्या राय है रामू !” राजन ने अपने पास ही बैठ एक व्यक्ति से कहा जो कि शहर के मजदूर दल का नेता था और जिसने आजकल शहर की मिलों में हड़ताल करवा रखी थी ।

“यही जो आप लोगों की राय हो । हम आपका सहयोग देने को तैयार है ।

“और तुम्हारी रामधीन—?”

“हम कब पीछे हटने वाले हैं ।” रामधीन ने भी हाँ कर दी ।

राज के कमरे में तमाम काम करने वाले मजदूरों के प्रतिनिधि बैठे थे । वे सभी इस सरकार से तंग आ चुके थे और चाहते थे कि किसी तरह यह सरकार बदल जाये ताकि दूसरी सरकार उनकी माँगों को पूरा कर सके ।

“अब तुम लोग तैयार हो तो पहली तारीख को हमारा जलूस गांधी मैदान से उठकर सरकारी इमारत की ओर जायेगा

और वहाँ से तब तक हम नहीं हटेंगे जब तक हमारी माँगें न पूरी हो जायेंगीं... जब सरकार हमें कह न देगी कि उनकी स्थिति को सुधारा जायेगा और जब तक हमारे इस समाज की बुराइयों को दूर न कर दिया जायेगा। इसके लिये भले ही क्यों न हमें अपनी कुर्बानी दे देनी पड़े लेकिन हमारा कदम पीछे नहीं हटना चाहिये।”

“कभी नहीं राम भइया !”

“शाबास ! अब हमें इस समाज की बनी हुई पुरानी लकीरों को मिटाकर नई लकीरें बनाना है जिन पर हमारी पैदा होने वाली संताने ठीक रास्ते पर चलकर अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करें। हमें ऐसी सरकार नहीं चाहिये जो उसी थाली में छेद करे जिसमें खाती है।”

“आप ठीक कह रहे हैं।”

“तो आप लोग पहली तारीख को सुबह ही गांधी मैदान में जमा हो जाइयेगा। वहाँ से मजदूरों और गरीबों का एक विशाल जलूस निकाला जायेगा, ताकि सरकार को मालूम हो जाये कि देश में कितने गरीब रहते हैं, ताकि दुनियाँ जान जाये कि भारत एक अमीर देश होते हुये भी गरीब जनता पैदा करता है... ताकि भारत की महान आत्मायें जो इस संसार को छोड़ कर आकाश पर जाकर बैठी हैं उन्हें मालूम हो जाये कि उनके जाने के बाद उनके बेटों ने अपने भाइयों की क्या हालत बना दी है। जिस भारत में कभी दूध और घी की नदियाँ बहती थीं वहाँ आज खून की नदियाँ बह रही हैं। और...”

तभी एक व्यक्ति कमरे में आया।

“आओ मँगरू। क्या खबर लाये हो—?”

“बहुत बुरी।”

“क्यों क्या बात हुई।” राज ने आश्चर्य से पूछा।

“सरकार को मालूम हो गया है।”

“क्या—? सबके मुँह से एक साथ निकल पड़ा।

“यही कि उसके विरुद्ध कुछ लोग साजिस कर रहे हैं। और यहाँ तक मालूम हो गया है कि उस नये दल में कुछ क्रान्तिकारी लोग भी हैं जो पहले कांग्रेस में थे लेकिन अब……

“अब मजदूरों में हो गये है।” राज ने उसकी बात को पूरा कर दिया।

“हाँ!”

“तो तुमने कहा नहीं कि अब कांग्रेस अमीरों की होगई है। उसमें चोर और डाकू घुस आये हैं जो कांग्रेस के नाम पर अपनी बड़ी बड़ी कोठियों को भर रहे हैं और कह रहे हैं कि वे जनता की भलाई कर रहे हैं……जनता की सेवा कर रहे हैं और जनता के स्वार्थ के लिये अपने स्वार्थ को मिटा रहे हैं।”

“अगर कह देता तो वे कहते कि मैं भी उसी दल से संबन्ध रखता हूँ।”

“तो हर्ज ही क्या है। उस नये दल से संबन्ध रखना कोई पाप तो नहीं है, कोई गुनाह नहीं है। वह भी जनता का एक दल है जिसमें वे तमाम लोग आ सकते हैं जो अपने आपको मनुष्य कहते हैं……जो वास्तव में मानव की औलाद हैं जिनमें इन्सानियत की बू है और जो अपने सबसे प्यारी दौलत इन्सानियत को ही समझते हैं।”

“खैर अब कभी कह दूंगा।”

“और यह भी कह देना कि कांग्रेस से अलग हुये लोग तब तक उसमें नहीं आ सकते जब तक कांग्रेस पुनः अपने पुराने रास्ते पर नहीं आ जायेगी। जब तक उसमें की गंदगी बाहर नहीं

फेंक दी जायेगी। जब तक उस पर पड़ा परदा फटकर उसकी सूरत को साफ न कर देगा।”

“अब हमें क्या करना चाहिये राज भइया !”

“अब आप लोग जाइये और पूरी मेहनत से इस आंदोलन को सफल बनाने की कोशिश करिये। क्योंकि पहली तारीख को इसकी नींव पड़ने वाली है और वह नींव ऐसी होनी चाहिये कि उस पर बनी हुई इमारत दुनियाँ में एक हो। उस पर की गई नक्कासी लोगों की आँखों को चकाचौंध कर दें और समाज के बड़े बड़े लोग उसे आँखें मल मल कर देखें कि यह एकाएक समाज में कैसा परिवर्तन हो गया है। क्या काया पलट इसी का कहते हैं।”

“अच्छा भइया ! नमस्ते !”

“नमस्ते !”

“हमारी भी।”

“सभी की।” राज मुस्कुरा पड़ा और एक एक करके लोग चले गये। अब केवल राजन रह गया था।

राज घूम पड़ा एक कोने में पड़े धन्नू की ओर जिसकी तबियत दिन प्रति दिन खराब होती जा रही थी।

“कैसी तबियत है धन्नू भइया !”

“अब तो किना...रा.....नजदीक आता जा रहा है।”

“धन्नू भइया !”

“मैं ठीक कह रहा हूँ राज !” अब तो जिन्दगी से भी दिल भर गया है।”

“.....!”

“केवल एक ही तमन्ना रह गई है...कि तुम्हारे इस उठठाने हुये आंदोलन को देख सकूँ। अगर इमारत न सही तो कम से

कम उसकी नींव को तो देख लूँ।”

“ऐसा न कहो धनू भइया ! अगर तुम ही न रहोगे तो उस इमारत में रहेगा कौन !”

“तुम...और...”

“मैं !” राज ने एक लम्बी साँस ली—। “अगर मुझे रहना होता धनू भइया ! तो मैं तुमसे क्यों कहता—?”

“तो क्या तुम नहीं रहोगे—?”

“शायद न रह सकूँ।” वह कुछ न समझा।

“क्यों—?”

“क्योंकि मजबूत नींव के लिये कुछ त्याग करना पड़ता है। छ्यल करना पड़ता है और.....”

“और क्या—?”

“और कुर्बानी भी देनी पड़ती है।”

“राज !”

“हाँ धनू भइया ! कांग्रेस की नींव के नीचे कितने दबे पड़े हैं। कम्युनिस्ट दल जानते हो कितने लोगों के कंधों पर खड़ा है ?... महासभा को मालूम है कितनों के सुहाग को उजाड़ा है—? और यहाँ तक कि प्रत्येक दल ने कुछ न कुछ कुर्बानियाँ दी है। फिर हमारा दल तो.....”

“रुक क्यों गये—?”

“यूँही एक बात याद आ गई थी।

“कौन सी बात।”

“कुछ नहीं।” राज ने बात को छुपाते हुये कहा—। “दबाई तो पी लेनी थी।”

“क्या करूँगा..... दवाई पीकर..... जब अन्त..... में..... मरना ही है।”

“अगर दुनियाँ यही समझ ले कि अन्त में मरना ही है तो यह चलती फिरती दुनियाँ एक ही दिन में सुनसान हो जाये। इसमें रहनेवाले सुस्त और अपाहिज होकर बैठ जायें। दुनियाँ के तमाम कारोबार बंद हो जाये। तो फिर हमारे नेता लोग कहाँ जायेंगे—? किस दुनियाँ में जाकर अपना मोट पेट भरेगें।”

“तुम तो राज ! एक की दस सुना देते हो।”

“आप लोग ऐसी बातें ही करते हैं।”

“और किस तरह की बातें करें।”

“किसी तरह की नहीं—।” राज ने वहीं से बातों का नाता तोड़ दिया—। “यह लो दवाई पीलो और मैं बाजार से होता आऊँ।”

“आज रिक्सा लेने नहीं गये।”

“क्या करूँगा रिक्सा लाकर।” राज ने बाहर जाते हुये कहा।

“क्यों—?”

“अन्त में मरना ही तो है।” राज हँसता हुआ चला गया और धन्नू अपने अतीत में फँस कर रह गया। वह क्या जानता था कि राज जैसे व्यक्ति की मौत भी इतनी जल्दी हो सकती है, जितनी जल्दी उसने कहा था।

+

+

+

राजन शैल और राज तीनों कमरे में बैठे हुये हैं। कल ही उनके जलूस की तारीख है इसलिये शाम ही से वे प्रोग्राम बना रहे थे। वे अपना प्रोग्राम किसी को भी नहीं बताते थे। लेकिन शैल को इसलिये साथ बैठने दिया क्योंकि उन्हें मालूम था कि शैल से उन्हें या उनके बननेवाले दल को कोई हानि नहीं होगी।

शैल स्वयं भी उनके पास नहीं बैठना चाहती थी क्योंकि उसे

मालूम था कि उसे देखते ही दोनों कांग्रेस को गालियाँ देंगे और अगर वह कुछ कहेगी तो उलटा जवाब सुनेगी। इसलिये वह अलग ही रहना चाहती थी। लेकिन जब से उसे मालूम हुआ कि सुबह वे लोग जलूस के साथ जा रहे हैं तो उसके रोंगटे खड़े हो गये। वह जानती थी कि राज कितना बड़ा क्रान्तिकारी है और जिस बात के लिये तुल जायेगा उसे पूरा करके ही हटेगा। इसके साथ वह यह भी जानती थी कि सरकार के सामने उनकी कुछ भी नहीं चलेगी। क्योंकि सरकार की गोलियों के सामने उनका जलूस किसी भी दशा में नहीं ठहर सकता। और इसी को मना करने वह आई थी कि—

“मैं अब भी कह रही हूँ भइया ! इस रास्ते को छोड़ दो।”

“लेकिन हम जो नहीं कह रहे हैं। हम तो अपने काम को पूरा ही करेंगे चाहे उसके लिये जो कुछ भी हो।”

“भइया ! जरा सोचो तो सही कि आपके दल की शक्ति ही कितनी है।”

“क्यों—?”

“क्योंकि सरकारी ताकत के सामने ठहरना बहुत मुश्किल है। उसकी गोलियों के सामने तुम्हारे दल के भूखे, नंगे, और गरीब मजदूर कभी नहीं ठहर सकते।”

“तुम गलत सोच रही हो शैल ! सबसे बड़ा हथियार एकता है। जिस जाति अथवा समुदाय में एकता होगी वो कभी किसी से नहीं हार सकता। गोलियाँ क्या बम भी उसकी जंजीर को तोड़कर उन्हें छिन्न भिन्न नहीं कर सकता।”

“तो यह तुम्हारा दावा है।”

“मेरा क्या दुनियाँ का दावा है कि एकता की जंजीर सबको हरा देती है।”

“खैर, वह तो कल मालूम ही हो जायेगा कि एकता की जंजीर जीतती हैं कि सरकार की गोलियों की जंजीर।”

“लेकिन यह भी देख लेना शैल ! कि हम में से एक एक की मौत सरकार के एक-एक से विधान को बदल देगी।” राजन ने भी जवाब दिया। “और फिर उस समय सरकार को मालूम होगा कि किसी पर हाथ उठाना कभी कभी कितना भयानक रूप ले लेता है।”

“मैं भी देखूँगी।”

“हाँ, हाँ, तू भी और तेरी सरकार भी। जाकर कह दे केन्द्र में बैठे ऊँचे ऊँचे अधिकारियों से कि वे भी आकर देख लें कि देश के मजदूर क्या करने पर तुले हैं।”

“ज्यादा घमंड मनुष्य को नीचे गिरा देता है भइया !”

“इसीलिये तो कांग्रेस नीचे गिर रही है। उसे अब घमंड हो गया है। वह सोचने लगी है कि देश की जनता उसे देवता की तरह पूजती है और जो कुछ भी वह कह देगी लोग आँख बंद किये स्वीकार कर लेंगे। लेकिन अब जनता उतनी बेवकूफ नहीं रही जितनी आजादी से पहले थी। आज की जनता जाग उठी है। उसकी आँखें खुल चुकी हैं। उसे अपने अच्छे और बुरे की पहचान हो गई है। उसे यह मालूम हो गया है कि वह किस गढ़े में गिरी पड़ी थी। अब वह संभल रही है शैल ! अब वह तुम्हारी सरकार की बातों में नहीं आ सकती। लोगों को मालूम हो गया है कि कांग्रेस में केवल चार आने वाले सदस्य ही होते हैं, और वह उसका अच्छा लाभ उठाते हैं। गरीब जनता उसका लाभ नहीं उठा सकती। क्योंकि उन्हें तो केवल देश की सेवा करना आता है उस सेवा का प्रत्यक्ष फल पाना नहीं। वह समझती थी कि कांग्रेस गरीबों और मजदूरों की एक संस्था

है जो देश की आजादी के लिये लड़ रही है। और इसीलिये उन्होंने उसके लिये अपना सब कुछ लुटा दिया। लेकिन कभी कभी इन्सान जो सोचता है, होता ठीक उसी का उलटा है। कांग्रेस गरीबों की संस्था अवश्य थी पर जमाने की हवा के साथ ही साथ उसका कदम मध्यम वर्ग की ओर बढ़ा और स्वतन्त्रता के बाद तो वह पूँजीपतियों की गोद में चली गई। जब अमीरों ने देखा कि अब कांग्रेस सरकार हो गई है तो उन बदजातों ने खहर के कुर्ते और गांधी टोपियाँ पहनना शुरू कर दी। चार आने देकर कांग्रेस पार्टी के सदस्य भी हो गये। अब क्या था। खड़े होने की जगह जब मिल गई तो लेटने की जगह अपने आप ही बन जायेगी। पूँजीपति के घुसते ही उसके भाई बंधू और जात विरादरी सभी उसके सदस्य होने लगे और आज कांग्रेस पूँजीपतियों की एक अच्छी संस्था बन गई है। उसके उद्देश्य समाप्त हो गये उसके लक्ष्यों का अन्त हो गया और अब उनका ध्येय केवल एक है, और वह है चोर बाजारी, बेइमानी, डकैती और.....और गरीबों को चूसना।”

“चाहे जो कह सकते हो भइया ! मारने वाले का हाथ पकड़ा जा सकता है लेकिन कहने वाले का मुँह नहीं पकड़ा जा सकता।” शैल का दिल रो उठा।

“अगर तुम्हें बुरा लगता हो तो न कहूँ।”

“नहीं भइया ! कहो और जी भर कर कहो। ताकि तुम्हारे दिल में कोई बात न रह जाये।”

तभी राज ने उठते हुये कहा—। “अच्छा राजन ! मैं तो चलता हूँ, और तुम दोनों खूब अच्छी तरह लड़ लो।

“क्यों, आप नहीं भइया का सहयोग देंगे—?”

“तुम्हारे लिये तो वही अकेला बहुत है।” राज ने हँसते

हुये कहा ।

“.....!”

शैल चुप रही और राज ने जाते हुये कहा—। “सुबह ठीक समय पर आ जाना ।”

“बहुत अच्छा ।”

राज चला गया और राजन और शैल का भगड़ा भी बंद हो गया ।

“अब नहीं लड़ोगे ।”

“कल के बाद ।”

राजन ने उसे और भी जला दिया ।

१६

“रात को ही लोगों ने नारे लगाये कि “कल सुबह हड़ताल रहेगी ।” राज के दल के वे लोग जिन्हें इस काम के लिये नियुक्त किया गया था इस बात की पूरी कोशिश कर रहे थे कि सुबह पूरा शहर हड़ताल करे । यहाँ तक की पान और चाय की दुकान तक न खुलें । उन्होंने परचे बाँटे और छोटा जलूस भी निकाला । और—।

और वे लोग अपने काम में सफल रहे । सुबह पूरे शहर में हड़ताल मनाई गई । क्योंकि लोगों के दिल की गहराई में उतरी हुई कांग्रेस अब मरे मुर्दे की तरह ऊपर आ गई थी और उसकी गन्दगी से तमाम व्यक्ति घबड़ा रहे थे इसलिये अब तो वे उस ऊपर आई ईहु लाश को बाहर फेंक देना चाहते थे । वे चाहते थे

कि उस जगह कोई साफ पानी आये और इस फैली हुई गन्दगी को बहाकर ले जायें।

जनता उस पानी में नहाते नहाते घबड़ा गई थी क्योंकि अब वह पानी गंगा की तरह पवित्र और निर्मल पानी न रह गया था, बल्कि किसी बंद तालाब की तरह गंदा हो गया था। उसका रंग बदल गया था, स्वाद बदल गया और सब कुछ बदल गया था। वह अब उस पानी को निकाल कर दूसरा पानी चाहती थी जिसमें बहाव हो, एक धारा हो और जिसका पानी हमेशा साफ और निर्मल हो।

और यही सोचकर तमाम लोगों ने अपनी अपनी दुकानों को बंद रखा कि आजादी के बाद वह पहला जलूस था जो सरकार के खिलाफ निकाला जा रहा था। यद्यपि लोगों को मालूम था कि वह जलूस केवल गरीबों और मजदूरों का ही होगा लेकिन फिर भी वे उसमें दिये गये भाषण को सुनना चाहते थे। उनके कार्यक्रम को देखना चाहते थे और यह जानना चाहते थे कि उसका अन्जाम क्या होता है।

गांधी मैदान लोगों से खचाखच भरा हुआ था। ऐसा जान पड़ता था जैसे किसी बहुत बड़े नेता का भाषण हो। लोग तूफान की तरह उमड़ रहे थे। जनता का तूफान ठाठें मार रहा था। मैदान के बीच में एक मंच बना हुआ था जिस पर एक लाउडस्पीकर के सिवाय और कुछ न था। यह दृश्य ऐसा था जैसे आजादी से पहले किसी कांग्रेस के नेता के भाषण पर लोग दूट पड़ते हैं। उस समय जनता विदेशियों के हाथों पिसती पिसती तंग आ गई थी। और अब अपने ही भाइयों से तंग आ रही थी। वह उसे सता रहे थे। उसके पैसे शरीर को और भी पीस रहे थे। उसके अधमरे जख्मों को फिर से खुरेद रहे थे।

एकाएक कुछ लोग चिल्ला उठे—।

“राज भइया की जै ।”

“राज हाथ जोड़े मंच पर आ खड़ा हुआ एक बार उसने भरी जनता को देखा । उसे आश्चर्य हुआ कि उसके भाषण पर इतनी जनता । उसे सपने में भी आशा न थी कि पूरा शहर उसका साथ देगा । जनता के जोश को देखकर वह क्रान्तिकारी युवक और भी जोश में आ गया । आज पहली बार उसने अपना बह पोशाक पहना था जिसे वह आंदोलन के समय पहनता था—। खहर का कुर्ता, चूड़ीदार पैजामा, जवाहर बंडी और सिर पर गांधी टोपी । देखने से ही मालूम पड़ता था कि कोई महान क्रान्तिकारी खड़ा है जनता के सामने ।

जनसमूह एक बार फिर चिल्ला उठा ।

“राज भइया की—! जै ।”

“मानव दल की—! जै ।”

“भाइयों !” राज ने कहना शुरू किया अभी मैं उस लायक नहीं कि आप मेरी जै करें । जै तो उनकी की जाती है जो अब इस दुनियाँ में नहीं रहे । जो शहीद हो चुके हैं केवल वही पुरुष जै लेने के अधिकारी हैं, और कोई भी नहीं । खैर, कुछ कहने से पहले मैं आपको एक छोटी सी कविता सुनाना चाहता हूँ जिसमें मैंने अपने इस समाज का चित्र खींचने का प्रयत्न किया है ।”

राज ने जेब से एक कागज निकाला जिसमें छोटी सी कविता लिखी हुई थी ।

एक बार जनता की ओर देखा ।

मुँह झुण्ड स्पीकर के पास लाया और
और—।

राज की मीठी पर जोशीली कविता गूँज उठी हवा में—।

“बिचारे चुनके तिनकों से बनाते आशियाने को
 उड़ाते घास की वे रोटियाँ बच्चों के खाने को
 जला कर बस्तियों को क्यों महल आबाद करते हो
 गरीबों को सताते हो उन्हें बरबाद करते हो
 इस आजाद भारत में आजादी है अमीरों की
 उवारी घूमती है और कितने गरीबों की
 दो दो रोटियों के वास्ते बच्चे तरसते १०५४
 कहीं पूड़ी व हलुआ दावतें कुत्तों को मिलते हैं
 बीरों जेल से डरना शरम है इस जवानी में
 उठो तैयार हो करके लगा दो आग पानी में
 जवानी आ नहीं सकती कभी फिर इस जमाने में
 देखो क्या मजा मिलता है, महलों को जलाने में
 अमीरों को मिटाना है, बदलना है जमाने को
 महलों को जला कर के उन्हें अब खाक करना है”

कविता खत्म होते ही मैदान तालियों से गूँज उठा।

लोग उछल पड़े जोश में। जैसे अब उन्हें कोई भी ताकत
 बगावत करने से नहीं रोक सकती। मजदूर क्या दुकानदार लोग
 भी जोश में आ गये लेकिन—। कुछ पूँजीवाले धीरे से खिसक
 गये वहाँ से। उन्होंने समझ लिया कि उनका गुजारा इस जलसे
 में नहीं होगा।

राज ने फिर कहना शुरू किया—।

“भाइयों—! सुना है कि गुलामी की जंजीरें जब टूटती हैं
 तो एक भयानक आवाज होती है। आकाश से फूल बरसते हैं।
 लोगों के दिलों में नई उमंगें, नई बहारें और नई जवानी उठती
 है। देश पहले से कहीं अधिक उन्नति के पथ पर बढ़ता है। उसके

कदम बढ़ी तेजी से उठते हैं और अपने नागरिकों की स्थिति को सुधारते हुये वह अपनी मंजिल तक पहुँचता है। कभी हमें भी आशा थी कि जब हमारा देश आजाद होगा...जब हम स्वतन्त्र होंगे...और जब गुलामी की जंजीरें टूटेंगी तो एक के बदले कई भयानक आवाजें होंगी...आकाश से फूल बरसेंगे... लोगों में नया जोश और नई उमंगें पैदा होंगी—। और इसीलिये देश के प्रत्येक बच्चे ने आजादी की आवाज उठाई। चूँकि उस समय कांग्रेस ही एक ऐसी संगठित पार्टी थी जिसके द्वारा जनता अपने सिद्धान्तों को पूरा कर सकती थी। जनता ने उसका दामन पकड़ा और उसने जनता का साथ दिया। इशारा पाते ही देश का बच्चा बच्चा उत्तेजित हो उठा और आजादी की आवाजें गूँजने लगीं...जलसे और जलूस निकलने लगे...और—। और उन सब का नतीजा आज हमारे सामने है। हमारा देश आजाद हुआ, हमें स्वतन्त्रता मिली...और हमारी गुलामी की जंजीरें टूटी, लेकिन कोई आवाज न हुई, आकाश से एक भी फूल न गिरा, लोगों के दबे अरमान दबे ही रह गये। उनके होठों पर मुस्कराहट भी न खिल सकी। आजादी के बदले शहीद होने वालों की आत्मा चीख उठी, चिल्ला उठी कि इस आजादी से अच्छी तो गुलामी ही थी। दोस्तों! क्या मैं अपने नेताओं से पूछ सकता हूँ, कि आजादी के बाद देश के लिये उन्होंने क्या काम किया—? देश को उन्नति के पथ पर कितना आगे बढ़ाया—? देश के कितने मरते इन्सानों को उन्होंने बचाया—?

आज हमारा देश आजाद हुआ है, हमें आजादी मिली है तो इसका मतलब यह नहीं है कि उस आजादी के बदले हमसे सब कुछ छीन लिया जाये—? हमारी हसरतों को कुचल कर हमारी अरमानों को दबा दिया जाये। मैं सरकार के उन

अधिकारियों से पूछना चाहता हूँ कि उन्होंने देश के लिये कितनी कुर्बानी दी है—? कितनी बार उन्होंने पुलिस की लाठियों को चूम कर जेल की हथकड़ियों को पहना है—? कितनी बार वे अपने बिलबिलाते बच्चों और रोती स्त्री को छोड़ सत्याग्रह में सम्मिलित हुये हैं—? अगर उनसे यह पूछा जाये कि उन्होंने कितना खून बहाया है देश की स्वतन्त्रता के लिये—? तो जवाब केवल यही मिलेगा कि—। “एक बूँद भी नहीं।” भाइयों ! अब आप सोचेंगे कि अगर उन्होंने कुछ भी नहीं किया तो आज वे इतनी ऊँची कुर्तियों पर कैसे बैठे हैं...? कल तक जो अंगरेजों के पिट्टू थे आज कांग्रेस के सहयोगी क्योंकि हो गये हैं—? क्योंकि उनके पास दौलत थी, धन था, रुपया था और उनके वह सब कुछ था जो किसी चीज को पाने के लिये होता है। आजादी का इलान होते ही वे कांग्रेस के सदस्य हो गये। बस फिर क्या था कांग्रेस उनकी और वे कांग्रेस के हो गये। लेकिन दोस्तों ! जरा इसके दूसरी ओर के बिखरे इतिहास को भी देखो जो हमारे और आपके खून से लिखा गया है और जो सदियों तक वैसे ही चमकता रहेगा। हमने देश की आजादी के लिये क्या कुछ न किया। अपने बच्चों की मोहब्बत को देश की बेदी पर बलिदान कर दिया। जरा उन लोगों के दिलों से जाकर पूछो जो बुढ़ापे की सीढ़ी पर चढ़ने के लिये सहारा ढूँढ़ रहे थे... जिनकी बेंनूर आँखें उनका साथ छोड़ चुकी थीं... जिनकी टाँगें चलने से मजबूर थी लेकिन उन्होंने भी अपने जवान बेटों को केवल इसीलिये मैदान में भेज दिया कि शायद उनके बेटों की कुर्बानी से देश आजाद हो जायेगा और उनके एकलौते बेटों की जगह चार्लिस कडोर बेटे उनका साथ देंगे। लेकिन आजादी के बाद उनके साथ कौन सी हमदर्दी दिखाई कांग्रेस सरकार न

जाने कितनी ही अपने सोहाग के लिये तड़प रही हैं, उनके लिये क्या किया सरकार ने—? दोस्तों ! कुर्बानी तो हमने और आपने की लेकिन लाभ वही लोग उठा रहे हैं जो पहले उठाते थे । गरीब जनता आज भी वैसे ही पीसी जा रही है जैसी अंगरेजों के समय में पीसी जाती थी । आज की सरकार में अगर कुछ भी शक्ति होती तो आज जो हमारा देश पतन की ओर जा रहा है, न जा पाता—। आज की चोर बाजारी....डकैती....भुखमरी.... और बेकारी, क्या यही स्वतन्त्र देश की पहचान है ? क्या लोकतन्त्र और जनतन्त्र इसी को कहते हैं, जिसमें राज्य की सत्ता केवल कुछ पूँजीपतियों के हाथ में होती है—? दोस्तों ! अब भी समय है । अगर तुम चाहते हो कि तुम लोग जिन्दा रह सको...। अगर चाहते हो कि तुम्हें कोई इस तरह पीसता न रहे—। अगर चाहते हो कि तुम्हारे चिरागों को बुझा कर महलों को रौशन न किया जाये...अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे अरमानों को जला कर तुम्हारी हसरतों को न कुचला जाये, तो तुम अपने आपको पहचानो । अपनी बँधी हुई आत्मा को पहचानों, वरन् बाद में तुम रोओगे...तड़पांगे और चिल्लाओगे लेकिन तुम्हारी आवाज किसी के कानों तक नहीं जायेगी । दोस्तों ! अब तुम्हें उठना होगा और उस पुरानी लकीर को मिटाकर नई लकीर बनानी होगी । अगर सरकार हमारी दशा पर ध्यान नहीं देती तो हमें खामोश नहीं रहना चाहिये बल्कि हमें अपनी माँगों की पूर्ति के लिये उसे बाध्य करना चाहिये । आज हम सरकार से कहेंगे कि वह हमें पेट भरने के लिये रोटी दे...तन ढकने के लिये कपड़ा दे...और सिर छुपाने के लिये मकान दे—। अगर वह यह सब कुछ नहीं कर सकती अगर उसमें इतनी शक्ति नहीं कि वह हमारी माँगों को पूरा कर सके,

तो उसका कोई अधिकार नहीं कि वह अपने आप को सरकार कहे । अपने आपको जनता के प्रतिनिधि कहे । माना कि हमारा देश गरीब है, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं एक ओर लोग अपने कुत्तों को भी हलुवे और पूँड़ियाँ खिलायें और दूसरी ओर लोग भूख से छटपटाये । एक ओर लोग आराम से ऊँचे ऊँचे महलों में सोये और दूसरी ओर गरीब जनता सरदी की ठुठरती रात नंगे बदन से सड़कों पर सो कर गुजार दें—। यह अन्याय की चरम सीमा है जो कि हमारे स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्र सरकार के जमाने में हो रहा है । जो गरीब जनता देश भर के लिये अन्न पैदा करती है, वह दो दो दिन तक भूखी रहती है—। जो गरीब मजदूर लाखों गज कपड़ा प्रति दिन बनाते है वे तन ढकने को एक धोती भी नहीं पहन पाते—। और जो लोग दिन रात पूँजीपतियों के लिये खूबसूरत मकान बनाते रहते वे अपने रहने के लिये एक भोपड़ी भी नहीं पाते और रात सड़क के किनारे ही बैठ कर बिता देते हैं । दोस्तों ! कोई भी संस्था खराब नहीं होती बल्कि उसमें काम करने वाले खराब होते हैं । और ठीक यही दशा आज की सरकार में भी है । अगर एक या दो व्यक्ति अच्छे और ईमानदार हैं तो क्या हुआ जब कि उन नीचे सभी लोग बेइमानी के तराजू पर बैठे हुये हैं तो जरूरत इस बात की है मेरे भाइयों ! कि हमें उस तराजू में से उन गद्दारों को हटाना है । उन चोर और डाकुओं को हटाकर सरकार को सुधारना है जो कि देश की पूँजी को दीमक की तरह धीरे धीरे चाटे जा रहे हैं । और अगर इन बुराइयों को हम और आप नहीं सुधारेंगे तो और कौन सुधारने आयेगा—। इसलिये दोस्तों ! मैं आपसे ज्यादा नहीं कहना चाहता लेकिन फिर भी यह जरूर कहूँगा कि अब आप जाग उठिये । आपका घर लूटा जा रहा है और आप

बेखबर सो रहे हैं। उठो भाइयों और जला डालो ऐसे कानून को जिसमें भूखमरी और बेकारी ही भरी है। आज लाखों आदमी आवारों की तरह इधर उधर घूम रहे हैं। उन्हें कोई काम नहीं मिल रहा और काम मिले भी तो कहाँ से देशका संचालन तो वे पूँजीपति और समाज के ठेकेदार कर रहे हैं जो गरीबों को कभी भी मुस्कुराता नहीं देख सकते—। जो यह कभी नहीं सह सकते कि उनके सामने ही उनकी गरीब जनता पेट भर खाये। अगर आप कहीं से दो रोटियाँ लाते हैं तो एक रोटी बे छीन लेते हैं और आप आधा पेट ही सो जाते हैं। भाइयों ! आप लोगों को उन बदजातों को मिटाना है उनके महलों को जलाकर गरीबों की झोपड़ियों को बनाना है उनकी तिजोड़ियों में बंद किये हुये नोटों को नंगों और भूखों में बाँटना है। अब वह जमाना आ गया है दोस्तों ! जब कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति जाग उठा है। वह अपने अधिकारों को माँग रहा है अपनी माँग को पूरा करवा रहा है। इसलिये हमें भी जाग जाना चाहिये और देश में एक इतनी बड़ी क्रान्ति करनी चाहिये कि देश का पुराना ढाँचा जो खोखला हो चुका है निस्तोनबूद हो जाये और उसकी जगह एक नया ढाँचा बने, नये राज्य की स्थापना हो नया संविधान बने, जिसमें नये लोग नई विचार और भावनाओं को लेकर हल। हमें न्याय का झंडा ऊँचा करना चाहिये और उस समाज की स्थापना करनी चाहिये जिस भगवान ने बनाया है। हमें किसी एक दल से संबन्ध रख कर अपने आपको बदनाम नहीं करना है बल्कि हमें उस भगवान के उस मानव दल की स्थापना करना है जो कभी समाप्त नहीं हो सकता, जिसका कभी अन्त नहीं हो सकता और जो हमेंशा सच्चाई के रास्ते पर चलता जाता है भाइयों ! आज हम सरकार से कहेंगे कि हमारी माँगें

पूरी की जायें। हमें पेट भरने के लिये रोटी दी जाये, तन ढकने के लिये कपड़ा दिया जाये और रहने के लिये मकान दिये जायें—। अगर वह इसे नहीं पूरा करती तो उसका कोई अधिकार नहीं है कि वह देश की सरकार कहलाये—। ऐसी सरकार को तो जलाकर खाक कर देना चाहिये जिसमें भुखमरी और बेकारी ही पलती हो—। बस। लेकिन मैं आप से केवल यही पूछना चाहता हूँ कि क्या आप मेरा साथ देने को तैयार हैं—?”

“हम सब तैयार हैं—। एक साथ पूरा जनसमूह चिल्ला उठा।

“तो ठीक है अब हमें गवर्मेण्ट हाउस की ओर चलना चाहिये जहाँ हम अपनी माँग को चिल्ला चिल्ला कर कह सकें।”

राज ज्योंही मंच से नीचे उतरा कि उसका रास्ता रोक दिया गया। शैल आ खड़ी हुई सामने।

“तुम यहाँ क्या करने आई हो—?”

“आप लोगों को रोकने।”

“उठा हुआ तूफान कभी नहीं रुक सकता।”

“उसे रोक लीजिये राज बाबू! वरन् आपकी यह गरीब जनता बेकार में ही मर जायगी।

“इसकी मुझे चिन्ता नहीं है। लेकिन आज हमारा उठा कदम आगे बढ़ कर ही रहेगा।”

“भगवान के लिये उठे कदम को पीछे रख लीजिये वरना आप पीछे पड़ताइयेगा। सरकार की गोलियों के सामने आपके निहथे मजदूर भी नहीं टिक सकते। और फिर सैकड़ों बच्चों के बाप वहीं पर मर जायेंगे... सैकड़ों का सोहाग उजड़ जायेगा और उन सबके जिम्मेदार आप ही होंगे... केवल आप ही वह व्यक्ति होंगे जिनके नाम पर औरत रोयेगी, चीखेंगी और चिल्लायेगी, लेकिन उनकी उजड़ी हुई दुनियाँ कभी नहीं बस

पायेगी—। भगवान के लिये आगे न जाइये ।”

“शैल अगर तुम्हें अपनी सरकार के साथ हमदर्दी है तो जाकर कह दो कि मजदूर जनता तूफान की तरह उसकी ओर आ रही है वह अपनी इमारत के सामने तोपखाना लगवा दें और एक एक मजदूर को चुन चुन कर उड़ा दें ।”

“मत जाइये राज बाबू !”

“यह कभी नहीं हो सकता ।”

“अब समय है ।”

“समय निकल गया ।”

“सँभल जाइये ।”

“मैं सँभला हुआ हूँ ।” राज ने भंडा अपने हाथ में पकड़ा और चिल्ला उठा—। “भाइयों ! आओ मेरे पीछे ।”

“राज बाबू !” शैल ने दामन पकड़ लिये ।

“तूफान चल चुका है शैल ! उसे रोकने की कोशिश न करो वरना तुम भी.....।”

“राज बाबू !”

“.....।”

“राज बाबू !”

लेकिन राज दामन छुड़ाकर आगे बढ़ गया था । शैल अपने आपको उस भीर से बचाती हुई जा पहुँची कांग्रेस दफ्तर । वहाँ उसने पुलिस को तमाम बातें बतादी और पुलिस पर पुलिस जा पहुँचा गवर्मेण्ट हाउस के पास ।

जलूस गांधी मैदान से बाहर निकला ।

जलूस के सबसे आगे राज हाथ में भंडा लिये बढ़ रहा था । उसके पीछे राजन था और फिर जनता का तूफान ।

नारे पर नारे लग रहे थे । लोग अपने मकानों पर से इतना

बड़ा जलूस देख रहे थे जो कि पहला जलूस आजादी के बाद ।
राज नारे लगवा रहा था—।

“इन्कलाब जिन्दाबाद—।”

“हमारी माँगें, पूरी हो—।

“हमें क्या चाहिये—? रोटी कपड़ा मकान ।”

शहर की इमारतें गूँज उठीं उन नारों से । बाजार की सड़कें
काँप उठीं । लेकिन वह तूफान आगे बढ़ता ही गया । राज नारे
लगवाता ही गया ।

“पूँजीपतियों का, नाश हो—।”

“हमें ऐसी सरकार, नहीं चाहिये—।”

“खोखले ढाँचे को, जला दिया जाये —।”

“निकम्मी सरकार, नहीं रह सकती—नहीं रह सकती—नहीं
रह सकती ।”

“इन्कलाब, जिन्दाबाद—।”

“हमारी माँगें पूरी हो—।”

राज का चेहरा लाल हो उठा था चिल्लाते चिल्लाते । प्रत्येक
आदमी जोश में आगे बढ़ता चला जा रहा था ।

लोग आश्चर्य से जाते हुये जलूस को देख रहे थे ।

+

+

+

जलूस सरकारी इमारत के सामने आ खड़ा हुआ ।

एक ओर जनता का जलूस था तो दूसरी ओर पुलिस का
जलूस था ।

एक ओर भारतीय जनता थी और दूसरी ओर भारतीय
शासक थे ।

एक ओर भूखे और नंगे आदमी चिल्ला रहे थे और दूसरी
ओर पेट भरने वाले अधिकारी चिल्ला रहे थे ।

जनता कह रही थी कि उनकी माँगें को पूरा करो।

और दूसरी ओर पुलिस के अधिकारी कह रहे थे कि वापस चले जाओ।

और—।

ऐसे ही वातावरण को चीरती हुई राज की आवाज चीख उठी—। हम भूखे हैं हमें रोटी चाहिये, हम नंगे हैं, हमें कपड़ा चाहिये... हम मर रहे हैं हमें, जगह चाहिये—। ओ जनता की सरकार कहलाने वालों क्या तुम्हारे राज्य में ऐसी ही जनता रहती है कि एक ओर कुछ लोग पेट भरकर आराम से सोयें और दूसरी ओर जनता का एक बड़ा समूह भूखे पेट जागकर रातें गुजार दे।”

और वहाँ के उच्चाधिकारी कह रहे थे—। “हम इसके जिम्मेदार नहीं हैं ? जो सरकार कर रही है वह बहुत है। अगर तुम लोगों का पेट नहीं भरता तो कहीं नदी या तालाब में जाकर डूब मरो।”

“अगर आप लोग शासन नहीं चला सकते तो उतर जाइये इन कुर्सियों पर से।”

“हमने कुर्बानी देकर आजादी ली है, मुफ्त में नहीं।”

“और क्या हम लोगों ने आपके साथ खून नहीं बहाया है—?”

“नहीं ! तुम लोग देश के गद्दार हो... बागी हो...। तुम लोग बगावत करना जानते हो देश की आजादी को कायम रखना नहीं...। तुम लोग कमीने हो... नालायक हो... विद्रोही हो... और.....

“और आप लोग मक्कार, बेइमान, चोर, डाकू...। गरीबों के खून को चूसने वाले। हम बागी इसलिये हैं क्योंकि हम तुम लोगों की लूट को नहीं देख सकते—। विद्रोही इसलिये हैं कि

तुम्हारी बातों को जनता के सामने खोल दिया है—। आप लोगों को शर्म नहीं आती, उस जनता को विद्रोही और नातायक कहते हुये जिन्होंने अपने खून से इस आजादी की नींव रखी थी—। जिन्होंने आप लोगों को बचाने के लिये पुलिस की गोलियों को अपने सीने में छुपा लिया था—। तानत है ऐसी सरकार को जो बेहया की तरह शासन कर रही है। इस आजादी से तो कहीं अच्छी गुलामी ही थी।” राज के चेहरे पर खून जम गया था।

“जहाँ से आये हो वहीं चले जाओ वरना एक एक को मार डालूँगा—।” उच्च अधिकारी ने अपनी पिस्तौल निकाल ली।

“भाइयों ! आगे बढ़ना चाहते हो या पीछे हटना चाहते हो—?” राज चिल्ला उठा।

“हम आगे बढ़ेंगे।” जनसमूह चीख उठा।

“तो आओ।”

“रुक जाओ।” शैल चीख उठी।

लेकिन उनके नारे लगते ही रहे।

“इन्कलाब, जिन्दाबाद—।”

“हमारी माँगे, पूरी हों—।”

“हमें क्या चाहिये ? रोटी, कपड़ा, मकान।”

“हमारे बच्चे भूखे हैं—।”

“हमारी जनता मर रही है।”

“पूँजीपतियों का नाश हो।”

पूरा जनसमूह चिल्ला रहा था—।

“ऐसी सरकार बदल दो जिसके राज में भुखमरी, बेकारी और गरीबी हो।”

“तानाशाही, नहीं चलेगे, नहीं चलेगी, नहीं चलेगी,

“इन्कलाब जिन्दाबाद—।”

“हमारी मांगें पूरी हों।”

जनसमूह आगे बढ़ा।

पुलिस की बंदूकें उठ गईं।

“रुक जाओ—।” सरकार चीख उठी।

“नहीं रुक सकते, नहीं रुक सकते, नहीं रुक सकते।”

राज चीख उठा—। “हमारा नारा।”

और जनता चीख उठी—। “खून, खून, खून,।”

“आगे बढ़ो।”

“रुक जाओ।”

तूफान आगे बढ़ता गया।

सबसे आगे राज भंडे को पकड़े था और पास था राजन।

“रुक जाओ नहीं तो बेमौत मारे जाओगे।”

“हमें रोटी चाहिये....हम भुखे हैं—। हमें कपड़ा चाहिये....
हम नंगे हैं।”

“दोस्तो दूट पड़ो इस इमारत पर और जला डालो ऐसी
सरकार को।”

“रुक जाओ।”

लेकिन राज भंडा लिये आगे बढ़ा।

साथ ही पूरा जनसमूह तूफान की तरह बढ़ा और उस तूफान
में सरकार की आवाज गूँज उठी—। “पकड़ लो इन्हें।”

राज बढ़ता गया।

जनता बढ़ती गई।

और पुलिस की लाठियाँ बरसने लगीं जनता पर।

“आगे बढ़ो दोस्तों!” राज की आवाज थी।

जनता आगे बढ़ी ।

“रुक जाओ राज !” सरकार चीख उठी ।

“नहीं रुकेंगे—!” चीख उठा राज !

और—

और सरकार की पहली गोली मंडा पकड़े हुये राज पर चली ।

“आह !” गोली सीने के अंदर घुस गई ।

चारों ओर चीखें उठने लगी सन् १८५७ का विद्रोह आँखों के सामने नाच उठा ।

राज के गिरते ही मंडा राजन ने पकड़ लिया ।

“आगे बढ़ो दोस्तों मंजिल आ चली है ।

“अब भी रुक जाओ !”

तफान बढ़ता गया । लोग घायल होते गये ।

और.....

दूसरी गोली राजन पर आई ।

“आह !” गोली उसके भी सीने के अन्दर जा चुकी थी ।

“भइया !” चीखती हुई शैल आ पहुँची राजन के पास और उसके हाथ से गिरते हुये इन्साफ के मंडे को पकड़ लिया ।

एक बार फिर जनता में जोश उठा ।

“भाइयों आगे बढ़ो.....!”

लेकिन—

इससे पहले ही सरकारी पिस्तौल से निकली गोली जा घुसी शैल के सीने में । और साथ ही पूरी जनसमूह भूखे शेर की तरह दूट पड़ा सरकारी अधिकारियों के ऊपर ।

एक बार पुनः चीखें आकाश तक पहुँचने लगीं ।

“आह”—

“इन्कलाब, जिन्दाबाद ।”

“हमारी माँगे पूरी हों ।”

और—।

थोड़ी देर बाद ही गोलियाँ बंद हो गई ।

लाठियाँ रुक गई ।

चीखें बंद हुई ।

पर जनसमूह आगे बढ़ता ही गया ।

इमारत का फाटक आ चुका था ।

तभी सरकार चीख उठी ।

“तुम लोगों की माँगे पूरी होंगी ।

“हमारी माँगे पूरी होंगी—?” जनता आश्चर्य से चिल्ला पड़ी—। “हमें रोटी मिलेगी ? हमें कपड़ा मिलेगा ? हमें मकान मिलेगा ?”

“हाँ तुम्हें सब कुछ मिलेगा ।”

और जनता चीख उठी ।

“राज भइया ! हमारी माँगे पूरी हो गईं...सरकार हमारी बात को मान गई ।”

“.....!” राज कहाँ था वहाँ ।

“राजन भइया !”

“.....!”

“शैल दीदी—!”

तीनों की लाशें जनता के हाथों पर थीं और उनकी आत्मायें जा चुकी थीं ।

और उसी जनसमूह में उन तीनों की आत्मायें कह रही थी ।

“यह सब मूठ है । सरकार ऐसे ही दिलासे दिया करती है ।

यह सब मूठ है भाइयों ! यह सब मूठ है ।

और एक बार जनता फिर आगे बढ़ी—। “यह सब मूठ है ।”

“नहीं सच है ।” सरकार फिर चीख उठी—। “लो हमने हथियार रख दिये...सरकार तुम्हारी है और तुम सरकार के हो ।”

और जनता ने देखा इमारत का फाटक खुल चुका था । सभी लोग बंदूके नीचे भुकाये खड़े थे । पुलिस बंदूके फेंक चुकी थी ।

“राज भइया ! हमारी माँगे पूरी हो गई ।”

“.....!”

“राजन भइया !”

“.....!”

“शैल दीदी !”

“.....!”

+

+

+

मरघट पर शहीदों की चितायें जल रही थीं ।

स्वतन्त्रता के सच्चे पुजारी दुनियाँ को छोड़ चुके थे ।

और लाखों जनता उनकी चिताओं के चारों ओर खड़ी थी ।

सबकी आँखों से आँसू बह रहे थे ।

और—।

और बहुत दूर से उन शहीदों की आवाज आ रही थी—।

“इन्सान के सीने पर जख्मी
जब बर्बरता के दाग न होंगे
झोपड़ियों के बीच महल के
जलते निठुर चिराग न होंगे

तब तक दिल में आजादी के
 ख्वाब सुनहले ला न सकेंगे
 अरमानों की आग छुपाये
 कभी भी वापस जा न सकेंगे—।”

— वस —

अब पढ़िये
“कागज के पुतले”
 और
“मजदूर”

नोट:—पृष्ठ २३ में भूल से छै के स्थान पर दो महीने छप
 गये हैं।

—* दो शब्द *—

पुस्तक आपने पढ़ी—! शायद आपको मुझ पर सन्देह हो कि इस विचारधारा को अपनाने वाला लेखक किस दल से संबन्ध रखता है—? तो मैं दल के उन गन्दे कीड़ों से इस बात की प्रार्थना करूँगा कि वे मुझे अपने दल की रस्सी में बाँध कर खींचने की कोशिश न करें—! क्यों—? क्योंकि मैं न तो समाजवादी हूँ, और न साम्यवादी, और कांग्रेसी तो हो ही नहीं सकता। पर फिर भी मैंने अपने कमरे में महात्मा गांधी, आचार्य कृपलानी और स्तालिन, की तस्वीरें सजा रखी हैं। और उन सब को ही मैं संसार के महापुरुषों की तरह मानता हूँ—!

भगवान ने मुझे इन्सान बनाया है और मैं इन्सान बनने की कोशिश कर रहा हूँ। संसार के तमाम दलों का रूप, रंग, आकार और सब कुछ बदल सकता है, पर भगवान के मानव-दल का कुछ भी नहीं बदल सकता। इसलिये इन्सान को उस जवानी की पूजा नहीं करनी चाहिये, जो जाने के लिये ही आती है, बल्कि उस बुढ़ापे की पूजा करनी चाहिये जो नहीं जाने के लिये ही आता है।

और अन्त में मैं यही लिख कर अपने इन दो शब्दों को बन्द करता हूँ कि, आपको यह पुस्तक कैसी लगी? और आपने मुझे किस गहराई तक देखने की कोशिश की—?

ओम् अकाश

२६ जनवरी १९५४ ई०

५५/२५ गोविन्दपुरा बनारस

५५ “मजदूर”

वे भी इन्सान हैं जो आग के सामने लोहे की तरह तपते रहते हैं। जिनके शरीर का मांस और खून जल जल कर धूँये के रूप में आकाश को चूमती चिमनी में से होकर बाहर निकलता रहता है—! वे भी इन्सान हैं जो घोड़ों और टट्टुओं की तरह हमारा और आपका बोझ ढोते हैं। जिनका खून और सूखी चरबी पसीने के रूप में बाहर निकलती रहती है—! वे भी इन्सान हैं जो गलियों और सड़कों पर पानी भरते हैं, जो मोटे सेठों को, जिन से चला भी नहीं जाता, अपने कंधे पर उठा कर जानवरों की तरह ऊँची ऊँची चढ़ाइयाँ चढ़ते हैं—! और वे भी इन्सान हैं जो दर दर की ठोकरें खाते हैं। किसलिये—? पेट के लिये—अपनी संतान का गला घोट देते हैं—क्यों—? पेट के लिये—केवल दो टुकड़े रोटी के लिये।

इनकी दशा क्या है उसकी जीती जागती बिल्कुल नंगी तस्वीर आप “मजदूर” में देखिये—जिसके प्रत्येक पन्ने पर आप के आँसू गिरेंगे—!

छप रही है।

मजदूर ? मजदूर ? मजदूर ?

मानवता की जलती चिता

“मजदूर”

हमारे अनमोल प्रकाशन

हमारी माँगे	श्री ओम प्रकाश
मजदूर	” ”
भोंपड़ी और महल	” ”
प्रतिबिम्ब (कविता संग्रह)—श्री दुर्गाप्रसाद “मुकुर”	
मूक वेदना (कहानी संग्रह]	” ” ”
बारात के बाद [उपन्यास]	” ” ”
सूखी टहनियाँ	१ सुश्री दीप शिखा

ज्ञान विकाश मन्दिर

५५/२५ गोविन्दपुरा, बनारस ।

साखा

जमालपुर, मुंगेर ।

